इग्नू
जन जन का
विश्वविद्यालय

BECC-101

प्रारंभिक व्यष्टि-अर्थशास्त्र

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

विशेषज्ञ समिति

प्रो. इंद्राणी राय चौधरी
सह-आचार्य (अर्थशास्त्र)
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रो. एस. के. सिंह
अवकाश प्राप्त आचार्य (अर्थशास्त्र)
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. जी. प्रधान
अवकाश प्राप्त आचार्य (अर्थशास्त्र)
इग्नू, नई दिल्ली

श्री आई.सी. धींगरा
अवकाश प्राप्त सहआचार्य
शहीद भगत सिंह कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

डॉ. एस. पी. शर्मा
सह-आचार्य (अर्थशास्त्र)
श्याम लाल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. बी. एस. बागला
अवकाश प्राप्त सह-आचार्य (अर्थशास्त्र)
पीजीडीएवी कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

श्रीमती नीति अरोड़ा
सहायक आचार्य (अर्थशास्त्र)
माता सुंदरी कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

श्री सोगतो सेन
सह-आचार्य (अर्थशास्त्र)
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. नारायण प्रसाद
आचार्य (अर्थशास्त्र)
इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम संयोजक : प्रो. नारायण प्रसाद

पाठ्यक्रम निर्माण दल

खंड / इकाई सं.	विषय प्रवेश	इकाई लेखक एवं हिंदी अनुवादक
खंड 1	**परिचय**	
इकाई 1	अर्थशास्त्र एवं अर्थव्यवस्था का परिचय	श्री आई.सी. धींगरा, अवकाश प्राप्त सहआचार्य, शहीद भगत सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली **हिंदी अनुवाद** – श्री. बी.एस. बागला, इग्नू, नई दिल्ली
इकाई 2	माँग एवं आपूर्ति विश्लेषण	
इकाई 3	माँग और आपूर्ति : व्यावहारिक अनुप्रयोग	
खंड 2	**साधन बाज़ार**	
इकाई 4	उपभोक्ता व्यवहार गणनावाचक दृष्टिकोण	डॉ. विजेता बनवारी, सहायक आचार्य (अर्थशास्त्र) महाराजा सूरजमल संस्थान, नई दिल्ली **हिंदी अनुवाद** – श्री सुरेंद्र कुमार शर्मा, सहायक आचार्य (अर्थशास्त्र), श्यामलाल कॉलेज, दिल्ली
इकाई 5	उपभोक्ता व्यवहार : क्रमवाचक दृष्टिकोण	
खंड 3	**उत्पादन एवं लागतें**	
इकाई 6	एक परिवर्ती आगत का उत्पादन फलन	डॉ. वी.के.पुरी, सह-आचार्य (अर्थशास्त्र), श्याम लाल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली **हिंदी अनुवाद** – श्री मनदीप कुमार, प्रवक्ता– अर्थशास्त्र, राजकीय प्रतिभा विद्यालय, वसंत कुंज, नई दिल्ली
इकाई 7	दो एवं दो से अधिक आगतों का उत्पादन फलन	
इकाई 8	लागत फलन	
खंड 4	**बाज़ार संरचना**	
इकाई 9	पूर्ण प्रतियोगिता : फर्म एवं उद्योग के संतुलन	डॉ. एस.पी. शर्मा, सह-आचार्य–अर्थशास्त्र, श्याम लाल कॉलेज, दिल्ली **हिंदी अनुवाद** – डॉ. श्याम सुंदर सिंह चौहान अवकाश प्राप्त सहआचार्य–अर्थशास्त्र, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिरसागंज, फिरोजाबाद
इकाई 10	एकाधिकार : कीमत एवं उत्पादन निर्णय	श्रीमती श्रुति जैन, सहायक आचार्य (अर्थशास्त्र) माता सुंदरी कॉलेज, नई दिल्ली **हिंदी अनुवाद** – डॉ. श्याम सुंदर सिंह चौहान
इकाई 11	एकाधिकारिक प्रतियोगिता : कीमत एवं उत्पादन निर्णय	
इकाई 12	अल्पाधिकार : कीमत एवं उत्पादन निर्णय	
खंड 5	**साधन बाज़ार**	
इकाई 13	साधन बाज़ार : साधन कीमत निर्धारण	डॉ. नौसीन निज़ामी, सहायक आचार्य (अर्थशास्त्र पं. दीन दयाल उपाध्याय, पेट्रोलिम विश्वविद्यालय, अहमदाबाद **हिंदी अनुवाद** – डॉ. श्याम सुंदर सिंह चौहान
इकाई 14	श्रम बाज़ार	
इकाई 15	भूमि बाज़ार	
खंड 6	**आर्थिक क्षेम : बाज़ार की विफलता एवं राज्य की भूमिका**	
इकाई 16	आर्थिक क्षेम : पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत आवंटनात्मक दक्षता	डॉ. एस.पी. शर्मा, सह-आचार्य (अर्थशास्त्र) श्याम लाल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली **हिंदी अनुवाद** – डॉ. श्याम सुंदर सिंह चौहान
इकाई 17	बाज़ार तंत्र की दक्षता : बाज़ार की विफलता एवं राज्य की भूमिका	डॉ. ममता महर, पोस्ट डॉक्टरल फेलो, वेल्यूचेंन एवं न्यूट्रीशन कार्यक्रम, वर्ल्ड फिश, मलेशिया **हिंदी अनुवाद** – डॉ. श्याम सुंदर सिंह चौहान

पाठ्यक्रम संपादक : प्रो. नारायण प्रसाद एवं श्री बी. एस. बागला

सामग्री निर्माण	कार्यालयी सहायक
श्री मनजीत सिंह अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन), इग्नू, नई दिल्ली	सुश्री कामिनी डोगरा आशुलिपिक, एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली

जनवरी, 2019

© *इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2019*

ISBN :

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफी (चक्र मुद्रण) द्वारा अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदान गढ़ी नई दिल्ली–110068 से अथवा इग्नू की आधिकारिक वेबसाइट www.ignou.ac.in से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

लेजर टाइप सेट– ग्राफिक प्रिंटर्स, मयूर विहार फेस 1, दिल्ली – 110091

मुद्रण –

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विषय वस्तु

खंड / इकाई	विषय प्रवेश	पृष्ठ संख्या
खंड 1	**परिचय**	**4**
इकाई 1	अर्थशास्त्र एवं अर्थव्यवस्था का परिचय	7
इकाई 2	माँग एवं आपूर्ति विश्लेषण	26
इकाई 3	माँग और आपूर्ति : व्यावहारिक अनुप्रयोग	51
खंड 2	**उपभोक्ता व्यवहार का सिद्धांत**	
इकाई 4	उपभोक्ता व्यवहार : गणनावाचक दृष्टिकोण	73
इकाई 5	उपभोक्ता व्यवहार : क्रमवाचक दृष्टिकोण	92
खंड 3	**उत्पादन एवं लागतें**	
इकाई 6	एक परिवर्ती आगत का उत्पादन फलन	129
इकाई 7	दो एवं दो से अधिक आगतों का उत्पादन फलन	142
इकाई 8	लागत फलन	172
खंड 4	**बाज़ार संरचना**	
इकाई 9	पूर्ण प्रतियोगिता : फर्म एवं उद्योग के संतुलन	203
इकाई 10	एकाधिकार : कीमत एवं उत्पादन निर्णय	223
इकाई 11	एकाधिकारिक प्रतियोगिता : कीमत एवं उत्पादन निर्णय	246
इकाई 12	अल्पाधिकार : कीमत एवं उत्पादन निर्णय	264
खंड 5	**साधन बाज़ार**	
इकाई 13	साधन बाज़ार : साधन कीमत निर्धारण	291
इकाई 14	श्रम बाज़ार	306
इकाई 15	भूमि बाज़ार	319
खंड 6	**आर्थिक क्षेम : बाज़ार की विफलता एवं राज्य की भूमिका**	
इकाई 16	आर्थिक क्षेम : पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत आवंटनात्मक दक्षता	333
इकाई 17	बाज़ार तंत्र की दक्षता : बाज़ार की विफलता एवं राज्य की भूमिका	347
शब्दावली		358
कुछ उपयोगी पुस्तकें		369

प्रारंभिक व्यष्टि अर्थशास्त्र : परिचय

यह पाठ्यक्रम कला स्नातक (अर्थशास्त्र ऑनर्स) कार्यक्रम करने वाले छात्रों को व्यष्टि अर्थशास्त्र के आधारभूत सिद्धांतों से परिचय कराता है। इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों के बीच व्यष्टि अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धांतों की अवधारणात्मक आधारशिला रखना है ताकि वे माध्यामिक व्यष्टि अर्थशास्त्र-I एवं माध्यमिक व्यष्टि अर्थशास्त्र-II को भली-भाँति समझ सकें तथा इन सिद्धांतों का वास्तविक जीवन की घटनाओं के विश्लेषण में अनुप्रयोग कर सकें।

अर्थशास्त्र एक प्रयोगात्मक एवं व्यावहारिक विषय है। इस विषय का सैद्धांतिक ज्ञान विभिन्न आर्थिक अभिकर्ताओं को इस प्रकार के निर्णय लेने में मदद करता है : किन वस्तुओं का उत्पादन करना है? वस्तुओं का उत्पादन किस प्रकार करना है? उत्पादन में किन तकनीकों का प्रयोग करना है? उत्पादन प्रक्रिया में किन कारकों अथवा संशोधनों का तथा किन संयोगों में प्रयोग करना है? उपभोक्ता वस्तुओं के क्रय संबंधी निर्णय किस प्रकार लेते हैं तथा उनके चयन संबंधी निर्णय कीमतों एवं आय में हुए परिवर्तनों से किस प्रकार प्रभावित होते हैं? फर्म कैसे तय करती है कि कितने श्रमिकों को काम पर लगाया जाय और श्रमिक कैसे यह तय करते हैं कि कहाँ उन्हें कार्य करना है और कब तक करना है? दूसरे शब्दों में, अर्थशास्त्र का विषय क्षेत्र राज्य की क्रियाओं के वित्तीयन से बढ़कर आम व्यक्ति के दैनिक जीवन में महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने में मदद करने तक पहुँच गया है।

आज अर्थशास्त्र के विषय क्षेत्र में बहुत-सी गतिविधियाँ सम्मिलित हो गयी हैं। इन गतिविधियों में शामिल हैं– (क) उपभोक्ता का व्यवहार या चयन प्रक्रिया; (ख) उत्पादक का व्यवहार अथवा उत्पादन क्रिया का आयोजन एवं संचालन किस प्रकार किया जाता है? (ग) बाज़ार के विविध रूप क्या होते हैं? (घ) विभिन्न व्यक्ति उत्पादन प्रक्रिया में अपने स्वामित्व वाले साधनों द्वारा किस प्रकार अपना योगदान देते हैं? (ङ) विभिन्न प्रकार की कार्य-दक्षताएँ कौन-सी हैं, (च) किन परिस्थितियों में बाज़ार विफल होते हैं और इन परिस्थितियों में बाज़ार अपनी किस भूमिका का निर्वहन कर सकता है?

प्रस्तुत पाठ्यक्रम छात्रों को उक्त सभी मुद्दों से अवगत कराता है। यह पाठ्यक्रम **छह खंडों** में विभक्त है :

अर्थशास्त्र की प्रकृति से परिचय कराते हुए **खंड 1** माँग एवं आपूर्ति के आधारभूत सिद्धांतों से अवगत कराता है। साथ ही, इस बात की भी जानकारी प्रदान कराता है कि माँग एवं आपूर्ति के वक्र किस प्रकार बाज़ार प्रक्रिया का वर्णन करने में प्रयुक्त होते हैं। इस खंड में तीन इकाई हैं। अर्थशास्त्र एवं अर्थव्यवस्था का परिचय नामक **प्रथम इकाई में**, अर्थशास्त्र की मूलभूत प्रकृति तथा इस विषय में प्रयुक्त आधारभूत संकल्पनाओं एवं विधि को समाहित किया गया है। **इकाई 2 में,** माँग एवं आपूर्ति के सिद्धांत, माँग एवं आपूर्ति की लोच की अवधारणा उसके निर्धारक तथा उसके मापन को बताया गया है। **इकाई** 3 माँग तथा आपूर्ति को साथ लेकर बाज़ार प्रक्रिया की चर्चा करती है।

खंड 2 उपभोक्ता के सिद्धांत से संबंधित है और इसमें दो इकाइयाँ हैं। **इकाई 4** उपयोगिता मापन के गणनात्मक दृष्टिकोण से संबंध रखती है और इस बात का विश्लेषण करती है कि उपभोक्ता किस प्रकार सम-सीमांत उपयोगिता की मदद से संतुलन को प्राप्त करता है? **इकाई 5** में क्रमवाचक दृष्टिकोण के तहत उपभोक्ता व्यवहार का विश्लेषण किया गया है।

खंड 3 में, उत्पादन फलन एवं लागत सिद्धांत का विश्लेषण किया गया है। इसमें तीन इकाइयाँ हैं। **इकाई 6** एक परिवर्ती आगत वाले उत्पादन फलन पर प्रकाश डालती है। **इकाई 7 में** दो एवं इससे अधिक परिवर्ती आगतों वाले उत्पादन फलन की चर्चा की गई है।

इकाई 9 में विभिन्न प्रकार की लागतों को ध्यान में रखते हुए उत्पादन के लागत पक्ष की चर्चा की गई है।

खंड 4 बाज़ार के विभिन्न रूपों जैसे पूर्ण प्रतियोगिता, एकाधिकार, एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता तथा अल्पाधिकार पर प्रकाश डालता है। इस खंड में चार इकाइयाँ हैं। पूर्ण प्रतियोगिता : फर्म एवं उद्योग में संतुलन नामक **नौवीं इकाई** पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए इस बाज़ार के तहत फर्म एवं उद्योग के संतुलन की व्याख्या करती है। **इकाई 10** जिसका शीर्षक एकाधिकार : कीमत एवं उत्पादन निर्णयन है, के अंतर्गत एकाधिकार बाज़ार के कीमत विभेद की चर्चा की गई है। अल्पकाल एवं दीर्घकाल में एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता के तहत संतुलन की शर्तें, अतिरेक क्षमता का सिद्धांत तथा विभिन्न बाज़ार रूपों की तलना **इकाई 11** में की गई है। अल्पाधिकार के अंतर्गत कीमत एवं उत्पादन का निर्धारण **इकाई 12** में प्रदान किया गया है।

खंड 5 उत्पादन साधनों की कीमत निर्धारण पर प्रकाश डालता है। इसमें तीन इकाइयाँ हैं। वितरण के सीमांत उत्पादकता सिद्धांत की चर्चा करते हुए **इकाई 13** लगान एवं मज़दूरी किस प्रकार निर्धारित होते हैं पर एक विहंगम दृष्टिकोण प्रदान करती है। इसमें ब्याज एवं लाभ के सिद्धांतों की भी संक्षेप में चर्चा की गई है। **इकाई 14** पूर्ण प्रतियोगी एवं अपूर्ण प्रतियोगी श्रम बाज़ार के तहत मज़दूरी निर्धारण में माँग एवं आपूर्ति प्रक्रियाओं से आपका परिचय कराती है। साथ ही श्रम संघों की भूमिका एवं मज़दूरी विभिन्नताओं का विश्लेषण भी इस इकाई में शामिल किया गया है। **इकाई 15** उत्पत्ति के साधन के रूप में भूमि की विशिष्टताएँ एवं लगान के विभिन्न सिद्धांतों पर प्रकाश डालती है।

खंड 6 में आर्थिक क्षेम बाज़ार की विफलता एवं राज्य की भूमिका को शामिल किया गया है। इस खंड में 2 इकाइयाँ हैं– **इकाई 16** छात्रों को पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार के तहत कार्यक्षमताओं के विविध रूपों से परिचय कराती है और साथ ही यह भी स्पष्ट करती है कि पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार की मान्यताओं से दूरी किस प्रकार के परिणाम देती है। **इकाई 17** उन विभिन्न परिस्थितियों की ओर इंगित करती है जहाँ बाज़ार विफल हो जाते हैं और इसी कारण राज्य को अपनी भूमिका का निर्वहन करना होता है।

खंड 5 साधन बाज़ार

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

खंड 5 साधन बाज़ार

खंड 1 में उत्पाद बाज़ार अर्थात् वस्तुओं एवं सेवाओं जिन्हें उपभोक्ता खरीदते हैं तथा फर्म या विक्रेता बाज़ार में विक्रय करते हैं पर ध्यान केंद्रित किया गया था। उत्पादन साधनों की बाज़ार मांग मूलतः व्युत्पन्न प्रकृति की है और इसी कारण वे शक्तियाँ जो उत्पाद बाज़ार में माँग एवं पूर्ति का निर्धारण करती हैं साधन बाज़ारों को भी प्रभावित करती है। फिर भी, उत्पत्ति के साधनों विशेष रूप से भूमि की अद्वितीय विशेषताओं के कारण इनके कीमत निर्धारण की प्रक्रिया की अलग से चर्चा करने की आवश्यकता है। इस खंड में 3 इकाइयाँ हैं।

इकाई 13 में यह बताया गया है कि लगान एवं मज़दूरी कैसे निर्धारित होती है? ब्याज़ एवं लाभ के सिद्धांत को भी संक्षेप में समझाया गया है। **इकाई 14** में पूर्ण प्रतियोगिता एवं अपूर्ण प्रतियोगिता वाले श्रम बाज़ार के अंतर्गत मज़दूरी निर्धारण प्रक्रिया में माँग एवं पूर्ति की भूमिका से अवगत कराया गया है। **इकाई 15** उत्पत्ति के साधन के रूप में भूमि की विशिष्टताएँ एवं लगान के विभिन्न सिद्धांतों पर प्रकाश डालती है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 13 साधन बाज़ार : साधन कीमत निर्धारण

संरचना

13.0 उद्देश्य

13.1 विषय प्रवेश

13.2 साधन बाज़ारों का अर्थ

13.3 साधन की माँग एवं आपूर्ति की अवधारणा

13.4 सीमांत उत्पादकता सिद्धांत द्वारा साधन कीमत का निर्धारण

13.5 साधन के प्रतिफल का निर्धारण

- 13.5.1 लगान
- 13.5.2 मज़दूरी
- 13.5.3 ब्याज़
- 13.5.4 लाभ

13.6 फर्म के कीमत निर्णयन में साधन की कीमतों की भूमिका

13.7 सार-संक्षेप

13.8 संदर्भ ग्रंथादि

13.9 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

13.0 उद्देश्य

विभिन्न प्रकार के बाज़ारों की संरचना – एकाधिकार, एकाधिकारिक प्रतियोगिता, पूर्ण प्रतियोगिता तथा अल्पाधिकार उत्पाद बाज़ार में कीमत एवं मात्रा की संतुलन की दशाओं की व्याख्या इकाई 1 से 4 में की गयी है। उन्हें सीख लेने के बाद इस इकाई में साधन बाज़ार अर्थात् अर्थव्यवस्था में उत्पत्ति के साधनों के बाज़ार की अवधारणा को समझाया गया है। यह इकाई आपको समझाएगी कि साधनों का बाज़ार वस्तु बाज़ार से किस प्रकार अलग रूप से परिचालित होता है। साधन बाज़ार में कीमत निर्णयन किस प्रकार किया जाता है तथा उत्पत्ति के साधनों का प्रतिफल किस प्रकार निर्धारित होता है।

इस इकाई के अध्ययनोपरांत, आप सक्षम होंगेः

- साधन बाज़ार की अवधारणा को व्यक्त कर पाने में;
- साधन बाज़ारों में माँग एवं आपूर्ति प्रक्रिया की व्याख्या कर पाने में;
- किसी साधन के लिए कीमत निर्णयन का निरूपण कर पाने में; और
- उत्पत्ति के साधनों के प्रतिफलों जैसे कि मज़दूरी, ब्याज एवं लगान को निर्धारित कर पाने में।

13.1 विषय प्रवेश

कोई भी ऐसा प्लेटफार्म जहाँ वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय-विक्रय संभव हो, बाज़ार के रूप में जाना जाता है। वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन में उत्पत्ति के साधनों की आवश्यकता होती है। वस्तुओं एवं सेवाओं के बाज़ारों की भाँति अर्थव्यवस्था में उत्पत्ति के साधनों के भी अपने बाज़ार होते हैं। उत्पत्ति के चार प्राथमिक साधन हैं– भूमि, श्रम,

पूँजी एवं उद्यम। इस इकाई में, भूमि, श्रम, पूँजी एवं पूँजी बाज़ारों के तत्व, महत्त्व एवं परिचालनों को संक्षिप्त में समझाया गया है। इस खंड की अगली दो इकाइयों में श्रम एवं भूमि बाज़ारों की विस्तृत व्याख्या की गयी है।

प्रारंभ में, यह जान लेना अधिक महत्त्वपूर्ण है कि साधन बाज़ारों की आवश्यकता क्यों पड़ती है। इसे समझने के लिए यह जानने की आवश्यकता है कि अर्थव्यवस्था में उत्पत्ति के साधनों का क्या महत्त्व है। जैसा कि नाम इंगित करता है उत्पादन की प्रक्रिया में उत्पत्ति के साधन महत्त्वपूर्ण घटक हैं। इनके बिना उत्पादन हो ही नहीं सकता। एक मशीन (पूँजी) के बिना कंप्यूटर का उत्पादन कर पाना संभव नहीं है। सूचना प्रौद्योगिकी पेशेवरों (श्रम) के बिना कोई सॉफ्टवेयर विकसित नहीं किया जा सकता और बिना किसी स्थान के कुछ भी उत्पादित नहीं किया जा सकता। किसी उद्यमी द्वारा पूँजी एवं श्रम को लगाकर ही किसी वस्तु या सेवा का उत्पादन किया जाता है। उत्पादित की जाने वाली वस्तु हो या सेवा, अर्थव्यवस्था में उत्पत्ति के चारों साधनों की आवश्यकता होती है। तथापि, जिस अनुपात में उत्पत्ति के साधनों को प्रयुक्त किया जाता है वह उत्पादन की आवश्यकताओं एवं प्रौद्योगिकी के उच्चीकरण के अनुसार अलग-अलग हो सकता है। कृत्रिम ज्ञान, काल्पनिक बाज़ारों एवं रोबोटों के युग में उपर्युक्त प्रौद्योगिकियों को प्रयुक्त करते हुए उत्पादन प्रक्रिया धीरे-धीरे पूँजी प्रधान होती जा रही है, श्रम प्रधान उत्पादन तकनीक का स्थान ले रही है।

अर्थव्यवस्था में साधन बाज़ारों के महत्त्व एवं गत्यात्मकता को समझ लेने के बाद, आगे के उपखंडों में साधन बाज़ारों एवं साधन बाज़ार कीमत निर्धारण के सिद्धांतों पर प्रकाश डाला जाएगा।

13.2 साधन बाज़ारों का अर्थ

साधन बाज़ार ऐसे बाज़ार हैं जहाँ भूमि, श्रम तथा पूँजी जैसे उत्पत्ति के साधनों का क्रय-विक्रय किया जाता है। उत्पत्ति के ये साधन, उद्यमी के साथ अंतःक्रिया करके अर्थव्यवस्था में वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करते हैं। उत्पत्ति के साधनों के प्रमुख अभिलक्षण एवं अर्थ निम्नलिखित प्रकार हैं।

1) **भूमि** : उत्पत्ति का यह साधन भौतिक दिखाई देने वाला है। यह एक स्टॉक अवधारणा है। इसमें अर्थव्यवस्था में उपलब्ध कुल भौतिक संसाधन शामिल हैं। भूमि में न केवल ज़मीन, बल्कि वन, जल संसाधन, मृदा एवं खनिज संसाधन तथा खानें आदि भी शामिल हैं।

2) **श्रम** : यह उत्पत्ति का अदृश्य साधन है क्योंकि श्रम सेवाएँ श्रमिक में सन्निहित हैं, उससे अलग नहीं की जा सकती। परिवारों द्वारा उत्पादन के उद्देश्य से किए गए प्रयास, चाहे वे शारीरिक हों या बौद्धिक, श्रम कहलाते हैं। श्रम एक प्रवाह रूपी संकल्पना है।

3) **पूँजी** : यह उत्पत्ति का दिखाई देने वाला साधन है। सभी प्रकार की मशीनें एवं प्लांट, भवन, परिवहन साधन आदि, जिनका उपयोग उत्पादन हेतु किया जाता है, पूँजी कहलाता है।

4) **उद्यम** : वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करने के लिए उत्पादन प्रक्रिया को चलाने एवं संगठित करने वाले उद्यमी की दक्षताएँ दिखाई न देने वाला साधन है। सामान्यतया, परिवार उत्पत्ति के इन कारकों के स्वामी होते हैं तथा उन पर उनका नियंत्रण होता है। वे इन साधनों को उत्पादकों को बेचते हैं। परिवार श्रम के रूप में अपनी सेवाएं देकर बदले में मज़दूरी प्राप्त करते हैं। कुछ परिवारों के कुछ सदस्यों में उद्यम कौशल होता है तथा वे उद्यमी के रूप में कार्य करते हैं। परिवार साधन बाज़ार में इन साधनों को बेचकर आय अर्जित करते हैं और इस प्रकार, उत्पादन प्रक्रिया में सकारात्मक रूप में योगदान देते हैं। इस अंतःक्रिया को

परिवारों एवं फर्मों के बीच आय तथा व्यय के चक्रीय प्रवाह को निम्नलिखित चित्र द्वारा दर्शाया गया है।

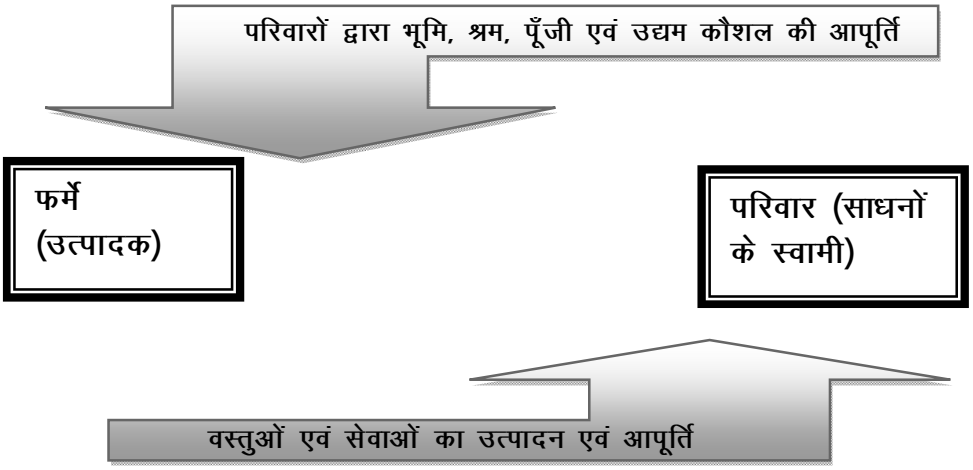

चित्र 13.1 : उत्पत्ति के साधनों एवं वस्तुओं और सेवाओं का परिवारों और फर्मों के बीच एक सरल कि अंतःक्षेत्रीय प्रवाह

13.3 साधन की माँग एवं आपूर्ति की अवधारणा

व्यष्टि अर्थशास्त्र के विद्यार्थी के रूप में आप माँग और आपूर्ति की अवधारणा से भली-भाँति परिचित होंगे। माँग एवं आपूर्ति की अवधारणाएँ एवं नियम, जिन्हें आप पहले पढ़ चुके हैं, वस्तुओं के बाज़ार पर भी लागू होती हैं। साधन की माँग और आपूर्ति को समझने के लिए वस्तु बाज़ार और साधन बाज़ार के बीच के अंतर-संबंध को समझना महत्त्वपूर्ण है।

व्युत्पन्न माँग

आँकड़ों का विश्लेषण करने वाली फर्म के कार्यालय के लिए स्थान की माँग पर विचार करते हैं। सामान्यतया आँकड़ों का विश्लेषण करने वाली कंपनी को अपने विश्लेषकों, प्रोग्रामरों, प्रबंधकों एवं अन्य कार्मिकों के लिए किराये के कार्यालय की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार, एक बेकरी स्वामी को बेकरी उत्पादों के उत्पादन और बिक्री के लिए स्थान की आवश्यकता होती है। प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र में कार्यालय स्थल हेतु माँग वक्र नीचे की ओर गिरता हुआ होगा जहाँ किराया फर्मों द्वारा माँग किए गए कार्यालय स्थान के आकार से संबद्ध है। किराया कीमत जितनी कम होगी कार्यालय स्थल की माँग उतनी ही अधिक होगी। वस्तुओं की माँग एवं साधनों की माँग के बीच एक महत्त्वपूर्ण अंतर उनकी उपयोगिता से जुड़ा हुआ है। उपभोक्ता वस्तुओं की माँग इसलिए करते हैं कि उनके उपभोग से उन्हें उपयोगिता प्राप्त होती है। दूसरी ओर, फर्में उत्पत्ति के साधनों की माँग इसलिए नहीं करती कि इससे उन्हें कोई उपयोगिता है बल्कि इसलिए करती हैं कि उत्पत्ति के चारों साधनों को प्रयुक्त करते हुए उत्पादन करना होता है। इसका उद्देश्य उत्पत्ति के साधनों का प्रयोग कर आगम और लाभ को अधिकतम करना है। इतना ही नहीं उत्पत्ति के साधनों की माँग उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की उपभोक्ताओं द्वारा की गयी माँग पर निर्भर है। वस्तुओं की माँग जितनी अधिक होगी, उनको उत्पादित करने वाले साधनों की माँग भी अधिक होगी। वस्तुओं की माँग कम होगी तो उन्हें उत्पादित करने वाले साधनों की माँग उतनी ही कम होगी। इसीलिए अर्थशास्त्रियों ने उत्पत्ति के साधनों की माँग को व्युत्पन्न माँग की संज्ञा दी है।

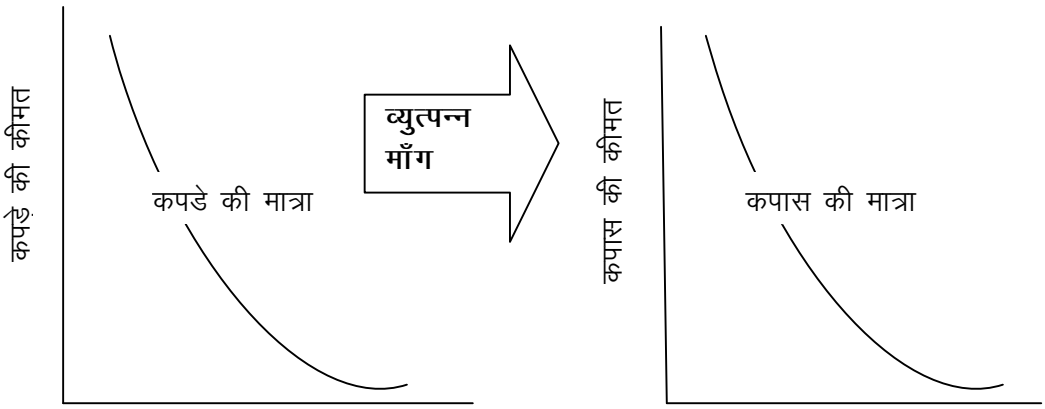

चित्र 13.2 : स्वतंत्र माँग

पारस्परिक माँग

जैसा कि पहले स्पष्ट किया जा चुका है कि केवल एक साधन को प्रयुक्त करते हुए किसी वस्तु या सेवा का उत्पादन नहीं किया जा सकता। वस्तुओं अथवा सेवाओं का उत्पादन उत्पत्ति के विभिन्न साधनों की अंतःक्रिया से ही संभव है। कल्पना कीजिए कि एक उत्पादक सोने के आभूषण उत्पादित करना चाहता है। इस उत्पादक को सोने के आभूषण की डिज़ाइन बनाने वाले (श्रमिक) की सेवाओं की आवश्यकता होगी। उत्पादन प्रक्रिया चलाने के लिए कार्यालय स्थल (भूमि) की आवश्यकता होगी तथा सोने को गलाने और ढालने के लिए कुछ मशीनों (पूँजी) की ज़रूरत होगी। यहाँ यह समझ लिया जाना चाहिए कि उत्पादन में अंतर निर्भरता उत्पत्ति के साधनों की उत्पादकताओं की पारस्परिक निर्भरता के रूप में परिलक्षित होती है। इस तरह से श्रम की उत्पादकता सीधे-सीधे प्रभावित होगी यदि सोने को गलाने और ढालने की मशीन दो दिन के लिए काम करना बंद कर देती है। वास्तव में, भूमि, श्रम एवं पूँजी की उत्पादकताओं की पारस्परिक निर्भरता ही है जो साधन आय के वितरण को जटिल बना देती है। उत्पादन प्रक्रिया में उत्पत्ति के विभिन्न साधनों के योगदान का आकलन करने के लिए सीमांत उत्पादकता की अवधारणा को प्रयुक्त किया जाता है, जहाँ प्रत्येक साधन के प्रतिफल के निर्धारण हेतु उसकी सीमांत उत्पादकता आकलित की जाती है।

सीमांत भौतिक उत्पाद (MPP), सीमांत उत्पाद का मूल्य (VMP) तथा सीमांत आगम उत्पाद (MRP)

उत्पत्ति के किसी साधन (जैसे की श्रम) का सीमांत भौतिक उत्पाद (Marginal Physical Product- MPP) उस साधन की एक अतिरिक्त इकाई को लगाने पर उत्पादित इकाइयों में हुई वृद्धि के समतुल्य है। बशर्ते, कि उत्पत्ति के अन्य साधनों की मात्राएँ स्थिर रहें।

MPP = कुल उत्पादन में परिवर्तन / उत्पत्ति के साधन की इकाइयों में परिवर्तन

सीमांत उत्पाद के मूल्य की अवधारणा को सीमांत मूल्य उत्पाद (Marginal Value Product) भी कहा जाता है। यह बाज़ारी कीमतों की सूचना को प्रयुक्त करते हुए उत्पाद का मूल्य है। जब उत्पाद की कीमत को सीमांत भौतिक उत्पाद से गुणा कर दिया जाता है तो उत्पत्ति के साधन का सीमांत मूल्य उत्पाद या सीमांत उत्पाद का मूल्य आकलित हो जाता है।

VMP = उत्पाद की कीमत × साधन का सीमांत भौतिक उत्पाद

सीमांत आगम उत्पाद (MRP) उत्पत्ति के साधन की एक अतिरिक्त इकाई को काम पर लगाने के कारण आगम में हुई वृद्धि के बराबर होता है।

MRP = कुल आगम में परिवर्तन/उत्पत्ति के साधन की इकाइयों की संख्या में परिवर्तन

या

MRP = सीमांत आगम × सीमांत भौतिक उत्पाद

इन अवधारणाओं को किसी फर्म द्वारा कितनी इकाइयों को काम पर लगाना है का निर्णय लेना एक उदाहरण से समझा जा सकता है। नीचे दी गयी तालिका में एक ब्रेड विनिर्माता के उत्पत्ति के साधनों की मात्राओं को दर्शाया गया है। श्रमिकों की संख्या परिवर्तनशील चर है जबकि उत्पत्ति के अन्य साधनों को स्थिर मान लिया गया है। सीमांत उत्पाद के मूल्य की गणना हेतु ब्रेड की बाज़ार कीमत रु. 10 मान ली गयी है।

श्रमिकों की संख्या	कुल उत्पाद (TP)	सीमांत भौतिक उत्पाद (MPP)	ब्रेड की बाज़ारी कीमत (रु.)	सीमांत उत्पाद का मूल्य (VMP)	कुल आगम (TR)	सीमांत आगम (MR)	सीमांत आगम उत्पाद (MRP)
0	0	.....	10	.....	.....	.....	.....
1	20	20	10	200	200	10	200
2	30	10	10	100	300	10	100
3	35	5	10	50	350	10	50
4	38	3	10	30	380	10	30
5	39	1	10	10	390	10	10

उपुर्यक्त तालिका में VMP कॉलम तथा MRP कॉलम की प्रविष्टियाँ एक जैसी हैं। तथापि, ऐसा इस मान्यता के साथ ही संभव हो पाया है कि बाज़ार में पूर्ण प्रतियोगिता विद्यमान है अर्थात् सीमांत आगम कीमत के बराबर है। अपूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार में प्रविष्टियाँ बदल जाएंगी।

उत्पत्ति के साधनों की माँग

उत्पत्ति के साधनों का माँग वक्र बाज़ार की संरचना में परिवर्तन के अनुसार बदलता रहता है। ऊपर पूर्ण प्रतियोगिता वाली बाज़ार संरचना के लिए VMP तथा MRP का आकलन किया गया है जो एकसमान है। यहाँ VMP यह बताती है कि उत्पत्ति के साधन की अधिकतम कितनी इकाइयों को काम पर लगाया जा सकता है। चूँकि VMP उत्पादन प्रक्रिया में अतिरिक्त श्रम इकाइयों के प्रयोग से हुई मूल्य वृद्धि को बताता है। इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि यह पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार में। VMP (MRP) वक्र पूर्ण प्रतियोगी फर्म के लिए उत्पत्ति के साधन का माँग वक्र है। इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि जो कारक फर्म के MRP को प्रभावित करते हैं; वही साधन के माँग वक्र को भी प्रभावित करेंगे। जो कारक फर्म के MRP को प्रभावित करते हैं, वे हैं : साधनों की प्रतिस्थापन्नता, अंतिम उत्पाद की माँग में परिवर्तन तथा उत्पत्ति के साधन पर खर्च की गयी राशि (लागत)।

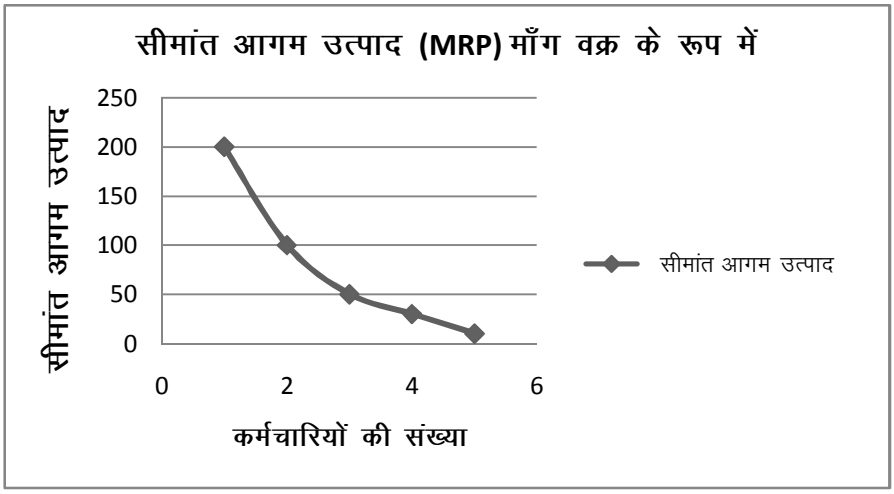

चित्र 13.3

क्या साधन की VMP या/और MRP साधन का बाज़ार माँग वक्र है? कोई एकल MRP किसी साधन के लिए बाज़ार माँग वक्र को परिलक्षित नहीं कर पाएगा क्योंकि यह केवल एक फर्म के लिए ही साधन का माँग वक्र है। सभी फर्मों के MRP के योग से उद्योग के लिए उत्पत्ति के साधन का माँग वक्र प्राप्त होता है। यदि सभी उद्योगों के लिए उत्पत्ति के साधन के माँग वक्रों का योग कर दिया जाय तो उत्पत्ति के साधन का कुल माँग वक्र प्राप्त होगा।

उत्पत्ति के साधनों की आपूर्ति

एक स्वतंत्र अर्थव्यवस्था में उत्पत्ति के अधिकांश साधन निजी स्वामित्व वाले हैं। इतना ही नहीं, भूमि, श्रम एवं पूँजी जैसे उत्पत्ति के साधनों की आपूर्ति से जुड़े निर्णय अनेक आर्थिक और गैर-आर्थिक कारणों से प्रभावित होते हैं। श्रम की आपूर्ति के निर्धारक तत्व हैं– श्रम की कीमत (मज़दूरी) एवं जनसंख्या के आयु, लिंग, शिक्षा एवं परिवार संरचना जैसे जनांकिकीय कारक आदि। भूमि की आपूर्ति अधिकांशतया संरक्षण एवं अधिवास प्रतिरूपों में परिवर्तन जैसे कारकों से निर्धारित गुणवत्ता से प्रभावित होती है। व्यवसायों, परिवारों एवं सरकारों द्वारा पूर्व में किए गए निवेश पूँजी की आपूर्ति को प्रभावित करते हैं।

सभी आगतों के आपूर्ति वक्र धनात्मक ढाल वाले या ऊर्ध्वाकार हो सकते हैं। कतिपय मामलों में, यह ऋणात्मक ढाल वाला भी हो सकता है। भूमि की आपूर्ति स्थिर है। इसलिए भूमि का आपूर्ति वक्र ऊर्ध्वाकार होता है। चूँकि पूँजी की आपूर्ति इस पर प्राप्त होने वाले प्रतिफल से सीधे-सीधे प्रभावित होती है, ऊँचा प्रतिफल होने पर आपूर्ति भी अधिक होती है। इसलिए पूँजी के आपूर्ति वक्र का ढाल धनात्मक होता है।

श्रम बाज़ार

दूसरी ओर, श्रम का आपूर्ति वक्र या तो धनात्मक ढाल वाला होता है (अल्पकाल में) या पीछे की ओर मुड़ने वाला (अल्पकाल में) होता है। श्रम के आपूर्ति वक्र के पीछे की ओर मुड़ने के कारणों की विवेचना अगली इकाई में विस्तार से की गयी है। उत्पत्ति के साधनों के माँग वक्रों एवं आपूर्ति वक्रों के बीच की अंतःक्रिया उनकी संतुलन कीमत निर्धारित करती है।

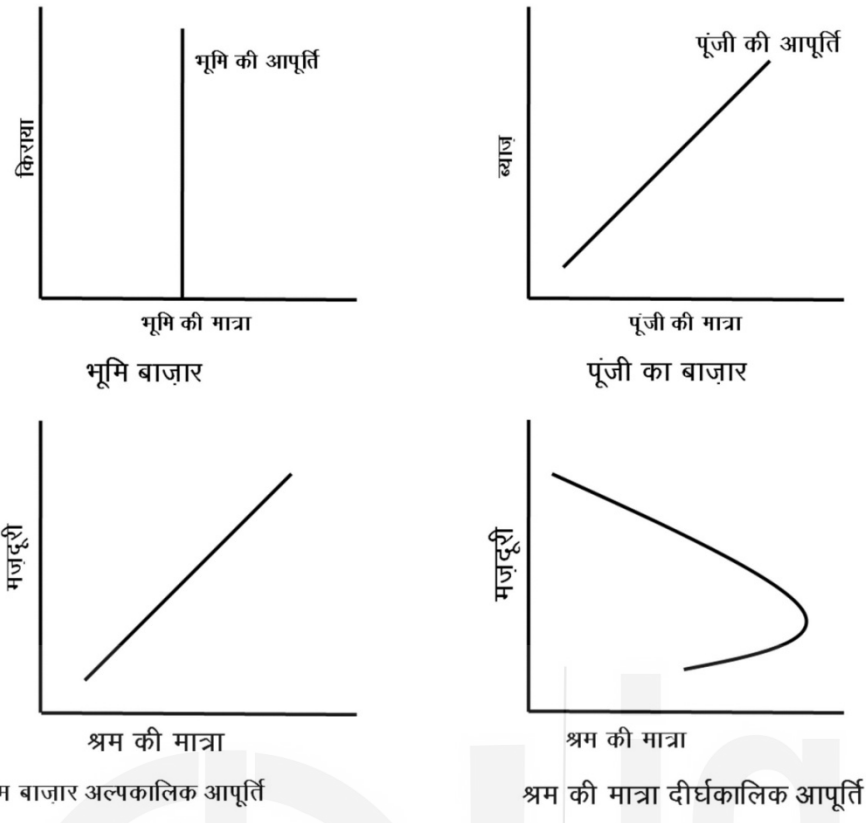

चित्र 13.4

बोध प्रश्न 1

1) साधन कीमत निर्धारण से आप क्या समझते हैं? साधन बाज़ार क्या है?

.....

.....

.....

2) क्या पूँजी की माँग व्युत्पन्न माँग है? पारस्परिक रूप से निर्भर माँग की अवधारणा को भी समझाइए।

.....

.....

.....

3) साधन बाज़ारों में संतुलन किस प्रकार निर्धारित होता है? साधन बाज़ारों में संतुलन के निर्धारण में सीमांत उत्पाद के मूल्य एवं सीमांत आगम उत्पाद की क्या भूमिका है?

.....

.....

.....

13.4 सीमांत उत्पादकता सिद्धांत द्वारा साधन कीमत का निर्धारण

अब तक आपने पढ़ा कि उत्पत्ति के विभिन्न साधन परिवारों द्वारा प्रदान किए जाते हैं तथा उत्पादन की प्रक्रिया में उनकी माँग और आपूर्ति किस प्रकार निर्धारित होती है। आपमें यह जानने की भी उत्कंठा होगी कि साधनों के स्वामियों को उनके द्वारा उपलब्ध कराए गए साधनों को उनकी कीमत का भुगतान किस प्रकार किया जाता है। इस प्रक्रिया को समझने के लिए आय वितरण के सीमांत उत्पादकता सिद्धांत को समझना महत्त्वपूर्ण है।

आय वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत इस बात की विवेचना करता है कि राष्ट्रीय आय उत्पत्ति के विभिन्न साधनों के बीच किस प्रकार वितरित की जाती है। सिद्धांत का कथन है कि साधन का प्रतिफल उसकी सीमांत उत्पादकता से सीधे-सीधे निर्धारित होता है। ऐसा विभिन्न भू-स्वामियों, श्रमिकों एवं पूँजी के स्वामियों के बीच प्रतिस्पर्धा के कारण होता है। वितरण सिद्धांत का एक अन्य बुनियादी तत्व यह है कि उत्पत्ति के विभिन्न साधनों की माँग साधन के द्वारा उत्पादित सीमांत उत्पाद से सृजित आगम से व्युत्पन्न होती है। लाभ को अधिकतम करने वाली फर्म उत्पत्ति के साधनों के संयोजनों का चुनाव उनके सीमांत आगम उत्पादों के अनुसार करती है।

13.5 साधन के प्रतिफल का निर्धारण

13.5.1 लगान

भूमि, उत्पत्ति का एक ऐसा साधन है जिसकी आपूर्ति स्थिर है। भूमि की माँग व्युत्पन्न माँग है। माना कि भूमि के खण्ड को सोयाबीन की खेती करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। यदि बाज़ार में सोयाबीन की माँग में वृद्धि होती है तो अधिक सोयाबीन उगाने के लिए भूमि की माँग में भी वृद्धि होगी। तथापि, भूमि की आपूर्ति स्थिर होने के कारण भूमि की माँग में वृद्धि होने पर उसको प्राप्त लगान में वृद्धि हो जाएगी।

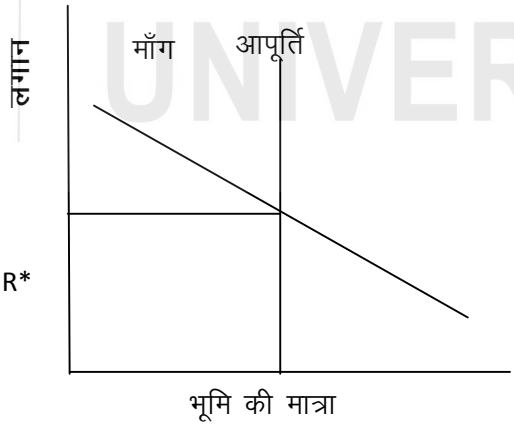

चित्र 13.5 : भूमि बाज़ार में संतुलन

उपर्युक्त चित्र में R* भूमि का संतुलन अवस्था में लगान है जो भूमि की माँग एवं आपूर्ति की अंतःक्रिया से निर्धारित हुआ है। लगान के विभिन्न सिद्धांतों की व्याख्या सातवीं इकाई में की गयी है।

13.5.2 मज़दूरी

मज़दूरी आपूर्ति किए गए श्रम की कीमत है। प्रतियोगी बाज़ार में मज़दूरी श्रम के सीमांत उत्पाद के बराबर होती है। संतुलन मज़दूरी उस बिंदु पर निर्धारित होती है जहाँ श्रम का माँग वक्र और आपूर्ति वक्र आपस में एक-दूसरे को काटते हैं। ध्यान रहे, श्रम का

माँग वक्र नीचे की ओर गिरता हुआ ऋणात्मक ढाल वाला तथा आपूर्ति वक्र ऊपर की ओर उठता हुआ धनात्मक ढाल वाला होता है। जब किसी बाह्य कारण से उद्योग के उत्पाद की माँग नीची होती है तो उसकी कीमत गिर जाती है। इससे श्रम के सीमांत उत्पादक का मूल्य (VMP) भी गिर जाता है। इससे अंततः श्रम की मज़दूरी दरें कम हो जाती हैं। इसके विपरीत उत्पाद की माँग बढ़ जाने पर उसकी कीमत में वृद्धि हो जाती है जो श्रम के सीमांत उत्पाद के मूल्य में वृद्धि कर देती है। इससे श्रम की मज़दूरी दर ऊँची हो जाती है। इसे चित्र 13.6 में समझाया गया है।

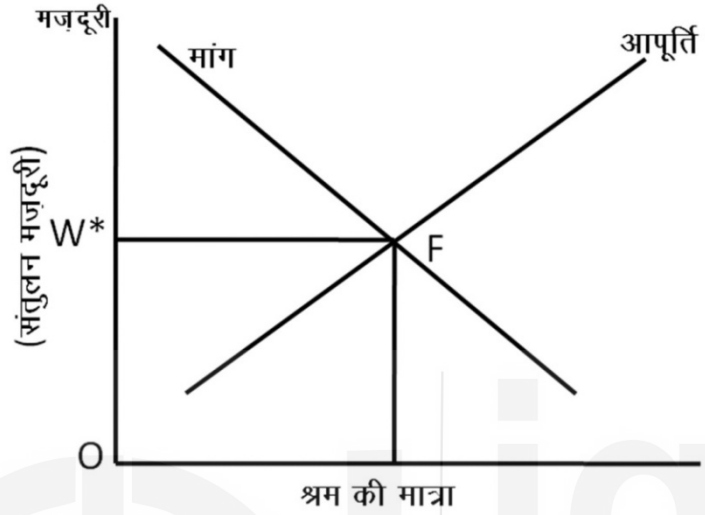

चित्र 13.6 : श्रम बाज़ार में संतुलन

पूर्ण प्रतियोगिता तथा अपूर्ण प्रतियोगिता में मज़दूरी दरों का निर्धारण अलग-अलग होता है जैसा कि आप इकाई 14 में देखेंगे।

13.5.3 ब्याज

पूँजी मानव द्वारा बनाया गया उत्पत्ति का साधन है। पूँजी सेवाओं को प्रयुक्त किए जाने की लागत को पूँजी के लिए किराया दर के रूप में जाना जाता है। जबकि पूँजी के स्वामियों को प्राप्त प्रतिफल का ब्याज कहा जाता है। ब्याज पूँजी की सेवाओं के लिए प्रतिफल है। पूँजी के किराए का मूल्य पूँजी को अपने पास ही रखने की अवसर लागत है। श्रम के विपरीत, पूँजीगत वस्तुओं को खरीदा और बेचा जा सकता है तथा उनकी एक परिसंपदा कीमत भी होती है। दस लाख रुपये की कार को खरीद कर उसे सीधे ही अनेक प्रकार की परिवहन सेवाओं में प्रयुक्त किया जाता है तथा इसे किसी अन्य को किराये पर भी दिया जा सकता है। किसी परिसंपदा की कीमत वह धन है जो इसे खरीदने के लिए भुगतान किया जाता है। पूँजी के किराए की दर तीन बातों पर निर्भर करती है : पूँजीगत वस्तु की कीमत, वास्तविक ब्याज़ दर तथा मूल्य ह्रास दर। पूँजीगत वस्तु की कीमत पूँजीगत वस्तु की माँग एवं आपूर्ति की अंतःक्रिया से निर्धारित होती है।

सामान्यतया, यदि अपेक्षित किराया मूल्य ऊँचा हो या ब्याज़ दर नीची हो तो पूँजीगत परिसंपदाओं एवं सेवाओं की कीमत ऊँची होती है। ये दोनों ही पूँजी के भावी किराया प्रवाह के वर्तमान मूल्य में वृद्धि कर देते हैं। वास्तविक ब्याज़ दर मुद्रास्फीति की विद्यमान दर तथा प्रचलित ब्याज़ दर (Nominal Interest Rate) पर निर्भर करती है। इन दोनों के बीच के अंतर को ही वास्तविक ब्याज दर कहा जाता है। मूल्य ह्रास बड़े पैमाने पर प्रौद्योगिकी एवं सतत् उपयोग एवं समय के साथ मशीन की घिसावट पर निर्भर करता है।

ब्याज के सिद्धांत

अनेक सिद्धांत हैं जो ब्याज़ की दर का निर्धारण करते हैं। ये सिद्धांत विभिन्न चरों के रूप में ब्याज़ की व्याख्या करते हैं।

i) उधार देय योग्य कोष सिद्धांत

यह सिद्धांत उधार देने योग्य कोषों की माँग एवं आपूर्ति द्वारा उस ब्याज़ दर का निर्धारण करता है जिस पर लेन-देन किए जाते हैं। यह सिद्धांत मानकर चलता है कि किसी समय बिंदु पर कुछ ऐसे लोग होंगे जो अपनी चालू आय से कम खर्च कर रहे होंगे (बचत करने वाले) तो दूसरी ओर ऐसे लोग भी हो सकते हैं जो अपनी वर्तमान आय से अधिक खर्च करने की योजना बना रहे हों। पहले वर्ग के लोगों को उधार योग्य कोषों का आपूर्तिकर्ता तथा दूसरे वर्ग के लोगों को उधार योग्य कोषों की माँग करने वाले वर्ग मे रखा जा सकता है। ब्याज की दर उस बिंदु पर निर्धारित होती है जहाँ उधार योग्य कोषों की माँग एवं आपूर्ति आपस में बराबर होती है। इस स्थिति को चित्र 13.7 में दर्शाया गया है।

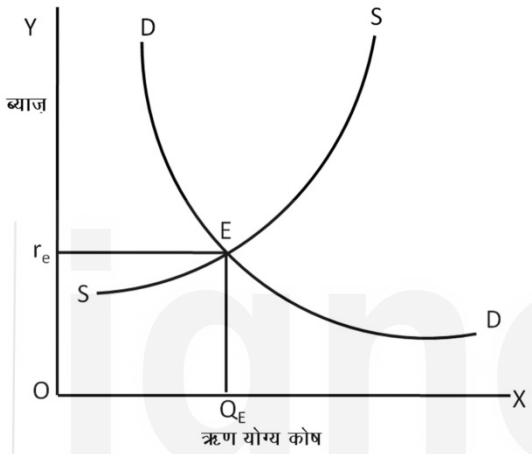

चित्र 13.7

चित्र 13.7 में माँग एवं आपूर्ति वक्रों का सरल चित्र प्रस्तुत किया जिसके बारे में आप भली-भाँति परिचित हैं। DD उधार देय योग्य कोषों का माँग वक्र तथा SS उधार देय योग्य कोषों का आपूर्ति वक्र है। माँग वक्र DD इंगित करता है कि ब्याज़ की विभिन्न दरों पर उधार देय योग्य कोषों की कितनी-कितनी माँग की जाएगी। इसी प्रकार, उधार देय योग्य कोषों के आपूर्तिकर्ता (बचत करने वाले) ब्याज की विभिन्न दरों पर कितनी बचत करने के लिए तैयार हैं, इसे आपूर्ति वक्र इंगित करता है। बिंदु E पर ये दोनों वक्र एक-दूसरे को काटते हैं जिससे r_e ब्याज की संतुलन दर निर्धारित होती है। ब्याज की इस दर पर Q_E उधार देय योग्य कोषों की माँग एवं आपूर्ति की जाती है।

ब्याज दर r_e पर Q_E कोषों की माँग और आपूर्ति की जाती है। ध्यान रहे कि उधार देय योग्य कोषों की माँग निम्न में से किसी भी कारण से बढ़ सकती है।

(क) निवेश माँग, (ख) उपभोग माँग, और (ग) वित्तीय माँग। यह भी हो सकता है कि उधार देय योग्य कोषों की माँग में वृद्धि उपर्युक्त तीनों ही कारणों से सम्मिलित रूप से हो। इसी प्रकार, हम कह सकते हैं कि उधार देय योग्य कोषों की आपूर्ति में निबल बचतों, पुरानी बचतों को बाहर निकाले जाने तथा नई मुद्रा के सृजन के कारण वृद्धि होती है।

ii) तरलता वरीयता सिद्धांत

इस सिद्धांत का प्रतिपादन जे. एम. कीन्स द्वारा किया गया। उन्होंने मुद्रा की माँग एवं ब्याज की दर को समाज में आय के कुल स्तर से संबद्ध किया। कीन्स के अनुसार, आय के किसी पूर्व निर्धारित स्तर पर तरल मुद्रा की माँग लेन-देन, सतर्कता एवं सट्टेबाजी के उद्देश्यों पर निर्भर करती है। लेकिन मुद्रा की आपूर्ति नीति निर्धारित चर है। इस प्रकार, ब्याज की दर दी हुई मुद्रा की आपूर्ति तथा मुद्रा के माँग फलन के बीच की अंतःक्रिया द्वारा निर्धारित होती है। हालांकि, अपने इसे उपागम में ब्याज दर का उत्पत्ति के साधन (पूँजी) के प्रतिफल की दर के निर्धारण से कोई लेना-देना नहीं है।

iii) **काल-वरीयता उपागम**

यह उपागम इर्विंग फिशर द्वारा प्रतिपादित किया गया। उनका दृष्टिकोण यह था कि उपभोक्ता अपने वर्तमान उपभोग की तुलना भविष्य के उपभोग से करता है। जिस दर पर भावी उपभोग वर्तमान उपभोग से प्रतिस्थापित किया जा सकता है (और विलोमतः), वह दर वर्तमान एवं भावी उपभोग के बीच प्रतिस्थापन की सीमांत दर होगी। इसे काल वरीयता की दर कहा जाता है। यह वर्तमान एवं भावी उपभोग के बीच खींचे गए समभाव वक्र के ढाल के बराबर होती है।

13.5.4 लाभ

उद्यम को उत्पत्ति का चौथा आर्थिक साधन माना जाता है। वस्तुतः यह उद्यमी है जो उत्पत्ति के अन्य साधनों– भूमि, श्रम तथा पूँजी को एक साथ संग्रहीत करके उत्पादन करता है। उत्पादन में उसकी भूमिका स्पष्ट है। यदि उत्पत्ति के अन्य साधनों को एक साथ न मिलाया जाय तो कोई उत्पादन ही नहीं होगा। पूँजीवादी प्रणाली में, लाभ की संभावना ही इस बात का निर्धारण करती है कि उत्पादन किया जाय या न किया जाय। यहाँ तक कि गैर-पूँजीवादी प्रकार के संगठनों के अंतर्गत भी लाभ फर्म की दक्षता का प्रामाणिक स्तर (benchmark) होता है। यही कतिपय नवोन्मेषों या तकनीकी परिवर्तनों की दक्षता का द्योतक है। इस प्रकार, सभी परिस्थितियों में, अन्य फर्मों की तुलना में कोई फर्म अधिक लाभ अर्जित करती है तो इसे अधिक दक्ष या बेहतर संसाधन या बेहतर तकनीक प्रयुक्त करने वाली फर्म माना जाता है। लेकिन बेहतर तकनीकें अपनाने में कुछ न कुछ जोखिम भी रहता है। इसलिए प्रायः ऐसे निर्णय अनिश्चितता एवं जोखिम के सापेक्ष लाभ को ध्यान में रखकर लिए जाते हैं। उद्यमी की भूमिका को समझने के लिए उद्यमी के कार्यों को दो भागों में बाँटा जा सकता है –

क) संगठनात्मक, एवं

ख) जोखिम वहन करने के कार्य

क) **संगठनात्मक** : व्यवसाय संगठन से जुड़ी दैनंदनिक गतिविधियों को निष्पादित करना प्रबंध कहलाता है। वर्तमान में अधिकांश कंपनियाँ पेशेवर प्रबंधकों द्वारा प्रबंधित हैं, जिन्हें वेतन और अन्य लाभ मिलते हैं। ऐसी व्यवस्था को उद्यम का श्रम के समकक्ष एक हिस्सा माना जाता है।

ख) **जोखिम वहन करने के कार्य** : प्रत्येक व्यवसाय के साथ बाज़ार में असफल होने का जोखिम तो मौजूद रहता ही है। ऐसा बाज़ार स्थल की अनिश्चितता, प्राकृतिक कारणों, राजनीतिक कारणों से होता है। यदि कोई व्यवसाय असफल होता है तो उद्यमी को निवेश के बड़े भाग को खोना पड़ता है। इसलिए हानि का जोखिम तो सदैव ही विद्यमान है। फिर भी, किसी नई प्रौद्योगिकी के साथ किसी नए उत्पाद को बाज़ार में उतारना अधिक जोखिम युक्त है। इसलिए ऐसी गतिविधियों के लिए प्रतिफल भी ऊँचा होना चाहिए। अन्यथा, उन्हें कोई प्रारंभ ही नहीं करेगा। इसीलिए कहा जाता है कि लाभ जोखिम वहन करने का पुरस्कार है।

1) लेखा लाभ एवं आर्थिक लाभ

लेखा पद्धति में लाभ को किसी एक वर्ष में ह्रास व्यय को शामिल करते हुए कुल लागत के ऊपर कुल आगम के रूप में प्राप्ति द्वारा परिभाषित किया जाता है। कच्चे माल, ईंधन/ऊर्जा, मजदूरी एवं वेतन, किराया, बीमा एवं ब्याज के रूप में किए गए भुगतान को लागत में शामिल किया जाता है। पूँजीगत स्टॉक में होने वाली टूट-फूट, मरम्मत एवं देखभाल पर होने वाले व्यय को मूल्य ह्रास व्यय या घिसाई व्यय कहा जाता है। इस प्रकार, एक वर्ष के भीतर उपर्युक्त लागतों को पूरा करने के बाद मिले निबल अतिरेक को लेखाकारों द्वारा लाभ कहा जाता है।

किंतु, ऐसी गणनाओं में कतिपय अंतर्निहित लागतों को शामिल नहीं किया जाता। उदाहरणार्थ, उद्यमी द्वारा स्वयं किए जाने वाले कार्य के लिए मिलने वाला पारिश्रमिक। इसी प्रकार, कंपनियाँ समय के साथ अपने कुछ कोष संचित कर लेती हैं। इन पर अर्जित हो सकने वाले ब्याज को भी लागत में शामिल किया जाना चाहिए। आर्थिक लाभ के अंतर्गत इस प्रकार की अंतर्निहित लागतों को भी कुल लागत में शामिल किया जाता है। इसलिए आर्थिक लाभ, लेखा लाभ अंतर्निहित लागतों के मान जितना कम रह जाता है।

2) लाभ के सिद्धांत

पिछले वर्षों में, अर्थशास्त्रियों ने लाभ के अनेक सिद्धांत प्रतिपादित किए हैं। उदाहरणार्थ, जोसेफ शुम्पीटर ने लाभ को नवोन्मेष से जोड़ा है। जबकि फ्रेंक नाइट ने लाभ को अनिश्चितता से संबद्ध किया है।

क) लाभ : नवोन्मेष हेतु पुरस्कार

शुम्पीटर ने लाभ को एक ऐसी प्रघटना माना है, जो केवल गत्यात्मक अर्थव्यवस्था से संबंधित है। उसने पाँच प्रकार के परिवर्तन चिन्हित किए जो आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हैं या समाज को गतिशील बनाते हैं। ये परिवर्तन निम्नलिखित हैं :

i) नए उत्पादों को प्रारंभ करना;

ii) उत्पादन की नई विधियों को अपनाना;

iii) नए कच्चे माल खोजना

iv) नए बाज़ार खोजना

v) संगठन के नए स्वरूपों को अपनाना

नवोन्मेष नवीन ज्ञान को वास्तविक व्यवसाय परिस्थितियों में यथार्थ रूप से प्रयुक्त किए जाने की व्यवस्था है। नई खोजों, नई तकनीकों का वास्तविक जगत में अनुप्रयोग ही नवोन्मेष है। यह ज़रूरी नहीं है कि नवोन्मेषक स्वयं अन्वेषक भी हो। लेकिन वह कुछ नवोन्मेषों को अपनी उत्पादक गतिविधियों को बदलने या आगतों एवं उत्पादन के संबंधों को परिवर्तित करने का कार्य करता है। ऐसे नवोन्मेष उत्पादन की नई तकनीक अपनाने के रूप में भी हो सकते हैं। ये नए बाज़ारों की खोज से संबंधित हो सकते हैं या फिर विपणन की सभी गतिविधियों से संबंधित हो सकते हैं।

शुम्पीटर का मानना है कि जो नवोन्मेष करता है, वह अधिक लाभ अर्जित करने में सक्षम है। इसलिए उसे आगे और नवोन्मेष अपनाने की प्रेरणा मिलती है। इससे कुछ और नए उद्यमी बाज़ार में उतर सकते हैं। ये लोग धीरे-धीरे मूल नवोन्मेषक के समान ही उत्पादन करने लगते है। इसके परिणामस्वरूप वह प्रतिस्पर्धा में सबसे आगे रहने के लिए और अधिक प्रयास करता है। इस प्रकार, नवोन्मेष से लाभ सृजित होता है तथा लाभ से अन्य नवोन्मेष करने की प्रेरणा मिलती है।

ख) अनिश्चितता और लाभ

फ्रेंक नाइट ने लाभ को विक्रय कीमत एवं लागतों के बीच के अंतर के रूप में परिभाषित किया है। ऐसी परिस्थिति में लाभ एक अवशिष्ट के रूप में प्राप्त होता है। विक्रय कीमतें एवं लागतें अनेक कारकों पर निर्भर करती हैं। इनमें से कुछ कारक जोखिम युक्त होते हैं, जिनका पूर्वानुमान लगाकर उनसे हो सकने वाली हानि को लागत संरचना में शामिल कर लिया जाता है। पूर्वानुमानित अधिकांश जोखिमों का बीमा भी कराया जा सकता है। ऐसी जोखिमों से होने वाली हानि से बचने के लिए कंपनी बीमा पॉलिसी ले सकती है। इन पॉलिसियों पर किए गए भुगतान को लागत में शामिल कर लिया जाता है। इस प्रकार की जोखिम दशाएं पूरी तरह से पूर्वानुमान लगा लिए जाने योग्य तथा कटौती

किए जाने योग्य होती है। इसलिए पूर्ण सुनिश्चितता के परिवेश में उत्पादन करना अच्छा या बुरा हो सकता है।

लेकिन नाइट का दृष्टिकोण अनिश्चितता के अन्य आयाम की ओर ध्यान दिलाता है और कहता है कि उत्पादक या उद्यमी सदा पहले से ही उपभोक्ता की इच्छाओं और प्राथमिकताओं का अनुमान लगा रहा होता है। उसे ऐसा करना भी चाहिए, क्योंकि, उसे भविष्य में ऐसी वस्तुओं का उत्पादन करना है जो ऐसी इच्छाओं को संतुष्ट करें। ऐसा अनिवार्यतः होता है क्योंकि माँग के पूर्वानुमान तथा उत्पादन एवं उपभोक्ताओं तक वस्तुएँ पहुंचाने में समयान्तराल होता है। एक सीमा तक माँग की संतुष्टि के अनुरूप उत्पादन करने के लिए फर्म के संचालन के परिणामों में भी अनिश्चितता होती है। यहाँ तक कि सामान्य संगठनात्मक कार्य करने वाला प्रबंधक भी बाज़ार में होने वाले आय उच्चावचनों के विरुद्ध उत्पत्ति के साधनों के हितों को संरक्षित करने के मामले में जोखिम का सामना करता है। इस प्रकार, उद्यमी की आय के दो संघटक हैं, वेतन या मज़दूरी संघटक, जिसकी प्रकृति संविदात्मक है और दूसरी अवशिष्ट आय जो बाज़ार में परिवर्तन के अनुसार बदल सकती है। कुछ अर्थशास्त्री केवल दूसरे घटक को ही लाभ कहना पसंद करते हैं।

इस प्रकार, हमने पाया कि लाभ तथा उत्पत्ति के अन्य साधनों के बीच प्रमुख अंतर हैः मज़दूरी, लगान (किराया) एवं ब्याज़ आदि सभी भुगतान हैं जो पहले से ही तय हो जाते हैं, लाभ के बारे में ऐसा नहीं है। अनिश्चितता के चलते लागतों एवं आगम दोनों में उच्चावचन हो सकते हैं। उनमें संतुलन नहीं बैठाया जा सकता। इस प्रकार, लाभ एक अतिरेक है जो अन्य सभी भुगतान दायित्वों को पूरा करने के उपरांत उद्यमी के लिए बचता है।

ग) लाभ एवं बाज़ार संरचना

कुछ अर्थशास्त्री इस बात पर बल देते हैं कि लाभ अनिवार्यतः बाज़ार अपूर्णताओं का एक परिणाम है। यदि पूर्ण प्रतियोगिता मौजूद रहती है तो प्रत्येक उत्पादक एक जैसी प्रौद्योगिकी का प्रयोग करेगा, उत्पाद, लागत एवं बाज़ार की दशाओं की उसे पूरी जानकारी होगी। ऐसा परिदृश्य सभी उत्पादनों में लागत को न्यूनतम करने की ओर ले जाएगा। लागत एवं आगम के सभी निर्धारक तत्व पूरी तरह से सुनिश्चित होंगे। इसलिए उद्यम केवल एक संगठन या दैनिक पर्यवेक्षण होगा। इसलिए लाभ का न्यूनतम स्तर या पर्यवेक्षण आदि के लिए 'सामान्य' क्षतिपूर्ति ही होना चाहिए।

किंतु, यदि बाज़ार पूर्ण प्रतियोगी नहीं है तो फर्म अपनी सुविधानुसार उत्पादन की मात्रा और कीमतें निर्धारित कर सकती है। इसमें पूर्ण सूचना की शर्त को तोड़ना भी शामिल है। फर्म कुछ नवोन्मेष करके इन्हें अन्यों से गोपनीय रख सकती है। जब तक यह गोपनीयता बनी रहती है, तब तक संबंधित फर्म अन्य फर्मों की तुलना में अधिक लाभ अर्जित करती रहेगी।

ए. पी. लर्नर ने लाभ पर एकाधिकारी शक्ति के प्रभाव को मापने का प्रयास किया। हम जानते हैं कि सीमांत लागत एवं सीमांत आगम का आपस में बराबर होना संतुलन स्थापित होने की शर्त है। जब पूर्ण प्रतियोगिता होती है तो औसत आगम (कीमत) भी सीमांत आगम के बराबर हो जाती है। कीमत में केवल उसी दशा में सीमांत आगम से अलग होने की प्रवृत्ति आती है जब पूर्ण प्रतियोगिता विद्यमान नहीं हो। इसलिए कीमत एवं सीमांत आगम के बीच का अंतर (P – MR) या (P – MC) यह दर्शाता है कि बाज़ार पर फर्म का नियंत्रण है। इसे कीमत के भाग के रूप में दर्शाया जाता है। इस प्रकार, एकाधिकार की डिग्री (P – MC)/P है। यह एकाधिकार स्तर जितना अधिक होगा किसी फर्म द्वारा अर्जित किए जाने वाले लाभ का स्तर उतना ही ऊँचा होगा।

13.6 फर्म के कीमत निर्णयन में साधन की कीमतों की भूमिका

किसी फर्म द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन के बारे में निर्णय लेने में अनेक तत्व भूमिका निभाते हैं। इनमें से उत्पादन की लागत, विपणन, उत्पाद विभेद तथा फर्म के उद्देश्य कतिपय बुनियादी तत्व हैं। ये तत्व फर्म की उत्पादन प्रक्रिया को सीधे-सीधे एक स्वरूप प्रदान करते हैं। फर्म को अपने उत्पादन की लागत निर्धारित करनी होती है जो उत्पत्ति के साधनों की उपलब्धता और उनकी लागत पर निर्भर रहती है। साथ ही अपने उत्पादन की माँग को बढ़ाने और इसे अन्य उत्पादों से बेहतर सिद्ध (कुछ-न-कुछ विभेद) करने का प्रयास पर भी फर्म कुछ लागत लगाती है। उत्पादन की मात्रा फर्म के उद्देश्यों पर निर्भर करती है। यदि लाभ को अधिकतम करना फर्म का उद्देश्य है तो उत्पादन की उतनी ही मात्रा उत्पादित की जाएगी, जहाँ उत्पादन की लागत कीमत से कम है। इसी प्रकार, फर्म को अपनी विपणन युक्ति एवं इस पर किए जाने वाले व्यय को भी निर्धारित करने की आवश्यकता होती है। यहाँ माँग, प्रतियोगिता, आपूर्तिकर्ता एवं आर्थिक दशाएँ आदि कारकों पर ध्यान देना आवश्यक रहता है।

साधन की कीमत में परिवर्तन फर्म के कीमत निर्णयन को किस प्रकार प्रभावित करते हैं? मान लीजिए, कि सरकारी विनियमन के कारण, निर्माण कार्यों में कार्यरत श्रमिकों की मज़दूरी दरों में वृद्धि हो जाती है। चूँकि मज़दूरी किसी भी उद्योग में उत्पादन की लागत का एक महत्त्वपूर्ण भाग है, न्यूनतम मज़दूरी दरों में वृद्धि से भवन संपदा फर्म की उत्पादन लागत में वृद्धि हो जाएगी। इस मामले में फर्म के पास केवल दो विकल्प हैं : या तो फर्म उतनी ही संख्या में श्रमिकों को काम पर लगाते हुए उत्पादन करती रहे तथा उत्पादन की लागत में हुई वृद्धि को स्वयं वहन करें या श्रम की कुछ मात्रा को पूँजी से प्रतिस्थापित कर दें। उदाहरणार्थ, सीमेंट को उठाने के लिए 10 श्रमिकों की सेवाएँ लेने की बजाय फर्म मात्र दो श्रमिकों द्वारा धकेलने वाली ट्रॉली लेकर सीमेंट की ढुलाई करवा सकती है। इस प्रकार, उत्पत्ति के साधनों की कीमतें कीमत निर्णयन और उत्पादन निर्णयन को प्रभावित कर सकती है।

बोध प्रश्न 2

1) सीमांत उत्पादकता सिद्धांत क्या है? यह उत्पत्ति के साधनों की कीमत निर्धारण प्रक्रिया की व्याख्या किस प्रकार करता है?

.....

.....

.....

2) उत्पत्ति के साधनों के पारितोषिक के रूप में ब्याज़ एवं लाभ के बीच भेद कीजिए।

.....

.....

.....

3) उधार देय योग्य कोष सिद्धांत को 50 शब्दों में समझाइए।

.....

.....

.....

4) उद्यमी के प्रमुख कार्य क्या हैं?

.....

.....

.....

13.7 सार-संक्षेप

इस इकाई में किसी अर्थव्यवस्था में उत्पत्ति के साधनों का अर्थ एवं आवश्यकता की विवेचना करते हुए साधन बाज़ारों की अवधारणा पर प्रकाश डाला गया है। भूमि, श्रम, पूँजी एवं उद्यमी अर्थव्यवस्था में उत्पत्ति के चार साधन हैं। वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन में इन्हीं चार साधनों की आवश्यकता होती है। चूँकि उत्पत्ति के साधनों की माँग उनके द्वारा उत्पादित की जाने वाली वस्तुओं एवं सेवाओं की माँग से जुड़ी हुई है, इसलिए, इसे व्युत्पन्न माँग कहा जाता है। इतना ही नहीं, वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पान में एक से अधिक साधन को प्रयुक्त किया जाता है। इसलिए उनकी माँग अंतर-संबद्ध तथा एक-दूसरे पर निर्भर है। उत्पाद एवं साधन बाज़ारों के बीच यह पारस्परिक निर्भरता वस्तुओं एवं सेवाओं की माँग एवं आपूर्ति के बीच की अंतःक्रिया के रूप में परिलक्षित होती है। उत्पत्ति के प्रत्येक साधन को उत्पादन प्रक्रिया में उसके योगदान के लिए पारितोषक दिया जाता है। भूमि को प्राप्त होने वाले प्रतिफल को लगान कहा जाता है। अल्पकाल एवं दीर्घकाल में स्थिर आपूर्ति वाले साधन भूमि के उपयोग के लिए उसकी कीमत दी जाती है। श्रम को भुगतान किया जाने वाला पारितोषक मज़दूरी है। लगान एवं मज़दूरी दोनों ही माँग एवं आपूर्ति की अंतःक्रिया से निर्धारित होते हैं। ब्याज, पूँजी को प्राप्त होने वाला प्रतिफल है। कतिपय सिद्धांत ब्याज की दरों को निर्धारित करते हैं। उधार देय कोष सिद्धांत, तरलता वरीयता सिद्धांत, काल वरीयता सिद्धांत उपागम आदि ब्याज निर्धारण के सिद्धांत है। उत्पादन प्रक्रिया को संचालित करने के लिए उत्पत्ति के साधनों को संयोजित करके संगठन एवं प्रबंधकीय कुशलता के लिए उद्यमी को प्राप्त होने वाले प्रतिफल लाभ हैं। लाभ के निर्धारण हेतु भी कई सिद्धांत प्रतिपादित किए गए हैं।

13.8 संदर्भ ग्रंथादि

1) Joseph E. Stiglitz and Carl E. Walsh, *Economics*, 4th Edition, W.W. Norton and Company, Inc. London. 2010

2) Lipsey. R.G., *An Introduction to Positive Economics*. (6th edition), E.L.B.S and Weidenfeld and Nicolson: London.

3) Varian, Hal (1999), *Intermediate Microeconomics*, W.W Norton &Co, New York, Chapter 26, page no. 456-466.

13.9 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) भाग 13.1 एवं 13.2 पढ़ें और उत्तर लिखें।

2) भाग 13.3 पढ़ें और उत्तर लिखें।

3) भाग 13.3 पढ़ें और उत्तर लिखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 13.4 एवं 13.5 पढ़ें और उत्तर लिखें।

2) भाग 13.5 पढ़ें और उत्तर लिखें।

3) भाग 13.5 (ब्याज़) पढ़ें और उत्तर लिखें।

4) भाग 13.5 (लाभ) पढ़ें और उत्तर लिखें।

इकाई 14 श्रम बाज़ार

संरचना

14.0 उद्देश्य

14.1 विषय प्रवेश

14.2 श्रम बाज़ारों का अर्थ

14.3 श्रम बाज़ार : विभिन्न प्रकार के बाज़ारों की संरचनाएँ

14.3.1 वस्तु बाज़ार में पूर्ण प्रतियोगिता

14.3.2 वस्तु बाज़ार में अपूर्ण प्रतियोगिता

14.4 श्रम बाज़ार विषयक नीतियाँ

14.4.1 न्यूनतम मज़दूरी कानून

14.4.2 श्रम संघों की भूमिका

14.5 मज़दूरी दरों में भिन्नता क्यों?

14.6 सार-संक्षेप

14.7 संदर्भ ग्रंथादि

14.8 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

14.0 उद्देश्य

इकाई 13 में आपने साधन बाज़ारों की प्रारंभिक जानकारी प्राप्त की। हम वर्तमान इकाई में श्रम बाज़ार में कीमत तंत्र के अभिलक्षणों की विस्तार में चर्चा करेंगे क्योंकि श्रम उत्पत्ति के अन्य साधनों की तुलना में महत्त्वपूर्ण रूप में भिन्नतापूर्ण है। श्रम की आपूर्ति परिवारों द्वारा की जाती है और इसकी सेवाओं के बदले उन्हें मज़दूरी का भुगतान किया जाता है। श्रम को श्रमिक से पृथक नहीं किया जा सकता और यही अभिलक्षण श्रम बाज़ार को भूमि एवं पूँजी बाज़ार से पृथक् करता है। इस इकाई के अध्ययनोपरांत, आप सक्षम होंगे :

- श्रम बाज़ारों का अर्थ व्यक्त कर पाने में;
- पूर्ण प्रतियोगी श्रम .ार में माँग एवं आपूर्ति की प्रक्रियाओं की व्याख्या कर पाने में;
- अपूर्ण प्रतियोगी श्रम बाज़ार में माँग एवं आपूर्ति की प्रक्रियाओं की व्याख्या कर पाने में;
- श्रम बाज़ार विषयक नीतियों की विवेचना कर पाने में; और
- मज़दूरी दरों में भिन्नताओं के कारणों को समझ पाने में।

14.1 विषय प्रवेश

कार्य करने के बारे में लोगों द्वारा लिए गए निर्णय अर्थव्यवस्था में श्रम की आपूर्ति का निर्धारण करते हैं। बचतों के बारे में उनके निर्णयों अर्थव्यवस्था में पूँजी बाज़ार में निधियों की आपूर्ति निर्धारित होती है। श्रम की आपूर्ति के स्वरूप को समझने के लिए अर्थशास्त्रियों द्वारा पसंद या वरीयता के बुनियादी प्रतिमान को प्रयुक्त किया गया है। काम करने का चुनाव उपभोग एवं आराम के बीच का चुनाव है। प्रौद्योगिकी एवं अन्य

आगतों के स्थिर होने की स्थिति में उत्पादन की मात्रा एवं श्रम आगत के परिमाण के बीच प्रत्यक्ष संबंध है। परिवर्तनशील अनुपातों का नियम बताता है कि एक सीमा के बाद श्रम की प्रत्येक अतिरिक्त इकाई को लगाने से कुल उत्पाद में घटती हुई दर से वृद्धि होती है। अर्थात् श्रम को ह्रासमान प्रतिफल प्राप्त होता है। यह इकाई पूर्ण प्रतियोगी एवं अपूर्ण प्रतियोगी, दोनों ही प्रकार के श्रम बाज़ारों में माँग-आपूर्ति विश्लेषण को समझते हुए श्रम बाज़ार के अर्थ का विश्लेषण करने पर लक्षित है।

अर्थव्यवस्था में सरकारी हस्तक्षेप, श्रम बाज़ार विषयक नीतियाँ, श्रमिकों के अधिकार एवं श्रम सन्नियम भी होते हैं। इस इकाई में, न्यूनतम मज़दूरी कानून एवं श्रम संघों की मौजूदगी के निहितार्थों पर भी प्रकाश डाला गया है। इसी इकाई के आखिरी भाग में विभिन्न पेशों में मज़दूरियों में भिन्नताओं के कारणों का भी उल्लेख है। श्रम बाज़ारों का गहन अध्ययन यह समझने में सहायता करेगा कि श्रम किस प्रकार अर्थव्यवस्था में एक संसाधन के रूप में कार्य करता है।

14.2 श्रम बाज़ारों का अर्थ

श्रम बाज़ारों का अर्थ समझने के लिए, यह समझना जरूरी है कि श्रम बाज़ार में श्रम की माँग करने वाले तथा आपूर्ति करने वाले कौन हैं। फर्में एवं अन्य सेवायोजक वस्तुएँ एवं सेवाओं का उत्पादन करने के लिए श्रम की माँग करते हैं। परिवार श्रम की आपूर्ति करते हैं और इसके बदले मज़दूरी पाते हैं। श्रम बाज़ार का अध्ययन व्यष्टि अर्थशास्त्रियों एवं समष्टि अर्थशास्त्रियों दोनों ही द्वारा मांग एवं आपूर्ति जैसी संकल्पनाओं के माध्यम से किया जाता है। श्रम बाज़ार एक ऐसा बाज़ार है जहाँ श्रमिक श्रम की आपूर्ति करते हैं तथा सेवायोजकों द्वारा श्रम की माँग की जाती है। यह अर्थव्यवस्था का एक बड़ा संघटक है तथा पूँजी, वस्तुओं और सेवाओं के बाज़ारों से जुड़ा हुआ है। समष्टि आर्थिक स्तर पर माँग एवं पूर्ति घरेलू तथा अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों की गत्यात्मकता एवं प्रवासिता, जनसंख्या की आयु संरचना, शैक्षणिक स्तर द्वारा प्रभावित होती है। श्रम बाज़ार में प्रयुक्त किए जाने वाले माप हैं– बेरोज़गारी दर, श्रम उत्पादकता, श्रम सघनता, श्रम सहभागिता दर, सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत रूप में कुल मज़दूरी आय। मज़दूरी से आशय श्रम की कीमत से है जो परिवारों को आय प्रदान करती है तथा फर्म के लिए लागत होती है। एक प्राक्कल्पित मुक्त बाज़ार अर्थव्यवस्था में मज़दूरी की दरों को माँग एवं आपूर्ति की अविनियमित अंतःक्रिया द्वारा निर्धारित किया जाता है। फिर भी, वास्तविक जगत की मिश्रित अर्थव्यवस्थाओं में, सरकारें एवं श्रम संघ मज़दूरी के स्तरों को प्रभावित कर सकते हैं।

व्यष्टि आर्थिक स्तर पर व्यक्तिगत फर्में कर्मचारियों के साथ अंतःक्रिया करती हैं, उन्हें काम पर रखती हैं, काम से हटाती हैं, मज़दूरी की दरों एवं श्रम के घंटों में वृद्धि करती हैं, और कटौती करती हैं। माँग एवं आपूर्ति के बीच की अंतःक्रिया काम के घंटों एवं मज़दूरी के रूप में प्राप्त होने वाले पारितोषिक, वेतन एवं अन्य लाभों को प्रभावित करती है।

14.3 श्रम बाज़ार : विभिन्न प्रकार के बाज़ारों की संरचनाएँ

चूँकि श्रम की माँग वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने के लिए की जाती है, इसलिए इसकी माँग वस्तुओं एवं सेवाओं के बाज़ारों की संरचना पर भी निर्भर करती है। इसका अध्ययन दो शीर्षकों में किया जाएगा।

- पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार एवं अपूर्ण प्रतियोगिता वाला बाज़ार
- श्रम बाज़ार

14.3.1 वस्तु बाज़ार में पूर्ण प्रतियोगिता

श्रम की माँग

हम अपना अध्ययन किसी दी हुई मज़दूरी दर किसी सेवायोजक द्वारा श्रमिकों की संख्या को काम पर रखे जाने के विश्लेषण के साथ करते हैं। श्रम की माँग श्रम की उत्पादकता तथा श्रमिक के उत्पादन के लिए बाज़ार द्वारा निर्धारित कीमत, दोनों पर ही निर्भर करती है। कर्मचारी जितने अधिक उत्पादक होते हैं, उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं का मूल्य भी अधिक होता है और दी हुई मज़दूरी दर पर सेवायोजक ऐसे कर्मचारियों की अधिक संख्या को काम पर लगाना चाहता है। तालिका 14.1 में, एक कंप्यूटर हार्डवेयर कंपनी में उत्पादन की मात्रा तथा लगाए गए कर्मचारियों की संख्या के बीच संबंध को दर्शाया गया है। कॉलम 1 में कर्मचारियों की संभावित संख्या है जिसे सेवायोजक द्वारा लगाया जा सकता है। कॉलम 2 में लगाए गए कर्मचारियों द्वारा उत्पादित वस्तु की मात्रा तथा कॉलम 3 में श्रम का सीमांत उत्पाद (एक अतिरिक्त कामगार को लगाने से कुल उत्पादन में हुई वृद्धि) को प्रदर्शित किया गया है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है किसी वस्तु के उत्पादन पर अधिकाधिक कामगारों को लगाने पर एक सीमा के बाद कुल उत्पादन में घटती हुई दर से वृद्धि होती है। अर्थात् श्रम को ह्रासमान प्रतिफल प्राप्त होता है। श्रम का ह्रासमान प्रतिफल नियम बताता है कि यदि पूँजी तथा अन्य आगतों की मात्राएँ स्थिर रखी जाएं तो रोज़गार पर लगाए गए अधिक श्रमिकों से उनके द्वारा उत्पादन में किया गया सीमांत योगदान कम होता जाएगा। यह कॉलम 3 में दर्शाए गए श्रम के सीमांत उत्पाद से स्पष्ट है। कॉलम 4 में श्रम के सीमांत आगम को दर्शाया गया है जो एक अतिरिक्त श्रम को काम पर लगाए जाने से कुल आगम में हुई वृद्धि को दर्शा रहा है। सीमांत आगम श्रमिक के सीमांत उत्पाद में वस्तु को कीमत से गुणा करने पर प्राप्त गुणनफल है। यहां वस्तु की कीमत रु. 20000 प्रति इकाई है। बाज़ार में कंप्यूटर हार्डवेयर में मज़दूरी की दर रु. 20000/– है।

तालिका 14.1 : उत्पादन एवं कामगारों की संख्या के बीच संबंध

कामगारों की संख्या	प्रति वर्ष उत्पादित कंप्यूटरों की संख्या	सीमांत उत्पाद	सीमांत उत्पाद का मूल्य (रु.)/ सीमांत आगम उत्पाद (MRP)
(1)	(2)	(3)	(4)
0	0	–	–
1	15	15	15 × 20,000 = 3,00,000
2	28	13	13 × 20,000 = 2,60,000
3	39	11	11 × 20,000 = 2,20,000
4	47	8	8 × 20,000 = 1,60,000
5	52	5	5 × 20,000 = 1,00,000
6	55	3	3 × 20,000 = 60,000
7	57	2	2 × 20,000 = 40,000
8	57	0	0 × 20,000 = 00

फर्म कामगारों की संख्या में उसी सीमा तक वृद्धि करेगी जहाँ उनको लगाने से कुल आगम में हुई वृद्धि उसे भुगतान की गयी मज़दूरी से अधिक हो। उपर्युक्त उदाहरण में दूसरे कामगार का सीमांत उत्पाद 13 कंप्यूटर प्रति वर्ष है। जिनका मूल्य रु. 2,60,000/– है लेकिन रु. 20,000/– प्रति माह की मज़दूरी पर कामगार को पूरे वर्ष में रु. 2,40,000/– ही प्राप्त हो पाता है। अर्थात् इस कामगार को लगाने से कंपनी को प्रति वर्ष रु. 20,000/– का अतिरेक प्राप्त होता है। लेकिन फर्म तीसरे कामगार को

काम पर नहीं लगाएगी, क्योंकि, इससे कुल आगम रु. 2,20,000/– ही है जबकि भुगतान की गयी मज़दूरी रु. 2,40,000/– है। अर्थात् कंपनी को रु. 20,000/– की हानि हो रही है।

माना कि मज़दूरी दर गिरकर रु. 15,000 प्रति माह हो जाती है। इससे कंपनी के रोज़गार निर्णयन में परिवर्तन आएगा। प्रत्येक कामगार को प्रति वर्ष रु. 1,80,000/– ही प्राप्त होगा। तालिका 14.1 के कॉलम 4 से ज्ञात हो रहा है कि तीसरे कामगार के सीमांत उत्पाद का मूल्य रु. 2,20,000 है यह कामगार को प्राप्त मज़दूरी से रु. 40,000/– अधिक है। इस स्थिति में कंपनी सुनिश्चित तौर पर उसे काम पर रखना चाहेगी क्योंकि उसे काम पर रखने से अधिशेष प्राप्त हो रहा है। लेकिन चौथे कामगार को कंपनी काम पर नहीं रखना चाहेगी क्योंकि उसे मज़दूरी के रूप में रु. 1,80,000/– वार्षिक का भुगतान करना होगा जबकि उसके सीमांत उत्पाद का मूल्य रु. 1,60,000/– ही होगा।

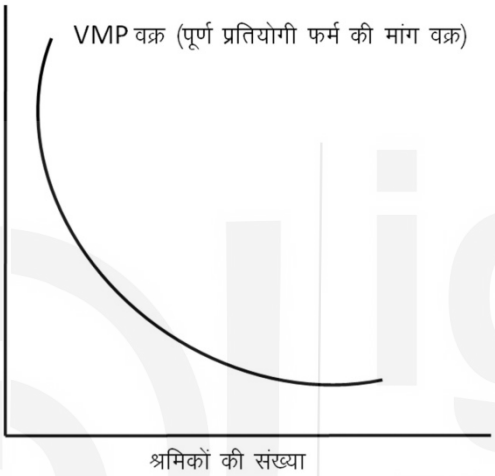

चित्र 14.1 : क्रय का माँग वक्र

श्रम की माँग को प्रभावित करने वाले कारक

किसी दी हुई वास्तविक मज़दूरी दर पर किसी कंपनी द्वारा रखे जा सकने वाले कामगारों की संख्या कामगारों के सीमांत उत्पाद के मूल्य पर निर्भर करती है। अर्थव्यवस्था में परिवर्तन आने से कामगारों के सीमांत उत्पाद के मूल्य में वृद्धि हो जाने से कंपनी द्वारा काम पर लगाए जा सकने वाले कामगारों की संख्या में वृद्धि हो जाएगी और इस प्रकार दी हुई वास्तविक मज़दूरी दर पर श्रम की मांग को प्रभावित करेगी। इसका अर्थ यह हुआ कि ऐसा कोई भी कारक जो कंपनी द्वारा लगाए गए कामगारों के सीमांत उत्पाद के मूल्य को बढ़ा सकने में सक्रिय भूमिका निभाता हो, श्रम के माँग वक्र को दायीं ओर विवर्तित कर देगा। संक्षेप में श्रम की माँग को प्रभावित करने वाले दो ही कारक महत्त्वपूर्ण हैं :

क) कंपनी के उत्पाद की कीमत में वृद्धि

ख) कंपनी के कामगारों की श्रम उत्पादकता में वृद्धि

तालिका 14.2 से इसे आसानी से समझाया जा सकता है। माना कि कंपनी के उत्पाद की कीमत में रु. 20,000 प्रति इकाई से बढ़कर रु. 30,000 प्रति इकाई हो जाती है। इससे कीमत में वृद्धि के अनुरूप श्रम के सीमांत उत्पाद मूल्य में भी वृद्धि हो जाएगी। परिणामतः कंपनी द्वारा काम पर लगाए जा सकने वाले कामगारों की संख्या में भी वृद्धि होगी।

तालिका 14.2 : सीमांत उत्पाद का मूल्य तथा श्रमिकों को काम पर लगाए जाने वाले कामगारों के बारे में फर्म का निर्णय

कामगारों की संख्या	एक वर्ष में उत्पादित कंप्यूटरों की संख्या	श्रम का सीमांत उत्पाद	सीमांत उत्पाद का मूल्य (रु.)
0	0	—	—
1	15	15	450000
2	28	13	390000
3	39	11	330000
4	47	8	240000
5	52	5	150000
6	55	3	90000
7	57	2	60000
8	57	0	0

यदि बाज़ार मज़दूरी दर रु. 20,000 प्रति माह ही रहती है तो चौथे कामगार को भी काम पर लगाया जा सकेगा, क्योंकि उसे प्राप्त वार्षिक मज़दूरी रु. 2,40,000 होगी जो उसके सीमांत उत्पाद के मूल्य के बराबर है। लेकिन मज़दूरी की इस दर पर पाँचवें कामगार को काम पर लगाना कंपनी के लिए हितकर नहीं होगा क्योंकि उसे काम पर लगाने से कंपनी को रु. 1,50,000/– के समतुल्य आगम प्राप्त हो सकेगा जबकि उसे मज़दूरी के रूप में रु. 2,40,000 का भुगतान करना पड़ेगा।

तालिका 14.3 : श्रम उत्पादकता में सुधार तथा श्रम की माँग

कामगारों की संख्या	एक वर्ष में उत्पादित कंप्यूटरों की संख्या	सीमांत उत्पाद	सीमांत उत्पाद का मूल्य (रु.)
0	0	—	—
1	25	25	5,00,000
2	48	23	4,60,000
3	68	20	4,00,000
4	84	16	3,20,000
5	96	12	2,40,000
6	105	9	1,80,000
7	112	7	1,40,000
8	115	3	60,000

अगली संभावना यह हो सकती है कि श्रम की सीमांत उत्पादकता में वृद्धि हो जाय। इस स्थिति को तालिका 14.3 में दर्शाया गया है। मज़दूरी दर पूर्व की भाँति रु. 20,000 ही है तथा कंप्यूटर की बाज़ार कीमत रु. 20,000/– प्रति कंप्यूटर है। तालिका 14.3 से ज्ञात हो रहा है कि अब कामगार पहले की तुलना में अधिक कंप्यूटरों का उत्पादन करने में सक्षम हैं। अब पाँचवें कामगार द्वारा उत्पाद कंप्यूटरों का मूल्य रु. 2,40,000 है। जो उसे भुगतान की गयी मज़दूरी के बराबर है। इसलिए कंपनी पाँचवें कंप्यूटर को भी काम पर रख सकेगी।

तालिका 14.1 से 14.3 से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं :

i) मज़दूरी दरों में कमी होने पर रोज़गार में वृद्धि होती है;

ii) यदि उत्पाद की कीमत में वृद्धि होती है तो रोज़गार में वृद्धि होती है; तथा

iii) यदि श्रम की सीमांत उत्पादकता में वृद्धि होती है तो रोज़गार में वृद्धि होती है क्योंकि इससे उत्पाद की दी हुई बाज़ार कीमत पर भी श्रम के सीमांत उत्पादकता मूल्य में वृद्धि हो जाती है।

श्रम की आपूर्ति

अर्थशास्त्रियों ने श्रम की आपूर्ति को समझने के लिए चुनाव के बुनियादी प्रतिमान का प्रयोग किया है। कितने श्रमिक काम करने के लिए तैयार होंगे यह उनके द्वारा उपयोग एवं आराम करने के बीच चुनाव करने पर निर्भर करता है। आराम करने का अर्थ है कि श्रमिक को काम (रोज़गार) मिलने पर भी काम न करना। जब कोई श्रमिक आराम का परित्याग करके काम करता है तो उसे अतिरिक्त आय प्राप्त होती है। इससे वह अपने उपभोग स्तर को बढ़ा सकता है। दूसरी ओर, अपने उपभोग में कमी लाकर श्रमिक कम काम करके, अधिक समय तक आराम कर सकता है।

श्रम की आपूर्ति कामगारों एवं संभाव्य कामगारों द्वारा होती है। मज़दूरी की दी हुई दर पर श्रम के संभाव्य आपूर्तिकर्ताओं को यह तय करना पड़ता है कि उन्हें कोई काम करना चाहिए या नहीं। मज़दूरी के विभिन्न दरों पर काम करने के लिए तैयार कुल कामगारों की संख्या श्रम की आपूर्ति है। न्यूनतम भुगतान या आरक्षित कीमत जो श्रम के एक समुच्चय को प्राप्त होती, क्षतिपूर्ति का वह स्तर है जिस पर किसी तटस्थ कामगार को काम करने या न करने के बीच निर्णय करना होता है। आर्थिक रूप में, मज़दूरी की दी हुई दर पर काम करने का निर्णय लगात–लाभ सिद्धांत पर निर्भर करता है। श्रम की आपूर्ति करने के लिए इच्छा उसी समय अधिक होती है जब मज़दूरी की दर ऊँची होती है। इससे श्रम के आपूर्ति वक्र का ढाल ऊपर की ओर उठता हुआ होता है। लेकिन मज़दूरी की दर में लगातार वृद्धि होने पर एक बिंदु के बाद श्रम का पूर्ति वक्र ऊपर की ओर चढ़ने की बजाय पीछे की ओर मुड़ जाता है।

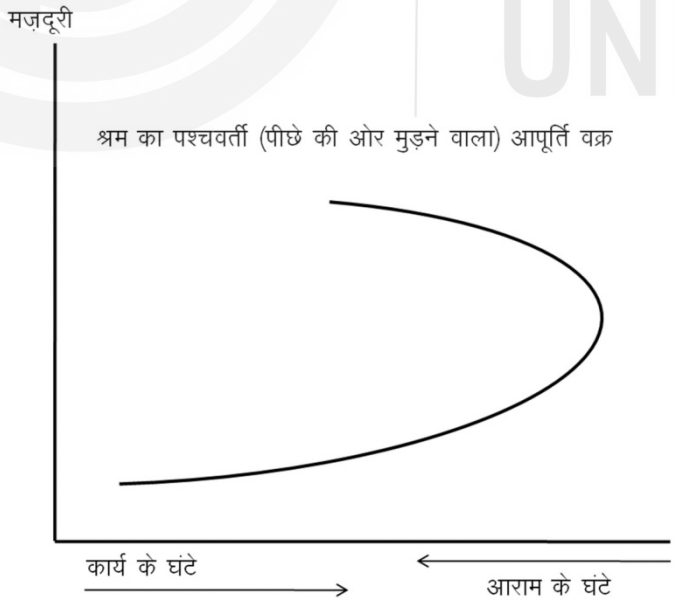

चित्र 14.2 : श्रम का पूर्ति वक्र

श्रम के आपूर्ति वक्र का मज़दूरी की ऊँची दर पर पीछे की ओर मुड़ जाना यह दर्शाता है कि श्रमिक अब और अधिक घण्टों तक काम करने की बजाय आराम करना अधिक पसंद करता है। लंबी अवधि (अधिक घंटों) तक काम करने का अर्थ है श्रमिकों को

आराम करने के लिए कम समय मिलना। मज़दूरी की दरों में जैसे-जैसे वृद्धि होती है, व्यक्तिगत स्तर पर, श्रमिकों की आय में वृद्धि होती है। इससे श्रमिकों की रुचि अधिक आरामदायक गतिविधियों कि लिए बढ़ जाती है। इसलिए मज़दूरी दर में एक सीमा के बाद वृद्धि होने पर श्रम की आपूर्ति घटने लगती है, क्योंकि श्रमिक अपनी बढ़ी हुई आय को अधिक आरामदायक गतिविधियों पर प्रयुक्त करने लगते हैं।

श्रम की आपूर्ति को प्रभावित करने वाले कारक

वास्तविक मज़दूरी दर पर काम करने के लिए तैयार श्रमिकों की संख्या को प्रभावित कर सकने वाले किसी भी कारक से श्रम का पूर्ति वक्र दायीं ओर विवर्तित हो जाएगा। वृहत् आर्थिक स्तर पर, श्रम की आपूर्ति को प्रभावित करने वाला सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारक काम करने लायक आयुवर्ग वाली जनसंख्या का आकार है जो घरेलू जन्मदर, प्रवास एवं अप्रवास दरों तथा श्रम बल में शामिल होने एवं सेवानिवृत्त होने की आयु पर निर्भर करता है।

बोध प्रश्न 1

1) श्रम बाज़ार के तत्व कौन-से हैं? श्रम की माँग किस प्रकार व्युत्पन्न माँग है?

.....

.....

.....

2) एक पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार में श्रम की माँग की व्युत्पत्ति समझाइए। इस व्युत्पत्ति में सीमांत उत्पाद का मूल्य एवं सीमांत आगम उत्पाद वक्र किस प्रकार उपादेय हैं?

.....

.....

.....

3) पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार में श्रम के आपूर्ति वक्र का ढाल किस प्रकार का होता है? इसके ढाल पर विचार व्यक्त कीजिए।

.....

.....

.....

14.3.2 वस्तु बाज़ार में अपूर्ण प्रतियोगिता

श्रम की माँग

इस प्रकार के बाज़ार में कोई फर्म अपने उत्पाद की अधिक मात्रा उसी दशा में बेच सकती है जबकि वह कीमत में कमी करे। ऐसी दशा में, अपूर्ण प्रतियोगिता वाली फर्म का माँग वक्र नीचे की ओर गिरता हुआ होगा। एक अतिरिक्त श्रमिक को काम पर लगाने से उत्पादन में वृद्धि तो होगी लेकिन उसके फलस्वरूप सारा उत्पादन कुछ कम कीमत पर बेचना होगा। इस दशा में, फर्म एक ओर श्रमिक को काम पर लगाने से उत्पादन की मात्रा में हुई वृद्धि से आगम में हुई वृद्धि की तुलना अतिरिक्त श्रमिक की मज़दूरी से लागत में हुई वृद्धि से करेगी।

एकाधिकारिक प्रतियोगिता (अपूर्ण प्रतियोगिता) के अंतर्गत कार्य कर रही एक फर्म की माँग को तालिका 14.4 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 14.4 : एकाधिकारिक प्रतियोगी फर्म द्वारा उत्पादित वस्तु की माँग तालिका

कीमत	माँगी गयी मात्रा	कुल आगम	सीमांत आगम
10	1	10	10
9	2	18	8
8	3	24	6
7	4	28	4
6	5	30	2
5	6	30	0
4	7	28	−2
3	8	24	−4
2	9	18	−6

चूँकि MR, AR (= कीमत) की तुलना में अधिक तेज़ी से गिर रहा है। इसलिए, MRP = MR × MP भी VMP =कीमत × MP की तुलना में अधिक तेज़ी से गिरेगा।

इस प्रकार हमें दो वक्र प्राप्त होते हैं– VMP (सीमांत उत्पाद का मूल्य) तथा MRP (सीमांत आगम उत्पाद), इसे चित्र 14.3 में प्रदर्शित किया गया है।

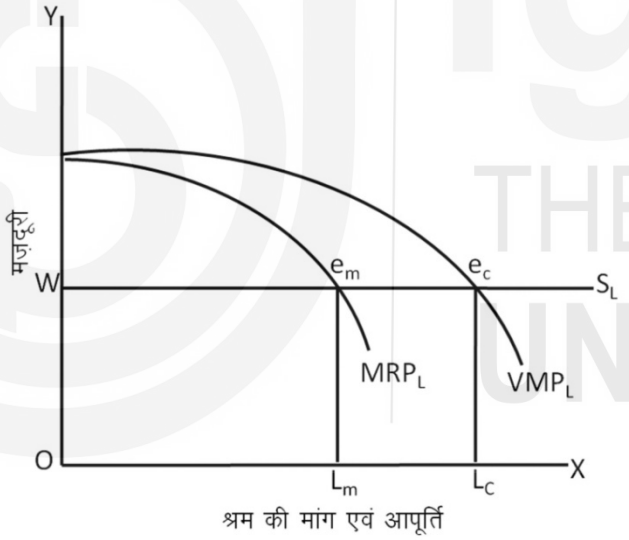

चित्र 14.3

श्रम बाज़ार की पूर्ण प्रतिस्पर्धी दशाओं के अंतर्गत दी हुई मज़दूरी दर पर कोई फर्म मनचाही संख्या में श्रमिकों को काम पर लगा सकती है, अर्थात् श्रम का आपूर्ति वक्र फर्म के लिए एक क्षैतिजिक रेखा होगी। इसे WS_L रेखा द्वारा दर्शाया गया है। पूर्ण प्रतियोगी वस्तु बाज़ार में कार्य कर रही फर्म के लिए श्रम का मांग वक्र VMP_L है। किंतु वस्तु बाज़ार में पूर्ण प्रतियोगिता नहीं होने पर तो फर्म का श्रम के लिए मांग वक्र MRP_L हो जाएगा।

अब हम दोनों परिस्थितियों की तुलना कीजिए। दोनों फर्मों द्वारा भुगतान की गयी मज़दूरी दरें एकसमान हैं (OW)। लेकिन पूर्ण प्रतियोगी फर्म जहाँ, OL_C कामगारों को काम पर रखेगी, वहीं एकाधिकारिक प्रतियोगिता वाली फर्म OL_m तक ही कामगारों को काम पर रख पाएगी, जो पहली फर्म की तुलना में कम संख्या होगी। पूर्ण प्रतियोगिता वाली फर्म के समान ही प्लांट आकार एवं प्रयुक्त प्रौद्योगिकी के बावजूद एकाधिकारिक प्रतियोगिता वाली फर्म का उत्पादन कम होगा।

श्रम की आपूर्ति

किसी फर्म के एकाधिकारिक प्रतियोगिता वाली फर्म होने से श्रम की आपूर्ति प्रभावित नहीं होती। परिवारों के श्रम आपूर्ति वक्रों का योग श्रम की बाज़ार आपूर्ति है। एक फर्म द्वारा पूर्णतया लोचदार श्रम आपूर्ति वक्र का सामना किया जाता है, जबकि बाज़ार के लिए श्रम का आपूर्ति वक्र ऊपर की ओर उठता हुआ होता है?

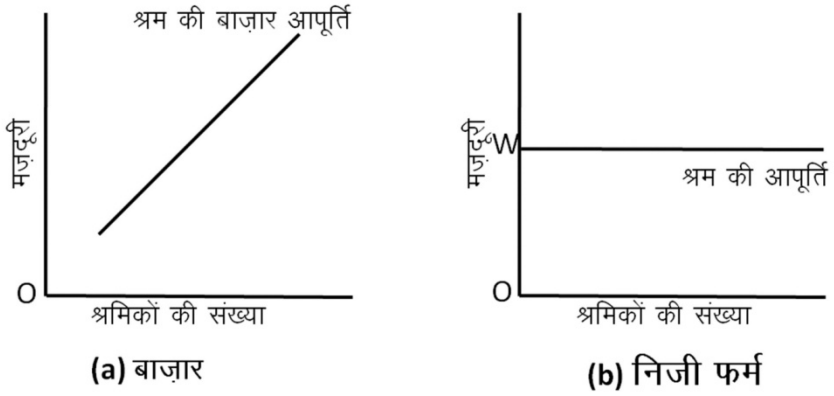

चित्र 14.4 : श्रम का आपूर्ति वक्र

संतुलन

साधन की बाज़ार कीमत, बाज़ार माँग वक्र एवं बाज़ार आपूर्ति वक्र के कटान बिंदु पर निर्धारित होती है। इस मामले में एक महत्त्वपूर्ण अंतर यह है कि साधन की बाज़ार माँग VMP पर निर्भर न होकर MRP पर निर्भर है। इसका अर्थ यह हुआ कि जब वस्तु बाज़ार में किसी फर्म को एकाधिकारी शक्ति प्राप्त है तो श्रमिक को उसके MRP के बराबर मज़दूरी भुगतान की जाती है जो VMP से कम होती है। इस तरह श्रमिकों को पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार की तुलना में अपूर्ण प्रतियोगिता में कम मज़दूरी प्राप्त होती है। ध्यान रहे कि पूर्ण प्रतियोगिता में MRP = VMP की स्थिति होती है जबकि एकाधिकारिक प्रतियोगिता में MRP < VMP की स्थिति पायी जाती है।

बोध प्रश्न 2

1) पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार एवं अपूर्ण प्रतियोगी बाज़ार में श्रम की माँग की तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

2) अपूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत श्रम का आपूर्ति वक्र बनाइए तथा उसे समझाइए।

.....

.....

.....

3) अपूर्ण प्रतियोगिता बाज़ार में संतुलन किस प्रकार निर्धारित होता है? यह किस प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार में संतुलन से भिन्न है?

.....

.....

.....

14.4 श्रम बाज़ार विषयक नीतियाँ

श्रम बाज़ार विभिन्न भागों में विभाजित होता है और ये कई प्रकार के होते हैं।

14.4.1 न्यूनतम मज़दूरी कानून

न्यनूतम मज़दूरी कानून के मुताबिक सेवायोजकों को अपने कामगारों को कानूनन तय न्यूनतम मज़दूरी का भुगतान अनिवार्यतः करना होता है। न्यूनतम मज़दूरी प्रावधान निम्न कौशल युक्त कामगारों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होते हैं। न्यूनतम मज़दूरी की व्यवस्था तथा इसके प्रभाव चित्र 14.5 से समझे जा सकते हैं।

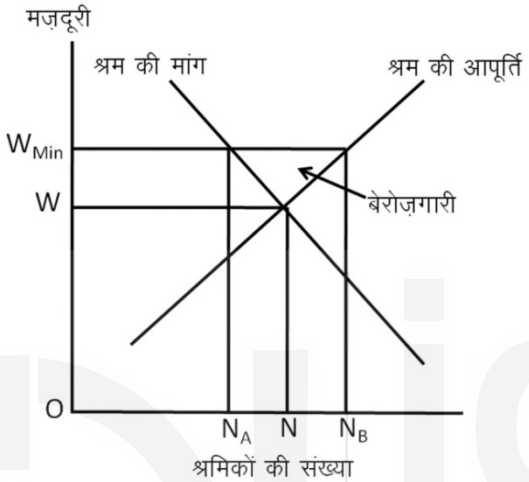

चित्र 14.5 : श्रम बाज़ार पर न्यूनतम मज़दूरी का कानूनों के निहितार्थ

चित्र 14.5 में W बाज़ार में प्रचलित मज़दूरी दर है जहाँ पर श्रम की माँग एवं आपूर्ति आपस में बराबर है तथा ON संख्या में अकुशल या कम कुशल श्रमिकों को रोज़गार मिला हुआ है। माना कि कानून द्वारा W_{min} न्यूनतम मज़दूरी निर्धारित कर दी जाती है। जो माँग और आपूर्ति की शक्तियों से निर्धारित मज़दूरी दर OW से अधिक है। मज़दूरी की इस दर पर N_B संख्या में श्रमिक काम करने के लिए तैयार हैं जबकि सेवायोजक केवल N_A संख्या में ही श्रमिकों को रोज़गार देने के लिए तैयार हैं। इससे श्रम बाज़ार में N_B N_A बेरोज़गारी उत्पन्न हो जाएगी।

14.4.2 श्रम संघों की भूमिका

श्रम संघ श्रमिकों के संघ हैं जो श्रमिकों की ओर से सेवायोजकों के साथ सौदेबाज़ी करते हैं। इनके प्रमुख मुद्दे मज़दूरी की दरें, श्रमिकों को काम पर रखने तथा काम से हटाने, विभिन्न प्रकार के कामगारों के कर्त्तव्य और दायित्व, काम के घण्टे तथा काम की दशाएँ, कामगारों एवं सेवायोजकों के बीच विवादों का निपटारा आदि होते हैं। श्रम संघों को हड़ताल की शक्ति के सहारे सेवायोजकों से सौदेबाजी की शक्ति प्राप्त होती है। हड़ताल श्रमिकों द्वारा सामूहिक रूप से काम बंद कर देने की स्थिति है। प्रायः हड़ताल तब तक चलती है जब तक श्रमिकों की माँग के अनुरूप कोई सर्वमान्य समझौता नहीं हो जाता। श्रम संघों द्वारा मज़दूरी की ऊँची दरों की माँग की अपनी लागतें एवं लाभ हैं। ऊँची मज़दूरी दर के प्रभाव लगभग वही होते हैं जो न्यूनतम मज़दूरी दर के होते हैं। पहले से कार्यरत श्रमिकों एवं श्रम संघों के सदस्यों को ऊँची मज़दूरी/वेतन का लाभ उन बेरोज़गार कामगारों की लागत पर होता है जो कृत्रिम रूप से निर्धारित ऊँची मज़दूरी दर के कारण रोज़गार पाने से वंचित रह जाते हैं। आलोचकों का दृष्टिकोण है कि यद्यपि काम और कामगारों के हितों की रक्षार्थ श्रमसंघों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है तथापि आज की व्यवस्था में श्रम संघों से युक्त फर्में उन फर्मों से प्रतियोगिता नहीं कर पाती जहाँ, श्रम संघ नही होते, क्योंकि श्रम संघों के दबाव से फर्मों को कृत्रिम रूप से श्रमिकों को ऊँची मज़दूरी देनी पड़ती है जिससे फर्मों की लागतों में वृद्धि हो जाती है।

14.5 मज़दूरी दरों में भिन्नता क्यों?

श्रम अर्थशास्त्र में यह प्रश्न प्रायः किया जाता है कि विभिन्न प्रकार के कामगारों द्वारा अर्जित की जाने वाली मज़दूरी की दरें अलग-अलग क्यों होती है? चिकित्सा सहायकों की तुलना में डॉक्टरों की मज़दूरी अधिक क्यों होती है? अग्निशामकों की मज़दूरी दरों की तुलना में बीमाकारों की मज़दूरी दरें ऊँची क्यों होती हैं? क्या यह कौशल या कामगार की पृष्ठभूमि या उसकी आयु है जो विभिन्न प्रकार के कामगारों की मज़दूरी दरों में भिन्न लाता है। विभिन्न प्रकार के कार्यों की प्रकृति में अंतर की अनेक संभावनाएँ हैं। हो सकता है कि वर्तमान में लिपिक के रूप में कार्य करने वाला कोई व्यक्ति वेतन में भिन्नताएँ होने के बावजूद इंजीनियर बनने के बजाय लिपिक के रूप में ही कार्य करने को प्राथमिकता देता हो क्योंकि वह इंजीनियर बनना ही नहीं चाहता। यहाँ तक कि इंजीनियर बनने की लागत भी अधिक हो सकती है। इंजीनियर बनने की ऊँची लागत की तुलना में उन्हें प्राप्त मज़दूरी की दरें उस अनुपात में ऊँची न हों जिस अनुपात में एक लिपिक बनने के प्रशिक्षण की लागत के सापेक्ष उनकी मज़दूरी दरें हैं। यह भी हो सकता है कि लिपिक बनने के लिए प्रशिक्षण की कोई लागत न हो लेकिन इंजीनियर बनने के लिए अनिवार्य विषयों– विज्ञान एवं गणित के प्रति अभिरुचि न होने के कारण लिपिक बनने को प्राथमिकता देने वाला व्यक्ति इंजीनियर बनना पसंद न करे। इस प्रकार, प्रशिक्षण की लागतें तथा किसी पद विशेष के लिए कामगार की दक्षता एवं प्राथमिकता व्यक्तियों एवं रोज़गारों में संतुलन मज़दूरी दरों में अंतर ला सकते हैं। इन्हीं कारणों से मज़दूरी दरों की भिन्नताओं में समापन की कोई प्रवृत्ति नहीं पायी जाती। मज़दूरी दरों में भिन्नताओं को प्रभावित करने वाले कारकों की विवेचना इस प्रकार हो सकती है :

1) **मज़दूरी भिन्नताओं की क्षतिपूर्ति** : कभी-कभी कुछ लोग एक भिन्न प्रकार के कार्य की सभी वांछित योग्यताएँ होते हुए भी किसी कार्य विशेष पर टिके रहने को प्राथमिकता देते हैं। उदाहरणार्थ, किसी विश्वविद्यालय में एक अनुभवी शोधकर्ता को किसी अन्य देश में बेहतर वेतन पैकेज के साथ किसी पद पर कार्य करने की पेशकश मिल सकती है लेकिन वह कम समय मिल पाने और स्वतंत्र रूप से शोध कार्य न कर पाने की सुविधा न मिल पाने के कारण ऐसी पेशकश को ठुकरा सकता है।

   जब कार्मिक किसी कार्य को किसी अन्य कार्य की तुलना में मूल रूप से अधिक आकर्षक मानते हैं, तो माँग और आपूर्ति में अंतर मज़दूरी की दरों में भिन्नताएँ होने के कारण बनता है। इन अंतरों को ''क्षतिपूर्ति मज़दूरी भिन्नताएँ'' (compensating wages differentials) कहा जाता है, ताकि कम आकर्षक रोज़गारों को अधिक मज़दूरी देने पर वे अन्य आकर्षक रोज़गारों में प्राप्त लाभों की बराबरी कर सकें। उदाहरणार्थ, किसी व्यक्ति की योग्यताएँ उसे शिक्षक बनने या किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी में एक परामर्शदाता बनने के समान है। दोनों ही रोज़गारों में मज़दूरी की दरें एकसमान होने पर भी वह व्यक्ति एक अध्यापक बनना पसंद कर सकता है क्योंकि शिक्षक के लिए काम के घण्टे बहुराष्ट्रीय कंपनी में परामर्शदाता के लिए काम के घण्टों से कम है। इसलिए शिक्षक के पद को छोड़कर कोई व्यक्ति बहुराष्ट्रीय कंपनी में परामर्शदाता के पद पर उसी दशा में काम करने के लिए तैयार होगा जब उसे परामर्शदाता के रूप में शिक्षक से अधिक वेतन (मान लीजिए 20%) मिले। मौद्रिक मज़दूरी दरों में अंतर विभिन्न व्यवसायों में श्रम की माँग और आपूर्ति को बराबर करने के लिए उस समय ज़रूरी हो जाते हैं जब रोज़गारों में ग़ैर-मौद्रिक आकर्षणों में भी भिन्नता हो।

2) **मानव पूँजी निवेश में अंतर** : किसी कार्य विशेष को संपन्न करने की किसी व्यक्ति की योग्यता को प्रशिक्षण, शिक्षा एवं अनुभव से बढ़ाया जा सकता है। लोग अधिक उत्पादक कामगार होकर ऊँची मज़दूरी प्राप्त कर सकते हैं। वह प्रक्रिया जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अपनी योग्यता और क्षमता में वृद्धि कर सकता है, मानव

पूँजी निवेश कहलाता है। ऐसे रोज़गारों में ऊँची मज़दूरी भुगतान की जाती है। कारण सीधा और सरल है। यदि ऐसे रोज़गारों के लिए मज़दूरी की दरें ऊँची नहीं होंगी तो लोग इन रोज़गारों के लिए आवश्यक शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्राप्त करने पर अधिक खर्च क्यों करेंगे? उच्च कौशल युक्त रोज़गार से जुड़ी ऊँची मज़दूरी वस्तुतः पूर्व में किए गए मानव पूँजी निवेश पर प्राप्त प्रतिफल ही है।

3) **योग्यता में अंतर :** कामगारों की उत्पादक योग्यताएँ एवं दक्षताएँ न केवल उनके प्रशिक्षण एवं अनुभव (मानव पूँजी निवेश) पर निर्भर करती हैं वरन् कतिपय वंशानुगत विशिष्टताओं पर भी निर्भर करती हैं। इन दो कारकों का सापेक्षिक महत्त्व अत्यधिक विवादास्पद है। वर्षों से लोग इस बात की बहस में उलझे रहे हैं कि किसी व्यक्ति के योग्यता गुणांक (IQs) की व्याख्या करने में आनुवांशिक या वातावरणीय कारकों का कोई महत्त्व है। इसी प्रकार, दुर्लभ योग्यताएँ होना ऊँची मज़दूरी प्राप्त हो जाने की कोई गारंटी नहीं है। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण किसी रोज़गार या सेवा के लिए आवश्यक श्रमिकों की माँग के सापेक्ष उस कार्य को करने में दक्ष और सक्षम कामगारों की आपूर्ति ही है।

बोध प्रश्न 3

1) न्यूनतम मज़दूरी क्या है? क्या यह फर्म के स्तर पर रोज़गार के स्तर को प्रभावित करती है?

.....

.....

.....

2) अर्थव्यवस्था में श्रम संघ किस प्रकार मज़दूरी की दरों एवं रोज़गार के स्तर को प्रभावित करते हैं?

.....

.....

.....

3) विभिन्न प्रकार के पेशों में मज़दूरी दरों में भिन्नताएँ क्यों पायी जाती हैं? कारण सहित व्याख्या कीजिए कि एक विद्यालय शिक्षक की तुलना में एक प्रोफेसर को ऊँचा वेतन क्यों दिया जाता है?

.....

.....

.....

14.6 सार-संक्षेप

इस इकाई में अर्थव्यवस्था में श्रम बाज़ारों के कार्य करने पर विस्तार से चर्चा की गयी। पहले भाग में श्रम बाज़ारों के अर्थ से परिचय कराया गया और समझाया गया कि श्रमिकों को उनके द्वारा प्रदत्त सेवाओं के प्रतिफल के रूप में मज़दूरी का भुगतान किस प्रकार किया जाता है। दूसरे भाग में, पूर्ण प्रतियोगिता वाले वस्तु बाज़ार एवं अपूर्ण प्रतियोगिता वाले वस्तु बाज़ार की संरचना की विवेचना की गयी। पहले उपभाग में पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार में श्रम की माँग एवं आपूर्ति वक्रों के निर्धारण की व्याख्या की गयी तथा समझाया गया कि किस प्रकार इन वक्रों का कटान बिंदु सीमांत उत्पाद का मूल्य (VMP) वक्र अथवा सीमांत आगम उत्पाद (MRP) वक्र बाज़ार संरचना में संतुलन स्थापित करता है। दूसरे उपभाग में, अपूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार में माँग एवं आपूर्ति

में भेद करते हुए संतुलन को एकाधिकार की विशिष्ट दशा के अंतर्गत समझाया गया। चूँकि एकाधिकार में कीमत (AR) तथा सीमांत आगम (MR) अलग-अलग होते हैं इसलिए संतुलन मज़दूरी दर तथा इस पर किसी फर्म द्वारा श्रमिकों की माँग सीमांत उत्पाद वक्र एवं श्रम की आपूर्ति वक्र के कटान बिंदु से निर्धारित होती है। अगले भाग में विश्व के विभिन्न भागों में श्रमिकों के कल्याणार्थ अपनायी जाने वाली प्रमुख श्रम बाज़ार नीतियों की विवेचना की गयी। न्यूनतम मज़दूरी, मज़दूरी की वह दर है जो श्रमिकों को उनके द्वारा प्रदान की गयी सेवा के लिए सेवायोजकों द्वारा अनिवार्यतः भुगतान की जाती है। श्रम संघ श्रमिकों को फर्मों के साथ सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति प्रदान करते हैं। इनके माध्यम से श्रमिकों के काम करने की दशाओं एवं मज़दूरी व अन्य पारितोषकों के बारे में सेवायोजकों से सौदेबाजी की जाती है।

अंतिम भाग में, श्रम अर्थशास्त्र में मज़दूरी की दरों में विभिन्नताओं के कारणों को लेकर चल रही बहस पर चर्चा की गयी। इस भाग में समझाया गया कि किस प्रकार क्षतिपूर्ति मज़दूरी, मानव पूँजी विकास एवं कामगारों का कौशल जैसे कारक मज़दूरी की दरों में अंतर ला सकते हैं। तथापि, किसी रोज़गार विशेष के लिए आवश्यक कौशल युक्त श्रमिकों की माँग एवं उनकी सीमित आपूर्ति ऐसे श्रमिकों की ऊँची मज़दूरी दरों का निर्णायक कारक है।

14.7 संदर्भ ग्रंथादि

1) Robert H Frank and Ben S Bernanke, *Principles of Economics*, Latest edition, Tata McGraw-Hill, Indian reprint.

2) Edgar K Browning and Mark A Zupan, *Microeconomics: Theory and Applications*, 8th Edition, John Wiley and Sons, Inc. USA

3) Pindyck, Robert S. and Daniel Rubinfield (2005), *Microeconomics*, Collier Macmillan, London, Chapter 13, page 399 to 417.

14.8 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) भाग 14.2 पढ़ें और उत्तर लिखें।

2) भाग 14.3 पढ़ें और उत्तर लिखें।

3) भाग 14.3 पढ़ें और उत्तर लिखें।

बोध प्रश्न 2

1) उपभाग 14.3.2 पढ़ें और उत्तर लिखें।

2) उपभाग 14.3.2 पढ़ें और उत्तर लिखें।

3) उपभाग 14.3.2 पढ़ें और उत्तर लिखें।

बोध प्रश्न 3

1) उपभाग 14.4.1 पढ़ें और उत्तर लिखें।

2) उपभाग 14.4.2 पढ़ें और उत्तर लिखें।

3) भाग 14.5 पढ़ें और उत्तर लिखें।

इकाई 15 भूमि बाज़ार

संरचना

15.0 उद्देश्य

15.1 विषय प्रवेश

15.2 भू-उपयोग के प्रतिफल के रूप में लगान

15.3 भूमि पर कर के प्रभाव

15.4 लगान के सिद्धांत

15.4.1 रिकार्डो का लगान सिद्धांत

15.4.2 मार्शल का लगान सिद्धांत

15.4.3 लगान का आधुनिक सिद्धांत

15.5 सार-संक्षेप

15.6 संदर्भ ग्रंथादि

15.7 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

15.0 उद्देश्य

13वीं तथा 14वीं इकाई में साधन बाजारों एवं श्रम बाज़ारों के जान लेने के बाद आप इस इकाई में भूमि बाजारों के कार्य करने के बारे में जानकारी प्राप्त करने में सक्षम होंगे। किसी अर्थव्यवस्था में भूमि बाज़ार बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं। चूँकि अर्थव्यवस्था में भूमि की आपूर्ति स्थिर होती, इसलिए भूमि बाज़ार भूमि की माँग एवं कीमत में प्रायः होने वाले परिवर्तनों से प्रभावित होते रहते हैं। विधिक रूप से, भूमि के स्वामित्व में कब्जे का अधिकार, जोतने व खेती करने का अधिकार, किसी दूसरे द्वारा कब्जा करने से रोकने का अधिकार, निर्माण करने का अधिकार आदि जैसे अनेक अधिकार एवं बाध्यताएँ शामिल हैं। किसी भी व्यवसाय के लिए भूमि महत्त्वपूर्ण कारक (साधन) है। भूमि का अनोखा तत्व कीमतों में होने वाले परिवर्तनों से भूमि की स्थिर आपूर्ति का अप्रभावी रहना है। सामान्य तौर पर उत्पत्ति के साधनों का आपूर्ति वक्र का ढाल ऊपर की ओर उठता हुआ होता है। अर्थात् कीमत में वृद्धि होने पर साधन की आपूर्ति बढ़ जाती है। लेकिन भूमि की आपूर्ति स्थिर होने के कारण भूमि की आपूर्ति के मामले में ऐसा नहीं होता। इस इकाई के गहन अध्ययनोपरांत, आप सक्षम होंगे :

- भूमि बाज़ारों का अर्थ व्यक्त कर पाने में;
- यह समझ पाने में कि किस प्रकार लगान को भूमि का प्रतिफल माना जाता है;
- यह समझा पाने में कि यदि भूमि पर कर लगा दिया जाए तो क्या होगा; और
- लगान के सिद्धांतों की व्याख्या कर पाने में।

15.1 विषय प्रवेश

सामान्य बोलचाल की भाषा में मकान, दुकान, वाहन, मशीन आदि जैसी आस्तियों के उपयोग के बदले किये जाने वाले संविदात्मक भुगतान के लिए 'लगान' शब्द का प्रयोग किया जाता है। अर्थशास्त्रियों ने परंपरागत रूप से इस शब्द का प्रयोग केवल भूमि के लिए किया है। वास्तव में, लगान शब्द का उद्‌भव, सामंतशाही समाजों से हुआ है, जहाँ

अधिकांश भूमि भू-स्वामियों या ज़मीदारों के स्वामित्व में थी। वे भूमि के खण्डों (खेतों) पर खेती करने वालों से कुछ भुगतान प्राप्त करते थे। लगान वह भुगतान है जो मृदा के उत्पादक उपयोग हेतु भुगतान किया जाता है। लगान एवं भूमि के मूल्य के बीच एक अन्य महत्त्वपूर्ण अंतर भी है। जहाँ भूमि लगान का अर्थ भूमि की एक इकाई का उपयोग करने के बदले चुकाई गई कीमत से है वहीं भूमि का मूल्य किसी समय बिंदु पर भूमि के एक खंड को खरीदने के लिए चुकाई गई कीमत से है।

15.2 भू-उपयोग के प्रतिफल के रूप में लगान

किसी स्थिर साधन की कीमत को सामान्यतया लगान या विशुद्ध आर्थिक लगान के रूप में जाना जाता है। अर्थशास्त्री न केवल भूमि को बल्कि उत्पत्ति के ऐसे किसी भी साधन के प्रतिफल को लगान के रूप में निरूपित करते हैं जिसकी आपूर्ति स्थिर है। भूमि का आपूर्ति वक्र पूर्णतया बेलोचदार अर्थात् ऊर्ध्वाकार रेखा है। जबकि भूमि के लिए मांग वक्र का ढाल नीचे की ओर गिरता हुआ है। संतुलन उस बिंदु पर निर्धारित होता है जहाँ माँग एवं आपूर्ति वक्र एक-दूसरे को काटते हैं। संतुलन बिंदु ही लगान का निर्धारण करता है। संतुलन एक स्थायी संतुलन है। यदि लगान संतुलन स्तर से अधिक है तो सभी फर्मों द्वारा भूमि की माँग स्थिर आपूर्ति से कम की जाएगी। कुछ भू-स्वामी अपनी भूमि को इस स्तर के लगान पर उठा पाने में सफल रहे होंगे तथा कम लगान पर ही भूमि उठाने के लिए सहमत हो जाएंगे। अंततः लगान की प्रवृत्ति संतुलन बिंदु पर आने की रहेगी। इसी प्रकार लगान संतुलन स्तर से नीचे भी नहीं रह सकता। केवल एक प्रतिस्पर्धी कीमत पर भूमि की माँग एवं आपूर्ति बराबर होती है तो बाज़ार संतुलन अवस्था में होता है।

भूमि उत्पत्ति का एक मात्र साधन है जो प्रकृति से मानव को निःशुल्क उपहार है। इसके अंतर्गत भूमि की सतह, खनिज संपदा, वन, जलधाराएं आदि आते हैं। इसलिए कीमत में परिवर्तन के प्रति गैर-प्रभावनीयता दर्शाने वाले सभी साधनों को 'भूमि' के अंतर्गत ही शामिल किया जाता है। खेती के लिए समतल भूमि सीमित हो सकती है लेकिन वनों को काटकर और साफ करके या ऊबर-खाबड़ भूमि को समतल करके खेती योग्य बनाया जा सकता है। इसी प्रकार, कीमतों में परिवर्तन होने (विशेष रूप से वृद्धि हो जाने पर) धातुई एवं गैर-धातुई खनिजों की खोज एवं निकासी हेतु बेहतर प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके भूमि के नीचे गहराई में खनन करके एवं पहले घटिया समझे जाने वाले अयस्कों का भी खनन करके खनिजों की आपूर्ति को बढ़ाया जा सकता है। इतना ही नहीं नई तकनीक एवं ज्ञान से मिट्टी की उर्वरा शक्ति को सुधारा/बढ़ाया/वापस लगाया जा सकता है। लेकिन जंगल को साफ करके या घटिया भूमि को समतल करके उसे खेती योग्य बना लिए जाने की एक सीमा है। इसी प्रकार कृत्रिम साधनों से मिट्टी की उर्वरा शक्ति को एक सीमा से अधिक नहीं बढ़ाया जा सकता। यही बात खनिज उत्पादन पर भी लागू होती है।

मान लीजिए भूमि के एक खंड पर केवल कपास की खेती की जाती है। यदि कपास की मांग में वृद्धि होती है तो कपास उगाने वाले भूमि के लिए मांग वक्र ऊपर की ओर उठ जाएगा। तथा ऐसी भूमि के लगान में वृद्धि होगी। इसका एक महत्त्वपूर्ण प्रभाव होगा। कपास की कीमत में वृद्धि हो जाने से कपास उगायी जाने वाली भूमि की कीमत भी बढ़ जाएगी। इससे पता चलता है कि भूमि की माँग भी व्युत्पन्न मांग है जो यह सिद्ध करता है कि उत्पत्ति के साधनों की माँग व्युत्पन्न माँग होती है। अर्थात् साधनों की माँग इसलिए की जाती है कि उनके द्वारा उत्पादित वस्तु की माँग की जाती है। इसलिए भूमि का लगान भूमि पर उत्पादित वस्तु के मूल्य से व्युत्पन्न होता है। इसके विपरीत नहीं।

किसी आगत के लिए माँग व्युत्पन्न माँग है। इसका अर्थ यह है कि आगत की कीमत उस आगत के सीमांत उत्पाद के मूल्य एवं आगत द्वारा उत्पादित वस्तु की कीमत के गुणनफल के बराबर होगी। दूसरे शब्दों में, कोई फर्म किसी आगत की एक अतिरिक्त

इकाई के लिए उतना ही धन खर्च करने के लिए तैयार होगी जितना कि फर्म को उस अतिरिक्त इकाई को रोज़गार पर रखने पर उत्पादन में वृद्धि के रूप में प्राप्त होगा। यह साधन की अतिरिक्त इकाई द्वारा उत्पादित वस्तु की मात्रा तथा बाज़ार में उस उत्पाद की उस मात्रा को बेचने से अर्जित आगम से गुणा करने पर प्राप्त गुणनफल के बराबर है। व्यक्तिगत फर्मों के माँग वक्रों का क्षैतिजिक योग उत्पाद के लिए बाज़ार माँग वक्र के बराबर है। एक आगत की आपूर्ति विशिष्ट रूप से आगतों के स्वामियों के व्यवहार पर निर्भर करती है। हाँ, भूमि के मामले में, आपूर्ति लगभग स्थिर है। इसलिए अधिकांश मामलों में भूमि के आपूर्ति वक्र को ऊर्ध्वाकार माना जा सकता है। कुछ मामलों में परती या गैर-खेती योग्य भूमि को खेती योग्य बनाकर भूमि की आपूर्ति में एक सीमा तक वृद्धि की जा सकती है जिससे भूमि का आपूर्ति वक्र ऊर्ध्वाकार से एक सीमा तक विवर्तित हो सकता है। इतना ही नहीं, किसी विशिष्ट कार्य अथवा क्रिया के लिए भूमि का आपूर्ति वक्र सामान्य रूप से ऊर्ध्वाकार नहीं भी हो सकता, क्योंकि भूमि को एक उपयोग से हटाकर दूसरे उपयोग में लाया जा सकता है। एक प्रतियोगी बाज़ार में सभी इकाइयाँ कीमतग्राही होती है। इसलिए कोई भी आगत की कीमत को प्रभावित नहीं कर सकता। भूमि की कीमत व्युत्पन्न माँग वक्र एवं ऊर्ध्वाकार आपूर्ति वक्र के कटान बिंदु पर निर्धारित होती है और भूमि को प्रयुक्त करने वाला प्रत्येक उपयोगकर्ता लगान पर उठाने वाली भूमि (या लगान पर लेने वाली भूमि) को इस प्रकार समायोजित करता है कि उसके सीमांत उत्पाद का मूल्य बाज़ार लगान (या मूल्य) के बराबर हो।

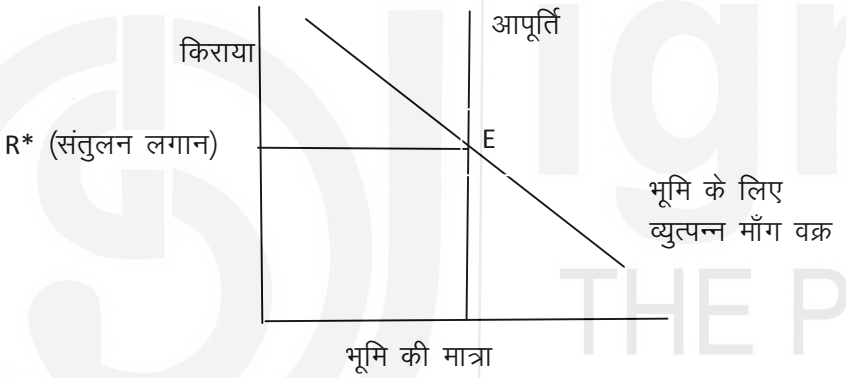

चित्र 15.1 : भूमि बाज़ारों में संतुलन का निर्धारण

उपर्युक्त चित्र दर्शाता है कि भूमि के माँग एवं पूर्ति वक्र एक-दूसरे को E बिंदु पर काट कर संतुलन लगान R* निर्धारित करते हैं। ध्यान रहे कि भूमि का माँग वक्र एक व्युत्पन्न माँग वक्र है जबकि भूमि का आपूर्ति वक्र पूर्णतया बेलोचदार ऊर्ध्वाधर वक्र है।

15.3 भूमि पर कर के प्रभाव

भूमि की आपूर्ति स्थिर होने के निहितार्थों को भी समझ लेने की आवश्यकता है। मान लीजिए सरकार भू-स्वामियों पर भूमि से होने वाली आय पर कर लगाना चाहती है तथा यह सुनिश्चित करते हुए कि भवनों या अन्य सुधारों पर कोई कर नहीं है भूमि से प्राप्त सभी लगानों पर 50 प्रतिशत की दर से कर लगा देती है। भूमि की कुल माँग और आपूर्ति पर इस कर का क्या प्रभाव होगा? वास्तविकता तो यह है कि करारोपण के बाद भी भूमि की सेवाओं हेतु माँगी जाने वाली मात्रा में कोई परिवर्तन नहीं होगा भले ही माँग वक्र विवर्तित क्यों न हो जाय। 50 प्रतिशत कर होने पर भी, लोग भूमि की संपूर्ण स्थिर आपूर्ति की माँग करेंगे। इस प्रकार आपूर्ति में स्थिर भूमि, भूमि सेवाओं पर बाज़ार लगान (कर सहित) में कोई परिवर्तन नहीं होगा तथा वह चित्र 15.2 में E_1 बिंदु पर के स्तर पर मूल रूप में रहेगा।

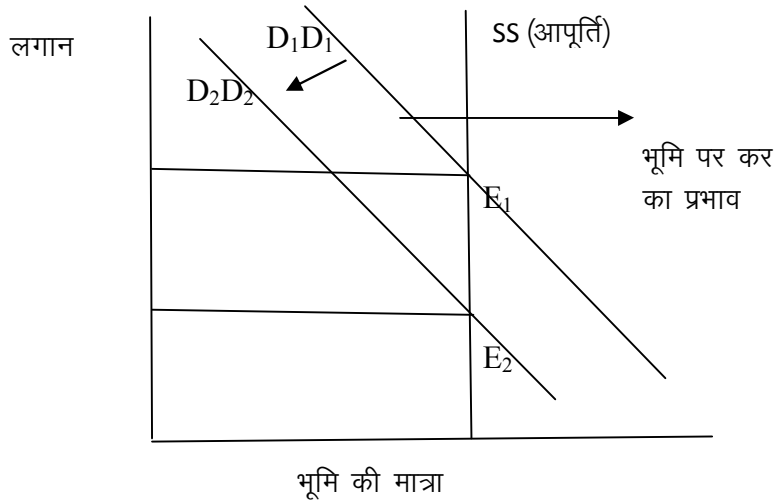

चित्र 15.2 : भूमि पर कर के प्रभाव

करारोपण से भू-स्वामियों द्वारा प्राप्त लगान पर क्या प्रभाव पड़ेगा? चूँकि करारोपण से भूमि की माँग एवं पूर्ति अपरिवर्तित रहती है, इसलिए करारोपण से बाज़ार कीमत भी अप्रभावित रहेगी। इसलिए कर का भुगतान पूरी तरह से भू-स्वामी की आय से किया जाएगा। इससे किसान द्वारा भुगतान की गयी कीमत एवं भू-स्वामी द्वारा प्राप्त कीमत में अंतर आ जाता है। भू-स्वामियों के मामले में, जब सरकार 50 प्रतिशत कर लगा देती है तो प्रभाव उतना ही होगा जैसे कि भू-स्वामियों के लिए निवल माँग D_1D_1 से D_2D_2 की स्थिति में विवर्तित हो गई हो। भू-स्वामी का करारोपण के बाद संतुलन E_2 पर होता है। पूरा कर अंततः पूर्णतया बेलोचदार आपूर्ति में साधन के स्वामियों पर ही विवर्तित हो जाएगा। तथापि, साधन आय में यह कमी साधन के लिए आर्थिक अदक्षता पैदा नहीं करती। ऐसा इसलिए होता है कि विशुद्ध लगान पर कर किसी के भी व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं लाता। भूमि की माँग करने वाले करारोपण से प्रभावित नहीं होते क्योंकि इससे भूमि की कीमत यथावत रहती है। भूमि की आपूर्ति करने वालों का व्यवहार भी पहले जैसा ही रहता है क्योंकि भूमि की आपूर्ति स्थिर है। इस प्रकार करारोपण के बाद भी अर्थव्यवस्था पूर्ववत् संचालित होती रहती है, कर अर्थव्यवस्था में किसी प्रकार की अदक्षताएँ या विकृति पैदा नहीं करता।

ये परिणाम हेनरी जॉर्ज के एकल कर आरोपण पर आधारित हैं, बाद में इनका प्रयोग ब्रिटिश अर्थशास्त्री फ्रेंक रामसे द्वारा रामसे कर सिद्धांत विकसित करने के लिए किया गया। जॉर्ज का तर्क था कि चूँकि गैर-सुधारी भूमि का मूल्य अनार्जित है, इसलिए न तो भूमि का मूल्य और न भूमि के मूल्य पर कोई कर उत्पादक व्यवहार को प्रभावित कर पाएगा। यदि भूमि पर अधिक ऊँची दर से कर लगाया गया होता, तो भी भूमि की उपलब्धता में कोई कमी नहीं आती, जैसा कि अन्य वस्तुओं के मामले में होता है, और न भूमि की माँग में कोई कमी आती क्योंकि भूमि उत्पादक कार्यों में प्रयुक्त की जा रही है। रामसे कर के पीछे तर्क लगभग वही है जो कि उपर्युक्त चित्र में दर्शाया गया है। यदि किसी वस्तु की आपूर्ति या माँग अत्यधिक बेलोचदार है, तो इस पर लगाए गए कर का उस क्षेत्रक में उत्पादन एवं उपभोग पर बहुत कम प्रभाव होगा तथा परिणामी विकृतियाँ कम ही होंगी।

बोध प्रश्न 1

1) आर्थिक लगान का अर्थ समझाइए।

.....

.....

.....

2) मान लीजिए कि X शहर में 1BHK मकान का किराया रु. 4000 है, यदि सरकार किराए पर 5 प्रतिशत की दर से कर लगा देती है तो इस प्रकार के मकान की आपूर्ति पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा। अपने उत्तर के समर्थन में कारण बताइए।

.....

.....

.....

3) हेनरी जॉर्ज के कर सिद्धांत का सार क्या है?

.....

.....

.....

15.4 लगान के सिद्धांत

यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि लगान क्यों दिया जाता है तथा लगान किस प्रकार निर्धारित किया जाता है। इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए लगान के तीन सिद्धांत प्रतिपादित किए गए है– (i) रिकार्डो का लगान सिद्धांत, जिसे लगान के प्रतिष्ठित सिद्धांत के नाम से भी जाना जाता है; (ii) मार्शल का लगान सिद्धांत; और (iii) लगान का आधुनिक सिद्धांत।

15.4.1 रिकार्डो का लगान सिद्धांत

19वीं शताब्दी के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डेविड रिकार्डो ने लगान को ''पृथ्वी से उत्पादित उस अंश के रूप में परिभाषित किया था जो मिट्टी की मौलिक एवं अविनाशी शक्तियों के उपयोग के बदले भू-स्वामी को भुगतान किया जाता है''। परिभाषा के अनुसार, भूमि में इसकी प्रकृति, स्थिति, पर्यावरण और सुनिश्चितता के संदर्भ में कुछ मौलिक तथा स्थायी गुण होते हैं। लगान इन्हीं के उपयोग के बदले भुगतान किया जाता है। तथा भू-स्वामी को लगान सघन एवं विस्तारित दोनों ही प्रकार की खेती के लिए प्राप्त होता है।

सघन खेती के अंतर्गत, कृषक भूमि के एक ही खंड पर उत्पत्ति के अन्य साधनों की उत्तरोत्तर इकाइयों का उपयोग सघन रूप से करता जाता है ताकि उत्पादन में वृद्धि होती रहे। वह श्रमिकों की अधिकाधिक संख्या उस बिंदु तक लगाता रहता है जब तक कि एक अतिरिक्त श्रमिक लगाने से सीमांत आगम उत्पाद बाज़ार मज़दूरी से अधिक रहता है। इसे सघन खेती कहा जाता है। रिकॉर्डो इस मान्यता को लेकर चले कि खेती में उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होता है। अर्थात् भूमि के एक ही खेत (उत्पत्ति के एक साधन को स्थिर रखते हुए) श्रम और पूँजी की इकाइयों में उत्तरोत्तर वृद्धि की जाती है तो कुल उत्पादन में घटती हुई दर से वृद्धि होती है। निम्नलिखित चित्र यह स्पष्ट करता है कि खेती पर श्रम एवं पूँजी के अत्यधिक उपयोग से किस प्रकार घटता प्रतिफल प्राप्त होता है।

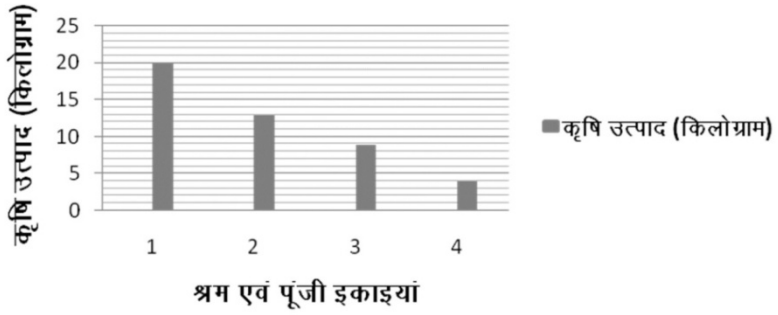

चित्र 15.3 : सघन खेती में घटता प्रतिफल

चित्र 15.3 से पता चलता है कि श्रम एवं पूँजी की इकाइयों को 1 से बढ़ाकर 3 किया जाता है तो कृषि उपज 20 कि.ग्रा. से घटकर 9 कि.ग्रा. रह जाती है। क्या इस भूमि पर लगान प्राप्त होगा? उत्तर है 'हाँ'। इसके लिए पाँचवीं इकाई में समझाए गए साधन माँग वक्र को याद करना होगा। साधन का माँग वक्र वस्तुतः परिवर्तनशील कारक का सीमांत आगम उत्पाद वक्र है। इस माँग वक्र का प्रयोग कुल उत्पाद में श्रम के हिस्से को ज्ञात करने के लिए किया जाता है। मज़दूरी बिल एवं अधिशेष को लगान कहा जाता है। जैसा कि चित्र 15.4 से ज्ञात हो रहा है।

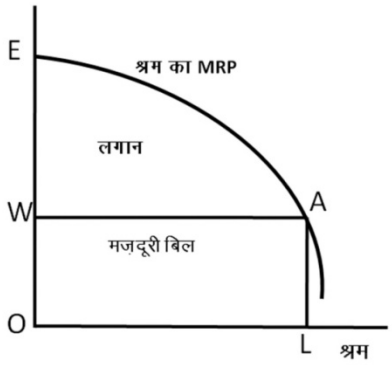

चित्र 15.4 : रिकार्डो के लगान सिद्धांत में लगान का निर्धारण

यहाँ यह मान लिया गया है कि उत्पत्ति के केवल दो ही साधन हैं।

विस्तारित खेती क्या है? विस्तारित खेती के अंतर्गत उत्पादन में वृद्धि करने के लिए खेती के लिए अनुपयुक्त भूमि को खेती के उपयुक्त बनाकर उस पर खेती करना प्रारंभ कर दिया जाता है। भूमि की बढ़ती माँग के अनुसार जब अधिकाधिक भूमि खेती में प्रयुक्त की जाने लगती है तो भी खेती के समस्त टुकड़े एकसमान उपजाऊ नहीं होते। माना कि A, B, C, D, E पाँच प्रकार के खेत खेती के लिए उपलब्ध हैं। जो इनकी उपज के अनुसार घटते हुए क्रम में है। इसमें A खेत सर्वाधिक उपजाऊ तथा E खेत सबसे कम उपजाऊ है। प्रारंभ में कृषक A भूमि पर खेती करेगा, इससे उसे सर्वाधिक उपज प्राप्त होगी। जनसंख्या में वृद्धि होने पर कृषि वस्तुओं की माँग में वृद्धि होगी, A भूमि पर उत्पादित खाद्यान्न बढ़ती माँग को पूरा नहीं कर पाएगा। उस अवस्था में कृषक A की तुलना में कम उपजाऊ भूमि B पर खेती करेगा। A के समान ही आगत लगाने पर भी B से उतना उत्पादन प्राप्त नहीं हो सकेगा जितना कि A से प्राप्त होता है।

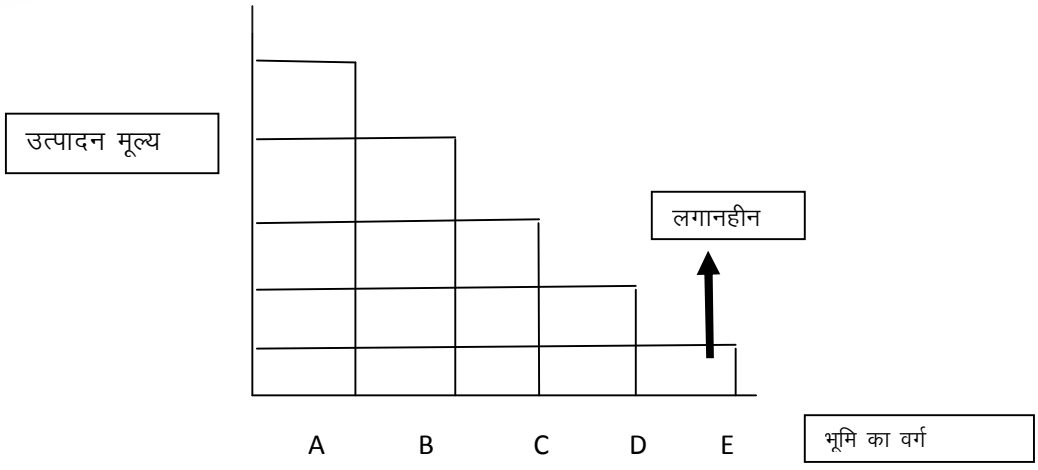

चित्र 15.5 : सघन खेती में लगान

इसी प्रकार कृषि उत्पादों की बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए C, D और E भू-खंडों पर भी खेती की जाएगी। चूँकि E भू-खंड सबसे कम उपजाऊ है इसलिए उससे कोई

अधिशेष प्राप्त नहीं होगा तथा A से सर्वाधिक अधिशेष प्राप्त होगा। यह अधिशेष ही लगान है। लगान को अर्जित करने के लिए किसी भू-खंड पर उत्पादित कृषि उत्पाद का बाज़ार मूल्य खेती की लागत से अधिक होना चाहिए जो कि A भू-खंड के मामले में सर्वाधिक है। निम्न गुणवत्ता वाली भूमि पर, खेती की लागत ऊँची होती है। इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उच्च श्रेणी की भूमि ही अधिशेष या लगान सृजित करती है। रिकार्डो ने यह भी समझाया कि लगान भूमि से उत्पादित उत्पाद की कीमत पर भी निर्भर करता है। इस प्रकार लगान खेती की कुल लागत के ऊपर उत्पाद के बाज़ार मूल्य के रूप में प्राप्त अधिशेष है। जैसा कि चित्र 15.5 में दर्शाया गया है।

रिकार्डो का लगान सिद्धांत निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है।

1) अर्थव्यवस्था में पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति है

2) भूमि की आपूर्ति सीमित है

3) खेती में ह्रासमान उत्पत्ति का नियम लागू होता है

4) लगान केवल भूमि को ही प्राप्त होता है

5) लगान कीमत से निर्धारित है

6) खेती भू-खंडों की उर्वरता आधारित गुणवत्ता के क्रम में की जाती है। सबसे पहले सर्वाधिक उपजाऊ भू-खंड पर खेती की जाती है। सबसे कम उपजाऊ भू-खंड पर सबसे बाद में खेती की जाती है।

रिकार्डो के लगान सिद्धांत का एक महत्त्वपूर्ण पहलू लगान के निर्धारण में भू-खंड की स्थिति का भी है। सिद्धांत का कथन है कि मिट्टी की उर्वरकता से इतर, कृषि उत्पाद को खेत से बाज़ार तक लाने की परिवहन लागतों में अंतर के कारण भी लगान उत्पन्न होता है। कृषि उत्पादों की माँग में वृद्धि के चलते बाज़ार से उत्तरोत्तर दूर स्थित भू-खंडों पर भी खेती करना प्रारंभ कर दिया जाता है जिससे परिवहन लागतों में वृद्धि होने लगती है। जो भू-खंड बाज़ार के निकट हैं, उनकी उपज की परिवहन लागतें कम तथा जो भू-खंड बाज़ार से दूर हैं, उनकी परिवहन लागतें अधिक आती हैं। इसलिए बाज़ार के निकट वाले भू-खंड का लगान अधिक तथा बाज़ार से दूर वाले भू-खंड का लगान कम होता है।

रिकार्डो के लगान सिद्धांत की आलोचना इन वाक्यों में समाहित की जा सकती है। वास्तविक कृषि बाज़ारों में पूर्ण प्रतियोगिता नहीं पायी जाती। श्रेष्ठतम तथा निम्न गुणवत्ता वाली भूमि के बीच अंतर भू-स्वामी/कृषक द्वारा प्रौद्योगिकी एवं आगतों को प्रयुक्त किए जाने के कारण भी होता है तथा इन्हें प्रयुक्त किए जाने से लागत आती है। कोई भू-खंड उर्वरकता की दृष्टि से कितना भी श्रेष्ठ क्यों न हो लेकिन यदि वह बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र में है या उस पर झाड़-झंकाड़ है या विवादग्रस्त निजी स्वामित्व में है तो उस पर अर्जित होने वाला लगान कम ही होगा। भूमि की मौलिक एवं अविनाशी शक्तियाँ प्रौद्योगिकी के परिवर्तनों से प्रभावित होती हैं। अब प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों से भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाया जा सकता है तथा यांत्रिक खेती से अधिकाधिक भूमि को खेती के अंतर्गत लाया जा सकता है। तथापि, इन समस्त आलोचनाओं के बावजूद, रिकार्डो द्वारा प्रतिपादित लगान आर्थिक प्रगति से उत्पन्न अनार्जित विभेदीकृत अधिशेष है जिसने सारे विश्व में नीति निर्माताओं की कृषि विकास से जुड़ी नीतियों के निर्माण में सहायता की है। भू-स्वामियों को प्राप्त इस अनार्जित अधिशेष ने ही भारत एवं इस जैसे अनेक देशों में ज़मीदारी उन्मूलन जैसे भूमि सुधारों को लागू करने का मार्ग प्रशस्त किया है।

बोध प्रश्न 2

1) लगान की रिकार्डो की अवधारणा क्या है? यह लगान या किराए की प्रचलित अवधारणा से किस प्रकार भिन्न है?

.....

.....

.....

2) क्या आप सोचते हैं कि भूमि की आपूर्ति सीमित है? यदि हाँ तो किस प्रकार?

.....

.....

.....

15.4.2 मार्शल का लगान सिद्धांत

रिकार्डो की लगान की अवधारणा को उत्पत्ति के अन्य साधनों तक विस्तारित करते हुए अल्फ्रेड मार्शल ने आभासी लगान (quasi-rent) की अवधारणा प्रस्तुत की। मार्शल ने इसे उत्पत्ति के अन्य साधनों द्वारा अर्जित अधिशेष के रूप में परिभाषित किया। मार्शल की आभासी लगान की अवधारणा रिकार्डो के लगान की दीर्घकालीन अवधारणा से इतर एक अल्पकालीन अवधारणा है। इस अवधारणा को मकान के उदाहरण से आसानी से समझा जा सकता है। मान लीजिए कि मैट्रो का निर्माण कार्य प्रारंभ हो जाने से अहमदाबाद के किसी क्षेत्र में मकानों की मांग में अचानक वृद्धि हो जाती है। इस मांग के सापेक्ष मकानों की आपूर्ति को यकायक बढ़ा पाना संभव नहीं है। मकानों की मांग में वृद्धि मकानों की कीमतों में वृद्धि करेगी जिससे मकान बेचने वालों को अधिशेष आय प्राप्त होगी। इस प्रकार की आय में यकायक वृद्धि को ही **आभासी लगान** कहा जाता है। इसी प्रकार इस क्षेत्र में मकानों की माँग में वृद्धि हो जाने से उनके किराये में भी वृद्धि हो जाएगी, वह भी आभासी लगान है।

प्रतियोगी संतुलन में आभासी-लगान दीर्घकाल में समाप्त हो जाता है। स्टोनियर एवं हेग ने सही ही कहा है कि ''अल्पकाल में मशीनों की आपूर्ति स्थिर है चाहे उन्हें कम मुद्रा का भुगतान किया जाय या अधिक, इसलिए वे एक प्रकार का लगान अर्जित करती हैं। दीर्घकाल में ऐसा लगान विलुप्त हो जाता है क्योंकि यह कोई वास्तविक लगान नहीं है। बल्कि अल्पकालिक पारितोषक (आभासी) लगान है।'' भूमि का मामला कुछ अलग है। भूमि की आपूर्ति प्रकृति से प्राप्त निःशुल्क उपहार है और इसे पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता। अल्पकाल एवं दीर्घकाल में इसकी आपूर्ति पूर्णतया बेलोचदार है। इसलिए भूमि को दीर्घकाल में भी लगान प्राप्त होता है। इस प्रकार भूमि एवं पूँजीगत मशीनें दोनों की अल्पकाल में आय एक जैसी है।

आभासी लगान एवं लगान के बीच भेद : दो रूपों में आभासी लगान का स्वरूप लगान जैसा ही है। आभासी लगान तब उत्पन्न होता है जब मानव निर्मित वस्तुओं की माँग में वृद्धि हो जाती है। लगान तब उत्पन्न होता है जब भूमि की माँग में वृद्धि हो जाती है। लेकिन मानव निर्मित वस्तुओं की आपूर्ति अल्पकाल में स्थिर होती है, भूमि की आपूर्ति भी स्थिर होती है। लेकिन दोनों के बीच बुनियादी अंतर यह है कि आभासी लगान अल्पकाल में मानव निर्मित वस्तुओं की आपूर्ति स्थिर होने के कारण उत्पन्न होता है। दीर्घकाल में आभासी लगान विलुप्त हो जाता है जबकि भूमि पर अल्पकाल और दीर्घकाल दोनों में ही लगान उत्पन्न होता है क्योंकि भूमि की आपूर्ति अल्पकाल एवं दीर्घकाल दोनों में ही स्थिर होती है। आभासी लगान अस्थायी घटना है जो दीर्घकाल में मानव निर्मित वस्तुओं की आपूर्ति बढ़ जाने पर नहीं पायी जाती। चूँकि भूमि की आपूर्ति

अल्पकाल एवं दीर्घकाल दोनों में ही नहीं बढ़ायी जा सकती इसलिए लगान उत्पन्न होता रहता है।

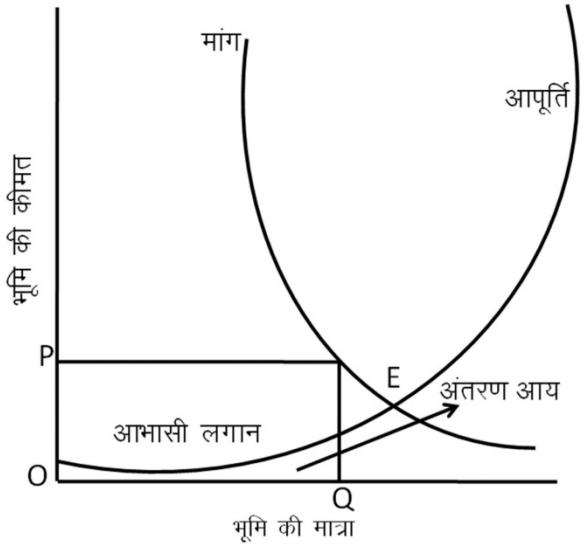

चित्र 15.6 : मार्शल के लगान सिद्धांत के अनुसार लगान का निर्धारण

15.4.3 लगान का आधुनिक सिद्धांत

लगान का आधुनिक सिद्धांत मार्शल के लगान सिद्धांत पर एक सुधार है। यह सिद्धांत लगान निर्धारण की प्रक्रिया के रूप में भिन्न प्रकार का है। आधुनिक सिद्धांत में लगान का निर्धारण मांग एवं पूर्ति की शक्तियों द्वारा होता है। सिद्धांत बताता है कि भूमि भले ही कितनी भी उपजाऊ क्यों न हो, इसकी आपूर्ति की सीमितता के कारण लगान उत्पन्न होगा। लगान का आधुनिक सिद्धांत पूर्ण प्रतियोगिता, समरूप उत्पाद तथा सभी भू-खंडों का समान रूप से गुणवत्ता (उपजाऊ) होना जैसी मान्यताओं पर आधारित है। इतना ही नहीं लगान भूमि की सीमांत आगम उत्पादकता पर निर्भर है तथा इसके माँग वक्र का ढाल नीचे की ओर गिरता हुआ होता है जो यह इंगित करता है कि लगान की नीची दर पर अधिक भूमि की माँग की जाएगी। किसी व्यक्तिगत फर्म का आपूर्ति वक्र पूर्णतया बेलोचदार है। किंतु सभी भू-स्वामियों के लिए वह ऊपर के लिए उठता हुआ है। जिसका अर्थ यह है कि लगान की ऊँची दर पर अधिक भूमि उपलब्ध होगी। इसे चित्र 15.7 में दर्शाया गया है।

आपूर्ति वक्र के नीचे का क्षेत्र 'अंतरण आय' (Transfer earnings) को दर्शाता है जो किसी साधन को वर्तमान उपयोग (रोज़गार) में बनाए रखने के लिए न्यूनतम आय है। सरल शब्दों में, यह अवसर लागत है। यह सर्वाधिक उपयुक्त उपयोग में पूँजी/श्रम/भूमि को प्राप्त होने वाली आय है। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है। मान लीजिए कि एक भूखंड पर कपास उगाने की लागत रु. 100 है। इसी भूखंड पर गेहूँ उगाने की भी लागत इतनी ही है। इसलिए कोई भी अंतरण आय नहीं होगी। लेकिन यदि सोयाबीन उगाने की लागत रु. 70 रह जाती है तो अंतरण आय रु. 30 होगी और रु. 40 लगान होगा। इस प्रकार

लगान = वास्तविक आय – अंतरण आय

चित्र 15.7 भूमि के माँग एवं आपूर्ति वक्रों को दर्शाता है जो E बिंदु पर काटती हैं यहां संतुलन कीमत OP है जिस पर भूखंडों के स्वामी OQ मात्रा लगान पर उठाने के लिए तैयार हैं। आपूर्ति वक्र यह भी इंगित करता है कि विभिन्न कीमतों पर भूमि की कितनी इकाइयाँ आपूर्ति की जा सकती हैं। इसीलिए आपूर्ति वक्र के नीचे का भाग अंतरण आय तथा ऊपर का क्षेत्रफल आभासी लगान को प्रदर्शित करता है।

चूँकि भूमि की आपूर्ति की प्रकृति बेलोचदार है, इसलिए यह दर्शाया जा सकता है कि भूमि का आभासी लगान आपूर्ति वक्रों के विभिन्न लोचों पर निर्भर करेगा। चित्र 15.7 में माँग वक्र तीन आपूर्ति वक्रों S_1, S_2 और S_3 को E बिंदु पर ही काटता है।

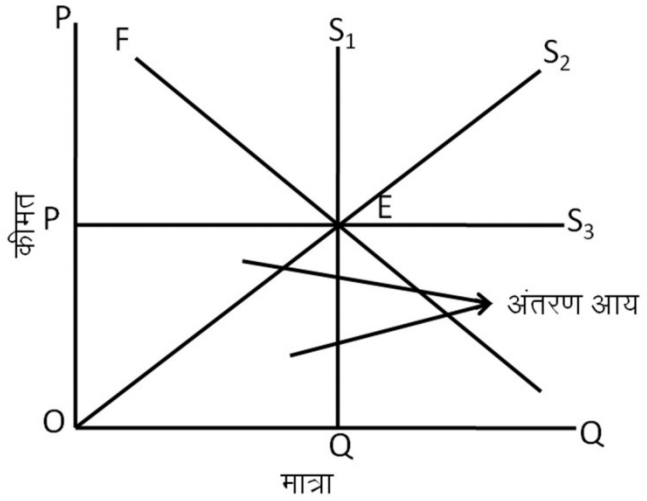

चित्र 15.7 : भूमि के आपूर्ति वक्रों की लोचों पर लगान का निर्धारण

संतुलन कीमत OP तथा संतुलन मात्रा OQ है। आपूर्ति वक्र के नीचे Q तक का भाग अंतरण आय है। साधन को प्राप्त कुल आय OPEQ है। आपूर्ति वक्र S_1 के लिए अंतरण आय शून्य है। जबकि आपूर्ति वक्र S_3 के लिए सारा भुगतान ही अंतरण आय है।

ध्यान दीजिए कि रिकार्डो के लगान सिद्धांत में लागत के ऊपर स्वामी को प्राप्त होने वाली संपूर्ण आय (अधिशेष) लगान है जबकि मार्शल की अवधारणा में साधन की अंतरण आय से ऊपर की आय लगान है। लगान का आधुनिक सिद्धांत मार्शल के मूल सिद्धांत से भिन्न है तथा इसका विकास जे. एस. मिल, जॉन रॉबिन्सन एवं प्रतिष्ठित सम्प्रदाय के दो अन्य अर्थशास्त्रियों द्वारा किया गया है। आधुनिक व्याख्या माँग एवं आपूर्ति फ्रेमवर्क पर आधारित है।

बोध प्रश्न 3

1) आभासी लगान क्या है? यह आर्थिक लगान से किस प्रकार भिन्न है?

.....

.....

.....

2) लगान का आधुनिक सिद्धांत किस प्रकार मार्शल के लगान सिद्धांत के ऊपर एक सुधार है?

.....

.....

.....

3) व्याख्या कीजिए कि किस प्रकार लगान भूमि के आपूर्ति वक्रों की लोच पर निर्भर करता है?

.....

.....

.....

15.5 सार-संक्षेप

इस इकाई में विभिन्न उपागमों को प्रयुक्त करते हुए लगान की अवधारणा को समझाया गया है। मौलिक रूप से अर्थशास्त्रियों द्वारा भूमि को प्राप्त होने वाली आय के लिए लगान शब्द का प्रयोग किया गया। इकाई में भूमि पर करारोपण के निहितार्थों की भी व्याख्या की गयी। जब भूमि पर कोई कर लगाया जाता है तो इससे भूमि की आपूर्ति स्थिर होने के कारण उसकी कीमत में कोई वृद्धि नहीं होती। इसलिए भूमि की माँग यथावत् रहती है। कर सीधे-सीधे भू-स्वामी की आय को प्रभावित करता है और कर का भुगतान भूमि की माँग एवं आपूर्ति को प्रभावित किए बिना भू-स्वामियों द्वारा अपनी आय में से किया जाता है।

आर्थिक सिद्धांत में लगान के निर्धारण के विभिन्न उपागम लगान उत्पन्न होने की व्याख्या करते हैं। रिकार्डो का लगान सिद्धांत भूमि के विभिन्न भूखंडों की गुणवत्ता के कारण उससे होने वाली आय में उत्पन्न अधिशेष के आधार पर लगान का निर्धारण करता है। इस सिद्धांत के दो उपागम हैं : विस्तारित खेती के अंतर्गत लगान तथा सघन खेती के अंतर्गत लगान। ये दोनों ही उपागम दर्शाते हैं कि अधिशेष आय किस प्रकार उत्पन्न होती है तथा भूमि की गुणवत्ता के आधार पर इस अधिशेष आय में किस प्रकार की भिन्नता पायी जाती है। इस सिद्धांत की मान्यताओं जैसे पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति तथा भूमि की मौलिक एवं अविनाशी शक्तियाँ, जिन्हें प्रौद्योगिकी के द्वारा बढ़ाया जा सकता है, के आधार पर इसकी आलोचना की गयी है। मार्शल का लगान सिद्धांत अंतरण आय की अवधारणा पर आधारित है। इसी के आधार पर आभासी लगान की अवधारणा विकसित की गयी है। मार्शल ने लगान को भूमि से प्राप्त होने वाली कुल वास्तविक आय तथा अंतरण आय के बीच के अंतर के रूप में परिभाषित किया और इसे आभासी लगान का नाम दिया जो भूमि के साथ-साथ उत्पत्ति के अन्य सभी साधनों को भी प्राप्त होता है। अंतरण आय वह आय है जो किसी को वर्तमान रोज़गार में रोके रखती है। अंतरण आय से ऊपर की संपूर्ण आय ही लगान है। लगान के आधुनिक सिद्धांत का प्रतिपादन प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों, जे. एस. मिल, जॉन रॉबिंसन आदि द्वारा मार्शल की अवधारणा में सुधार के रूप में किया। यह नई अवधारणा भूमि की मांग एवं आपूर्ति की शक्तियों पर आधारित है।

15.6 संदर्भ ग्रंथादि

1) Stonier A.W. and Hague D.C. (1980), *A Textbook of Economic Theory*, MacMillan: London.

15.7 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) भाग 15.1 और 15.2 देखें।
2) भाग 15.2 और 15.3 देखें।
3) भाग 15.3 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) उपभाग 15.4.1 देखें।
2) भाग 15.2 देखें।

बोध प्रश्न 3

1) भाग 15.4.2 देखें।
2) उपभाग 15.4.2 और 15.4.3 देखें।
3) उपभाग 15.4.3 देखें।

शब्दावली

अल्पकाल : वह अवधि जिसमें फर्म की कम से कम एक आगत (प्लांट का आकार) स्थिर है।

असामान्य लाभ (Supernormal profit) : जब कोई फर्म दीर्घकाल में संसाधनों को वर्तमान उपयोग में बनाए रखते हुए लाभ अर्जित करती है तो वह असामान्य लाभ होता है इस अवस्था में कीमत > औसत लागत।

अल्पाधिकार : सीमित प्रतिस्पर्धा की स्थिति, जिसके अंतर्गत बाज़ार बड़े उत्पादकों या विक्रेताओं द्वारा आपस में बाँट लिया जाता है।

असाधारण लाभ (Abnormal profit) : सामान्य लाभ से अधिक लाभ – जिसे असामान्य लाभ या एकाधिकारी लाभ भी कहा जाता है। फर्मों के प्रवेश में कठोर बाधाएँ होने के कारण एकाधिकारी फर्म द्वारा दीर्घकाल में अर्जित किया जाने वाला लाभ असाधारण लाभ होता है।

अतिरिक्त क्षमता : अतिरिक्त क्षमता एक ऐसी स्थिति है जहाँ फर्म का वास्तविक उत्पादन उसके द्वारा उत्पादित किए जा सकने वाले उत्पादन (अनुकूलतम/आदर्श उत्पादन) से कम होता है। इसका अर्थ कभी-कभी इससे भी लगाया जाता है कि उत्पाद की वास्तविक माँग उस स्तर से कम है जिसे कि व्यवसाय आपूर्ति करने की क्षमता रखता है।

अंतरण आय : किसी साधन को वर्तमान रोज़गार में रोके रखने के लिए पर्याप्त न्यूनतम भुगतान इसे अन्य सर्वोत्तम रोज़गार में प्राप्त हो सकने वाली आय के रूप में भी व्यक्त किया जाता है।

अपूर्ण प्रतियोगिता : अपूर्ण प्रतियोगिता उस समय उत्पन्न होती है जब किसी बाज़ार में, प्राक्कल्पिक या वास्तविक रूप से नवप्रतिष्ठित विशुद्ध या पूर्ण प्रतियोगिता के किसी अभिलक्षण या तत्व का उल्लघंन किया जाता है।

अनुकूलतम उत्पाद मिश्रण : अर्थशास्त्र में उत्पादन के अनुकूलतम मिश्रण को उपलब्ध संसाधनों, प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक मूल्यों के साथ उत्पादन के सर्वाधिक वांछित संयोगों के रूप में व्यक्त किया जाता है।

अपूर्ण सूचना : ऐसी स्थिति जब किन्हीं वस्तुओं एवं सेवाओं के बारे में क्रेताओं और विक्रेताओं के पास उपलब्ध सूचना में एकरूपता नहीं होती।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार : दो विभिन्न राष्ट्रों के क्रेताओं एवं विक्रेताओं के बीच होने वाला व्यापार अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कहलाता है।

अनुकूलतम स्थिति : वह बिंदु जहां उत्पादन के विभिन्न साधनों का प्रयोग करते हुए उत्पादन के संभावित अधिकतम को प्राप्त किया जाता है।

अनुकूलतम स्थिति भंग : यह वह बिंदु है जहां अनुकूलतम स्थिति भंग हो जाती है, अर्थात् दिए गए संसाधनों से उत्पादन संभावित अधिकतम से कम हो जाता है।

अंतर्निहित लागतें : अंतर्निहित लागतें वे लागतें हैं जो फर्म के स्वयं के स्वामित्व वाले संसाधनों के प्रयोग से संबंधित हैं। क्योंकि ये साधन यदि किसी अन्य उत्पादन में प्रयोग किए जाएं तो ये संसाधन प्रतिफल प्रदान करते हैं। अतः इनका आरोपित मूल्य अंतर्निहित लागत का गठन करता है।

आर्थिक लाभ : फर्म के आगम में से आर्थिक लागत को घटाकर प्राप्त धनराशि।

आर्थिक लागत : आर्थिक लागत में लेखांकन लागत के साथ उत्पत्ति के साधन के अगले सर्वोत्तम विकल्प में प्राप्त प्रतिफल के समतुल्य अवसर लागत को शामिल किया जाता है।

आर्थिक लगान : किसी आगत के स्वामी को प्राप्त वह अतिरेक जो उसे आगत को किसी फर्म को प्रदान करने के लिए न्यूनतम धनराशि से ऊपर प्राप्त होता है।

आय प्रभाव : उपभोक्ता की वास्तविक आय में परिवर्तन द्वारा प्रेरित वस्तु या सेवा की मांग में परिवर्तन है।

कीमत में कोई भी वृद्धि या कमी के अनुरूप/ परिणामस्वरूप उपभोक्ता की वास्तविक आय में कमी होती है या वृद्धि होती है जिसके परिणामस्वरूप उसी वस्तु या अन्य वस्तु के या सेवा के लिए मांग कम या अधिक होती है।

आय की असमानताएं : किसी अर्थव्यवस्था में विभिन्न आय वर्गों के बीच आय का वितरण।

आपूर्ति में वृद्धि : किसी वस्तु की दी हुई कीमत पर वस्तु की आपूर्ति में वृद्धि हो जाना।

आपूर्ति अनुसूची : दो कॉलम वाली तालिका जो विभिन्न कीमतों पर आपूर्ति की मात्रा को प्रदर्शित करती हैं।

आपूर्ति वक्र : अन्य बातें समान रहने पर एक निश्चित समयावधि में वस्तु की विभिन्न कीमतों पर आपूर्ति की मात्राओं के संबंध को प्रदर्शित करने वाला वक्र।

आगमनात्मक तर्कशैली : ऐसी विश्लेषण पद्धति जिसमें तथ्याधारित जानकारी का प्रयोग कर विभिन्न शक्तियों/संप्रेरणाओं के प्रति आर्थिक इकाइयों के व्यवहार के सांझे सूत्रों की पहचान होती है।

आपूर्ति : वस्तु की वह मात्रा जो उसकी किसी कीमत विशेष पर प्रत्येक समयावधि में बेचने के लिए विक्रेता तत्पर होते हैं।

आवश्यक वस्तुएँ : जीवन धारण की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने वाली वस्तुएँ।

आर्थिक नियम : प्रवृत्तियों विषयक कथन। ये विभिन्न शक्तियों/संप्रेरणाओं के फलस्वरूप अधिक अभिकर्ताओं की मानक या सामान्य प्रतिक्रियाएँ बताते हैं।

आर्थिक लागत : आर्थिक लागत से अभिप्राय फर्म द्वारा उत्पादन में आर्थिक संसाधनों के उपयोग की लागत से है जिसमें अवसर लागत भी शामिल है।

आंतरिक मितव्ययताएं : वे मितव्ययताएं जो फर्म को अपने आकार का विस्तार करने पर प्राप्त होती हैं उन्हें आंतरिक मितव्ययताओं के तौर पर जाना जाता है।

आंतरिक अपमितव्ययताएं : जब उत्पादन के पैमाने में लगातार विस्तार किया जाता है, फर्में एक ऐसे बिंदु पर पहुंच जाती हैं जहां उत्पादन में वृद्धि, उत्पादन के साधनों में वृद्धि की तुलना में कम होती है। इस बिंदु पर आंतरिक अपमितव्ययताएं लागू हो जाती हैं ।

आयताकार परवलय : ऐसा वक्र जिसके किसी भी बिंदु से उसके नीचे बनाए गए आयतों के क्षेत्रफल एकसमान हों।

आपूर्ति में कमी : किसी वस्तु की दी हुई कीमत पर वस्तु की आपूर्ति में कमी आ जाना।

आपूर्ति की लोच : कीमत परिवर्तन के प्रति आपूर्ति की मात्रा की संवेदनशीलता।

आपूर्ति का विस्तार : किसी वस्तु की पूर्ति में वृद्धि के फलस्वरूप वस्तु की आपूर्ति में वृद्धि।

आवंटनात्मक दक्षता (Allocative efficiency) : उपभोक्ताओं की माँग पर वस्तुओं/सेवाओं का उत्पादन उस कीमत पर करना जो पूर्ति की सीमांत लागत को दर्शाती है।

आवंटनात्मक दक्षता : आवंटनात्मक दक्षता किसी अर्थव्यवस्था के लिए वह अवस्था है जहाँ उत्पादन उपभोक्ता प्राथमिकताओं को इस प्रकार व्यक्त करता है कि प्रत्येक वस्तु एवं सेवा का उत्पादन उस बिंदु या स्तर तक किया जाता है जहाँ अंतिम इकाई उपभोक्ताओं को जो सीमांत लाभ प्रदान करती है वह उत्पादन की सीमांत लागत के बराबर होता है। एकल कीमत मॉडल में आवंटनात्मक दक्षता के बिंदु पर वस्तु अथवा सेवा की कीमत उसकी सीमांत लागत के बराबर होती है।

आभासी लगान : किसी साधन की औसत लागत से ऊपर उत्पत्ति के किसी साधन को प्राप्त होने वाली आय। यह एक अल्पकालीन अवधारणा है।

उत्पाद विभेद : सामान्य तौर पर एक-दूसरे से मिलती-जुलती लेकिन किसी न किसी आधार पर भिन्नता रखने वाली वस्तुओं की बिक्री। उपभोक्ताओं को इन्हीं में से अपनी पसंद तय करनी होती है।

उत्पादक दक्षता : उत्पादक दक्षता एक ऐसा आर्थिक स्तर है जहाँ अर्थव्यवस्था में किसी अन्य वस्तु के उत्पादन में कमी लाए बिना किसी वस्तु के उत्पादन में वृद्धि नहीं की जा सकती। यह स्थिति उसी अवस्था में उत्पन्न होती है जब अर्थव्यवस्था उत्पादन संभावना सीमा पर होती है।

उत्पादन संभावना वक्र : किसी अर्थव्यवस्था में दो वस्तुओं/सेवाओं के उन संयोजनों को व्यक्त करने वाला वक्र जिन्हें समाज अपने संसाधनों के दक्षतापूर्ण प्रयोग करते हुए उत्पादित कर सकता है।

उत्पादन फलन : वह तकनीकी नियम जो, साधन आगतों तथ निर्गत के बीच संबंध को व्यक्त करता है, उत्पादन फलन कहलाता है।

उपभोक्ता संतुलन : वह बिंदु जिस पर एक उपभोक्ता दी गई आय तथा कीमतों के प्रतिबंधों के अंतर्गत वस्तुओं एवं सेवाओं की खरीद से अनुकूलतम उपयोगिता या संतुष्टि पर पहुँचता है।

उपभोग : किसी आवश्यकता की संतुष्टि की प्रक्रिया में वस्तुओं में अंतर्निहित उपयोगिता का प्रयोग।

उपयोगिता : वस्तुओं की आवश्यकताएँ पूर्ण कर पाने की क्षमता। यह उपभोक्ता को किसी चीज़ से मिली संतुष्टि या सेवा ही है।

एकाधिकार : वस्तु के कोई निकट स्थानापन्न नहीं होने की दशा में किसी वस्तु का एकमात्र उत्पादक (विक्रेता) होना।

एकाधिकारिक प्रतियोगिता : अनेक फर्में एक-दूसरे से मिलता-जुलता लेकिन विभेदीकृत वस्तुओं का उत्पादन करती हैं जो एक-दूसरे के निकट स्थानापन्न होते हैं। दूसरे शब्दों में, अधिक संख्या में विक्रेता फर्म लगभग एक जैसी (लेकिन एकसमान नहीं), वस्तुएँ बेचती हैं तथा कीमत और अन्य कारकों में एक-दूसरे से प्रतियोगिता करती हैं।

सीमांत आगम उत्पाद (एम.आर.पी.) : सीमांत आगम उत्पाद अर्थात् सीमांत आगम एवं साधन के सीमांत उत्पाद का गुणनफल।

एकाधिकारी : किसी वस्तु की संपूर्ण आपूर्ति पर नियंत्रण रखने वाला उत्पादक।

ऐतिहासिक लागत : ऐतिहासिक लागत वह लागत है जो संपत्ति को क्रय करते समय वास्तव में व्यय हो चुकी है।

औसत उत्पाद : जब कुल उत्पाद को प्रयोग की गई आगत की इकाइयों की संख्या से भाग किया जाता है वह औसत उत्पाद है।

कटक (रिज) रेखाएं : उत्पादन के आर्थिक क्षेत्र की सीमाओं का निर्धारण करने वाली रेखाओं को कटक (रिज) रेखाओं के रूप में जाना जाता है।

कीमत विभेद (Price discrimination) : जब कोई फर्म लागत से कोई संबंध न होते हुए भी उत्पादित वस्तु अथवा सेवा की अलग-अलग क्रेताओं से अलग-अलग कीमत वसूलती है तो उसे कीमत विभेद की संज्ञा दी जाती है।

कैदी की दुविधा : द्यूत सिद्धांत में एक ऐसी स्थिति जिसमें दो खिलाड़ियों के पास केवल दो ही विकल्प होते हैं जिनका परिणाम एक

दूसरे द्वारा एक साथ लिए गए निर्णयों पर निर्भर करता है। इसे प्रायः दो कैदियों द्वारा अपराध को स्वीकार कर लेने या न करने के रूप में व्यक्त किया जाता है।

कूर्नो प्रतिमान : अल्पाधिकार का कूर्नो प्रतिमान इस मान्यता पर आधारित है कि दो प्रतिस्पर्धी फर्में एक जैसी वस्तु का उत्पादन करती हैं तथा यह निर्धारित कर कि कितना उत्पादन करना है अपने लाभ को अधिकतम करने का प्रयास करती हैं। सभी फर्में अपने द्वारा किए जाने वाले उत्पादन की मात्रा का निर्धारण एक साथ करती हैं।

कीमत अनुपात या सापेक्षिक कीमत : किसी वस्तु की कीमत जो किसी अन्य वस्तु की कीमत के सापेक्ष व्यक्त की जाती है। सापेक्षिक कीमत को प्रायः दो कीमतों के अनुपात के रूप में व्यक्त किया जाता है।

कीमत सीमा : सरकार द्वारा किसी वस्तु या सेवा की अधिकतम सीमा निर्धारित कर देना।

कीमत प्रभाव : बाज़ार में उत्पाद या सेवा के लिए उपभोक्ता की मांग पर इसकी कीमत में परिवर्तन का प्रभाव पड़ता है। किसी वस्तु की कीमत पर किसी घटना के प्रभाव को भी कीमत प्रभाव कह सकते हैं। कीमत प्रभाव प्रतिस्थापन प्रभाव तथा आय प्रभाव का एक परिणामी प्रभाव है।

कुल उपयोगिता : किसी वस्तु की सभी उपभोग की गई इकाइयों से मिली उपयोगिता का योगफल।

गणनावाचक उपयोगिता : गणनावाचक उपयोगिता दृष्टिकोण नव-प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने प्रतिपादित किया था, जिन्हें विश्वास था कि उपयोगिता मापनीय है तथा ग्राहक गणनात्मक या मात्रात्मक अंक जैसे 1, 2, 3 इत्यादि में अपनी संतुष्टि को व्यक्त कर सकता है।

ग़ैर-सहयोगात्मक व्यवहार: अल्पाधिकार को सर्वोत्तम रूप में बाज़ार के भीतर उसके वास्तविक व्यवहार के रूप में परिभाषित किया जाता है। सकेंद्रीकरण अनुपात उस स्तर या सीमा का माप करता है जहाँ तक बाज़ार की कुछ फर्मों के बीच कोई एक फर्म प्रभुत्व रखती है। यह फर्में जब आपस में मिलकर कार्य करने के लिए समझौता कर लेती हैं तो उसे अल्पाधिकारी बाज़ार में सहयोगात्मक व्यवहार के रूप में जाना जाता है।

गैर-अपवर्जनीयता : भुगतान न करने वाले किसी भी उपभोक्ता को उपयोग करने से वंचित न किए जाने की स्थिति।

गैर-प्रतिद्वंद्वी : जब किसी व्यक्ति द्वारा किसी वस्तु का उपभोग किए जाने से किसी अन्य के हिस्से में कोई कमी नहीं होती।

गुणवाची अर्थशास्त्र : क्या वांछनीय है और वर्तमान दशाओं में कैसे परिवर्तनों द्वारा उसे पाया जा सकता है? इस प्रकार के प्रश्नों का अध्ययन करने वाली अर्थशास्त्र की प्रशाखा।

गिफ्फन वस्तु : ऐसी वस्तुएं जिनकी कीमत और मांग की मात्रा के बीच सीधा संबंध होता है।

घटते प्रतिफल के नियम : जब एक आगत की अधिक इकाइयों का अन्य आगत की स्थिर मात्रा के साथ प्रयोग किया जाता है, परिवर्ती आगत का सीमांत उत्पाद एक बिंदु के पश्चात् घटता है।

डूबत लागत : डूबत लागत वह लागत है जो व्यय की जा चुकी है तथा जिसे वापस प्राप्त नहीं किया जा सकता।

तकनीकी प्रतिस्थापन की सीमांत दर : प्रतिस्थापन की दर या प्रतिस्थापन की सीमांत दर वह दर है जहाँ किसी अन्य वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन (सीमांत इकाई) करने के लिए किसी वस्तु की कुछ मात्रा का त्याग करना पड़ता है। यह मानकर चला जाता है कि दोनों ही वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए एक जैसे दुर्लभ आगतों का प्रयोग किया जाता है। रूपांतरण की सीमांत दर उत्पादन संभावना सीमा (PPF) से संबद्ध है जो समान संसाधनों को प्रयुक्त करते हुए दो वस्तुओं के संभाव्य उत्पादन को व्यक्त करता है।

तुलनात्मक लाभ : किसी देश A को वस्तु x के उत्पादन में तुलनात्मक लाभ प्राप्त है यदि घरेलू स्तर पर उसकी लागत किसी अन्य देश में उसी वस्तु की लागत की तुलना में कम है।

दीर्घकाल : वह अवधि जिसमें प्लांट की क्षमता सहित सभी आगतें परिवर्तनशील हैं।

न्यूनतम मज़दूरी अधिनियम : सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार के रोज़गारों के लिए निर्धारित न्यूनतम मज़दूरी से संबंधित कानून।

निःशुल्क सवारी : किसी व्यक्ति द्वारा किसी वस्तु या सेवा का मूल्य चुकाए बिना उसका उपयोग करना।

नैतिक द्वंद्व : किसी दूसरे पक्ष से जानबूझ कर कुछ सूचना का छुपाया जाना।

नति परिवर्तन बिंदु (Inflexion point) : वह बिंदु जहां कुल उत्पाद बढ़ती दर से बढ़ना बंद करता है तथा घटती दर से बढ़ना आरंभ करता है नति परिवर्तन बिंदु कहलाता है।

निर्भर चर : ऐसा चर जिसका मान किसी स्वतंत्र चर में परिवर्तन के साथ ही बदलता हो।

निकृष्ट पदार्थ : ऐसी वस्तुएँ जिनकी मांग की मात्रा और उपभोक्ता की आय में विलोम संबंध होता है।

निजी पदार्थ : ऐसे पदार्थ जिनका उपभोग चुने हुए प्रयोक्ताओं तक सीमित रखा जा सके। इस तरह से इनका स्वरूप विभाजनीय हो जाता है।

पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार : एक बाज़ार पूर्ण प्रतियोगिता वाला बाज़ार है यदि इससे अनेक उपभोक्ता एवं अनेक फर्में हैं, किसी के पास भी बाज़ार का कोई बड़ा हिस्सा नहीं है, सभी फर्में एक जैसी वस्तु का उत्पादन करती हैं, बाज़ार में प्रवेश करने तथा बाज़ार से बाहर निकलने में कोई बाधा नहीं है तथा उत्पादकों एवं उपभोक्ताओं को बाज़ार की पूरी जानकारी है।

पॉल स्वीज़ी का कोनेदार मांग वक्र : कोनेदार माँग वक्र का सिद्धांत अल्पाधिकार एवं एकाधिकारिक प्रतियोगिता का एक आर्थिक सिद्धांत है।

प्रतिकूल चयन : जब असमान सूचना के चलते किसी सौदे का एक पक्ष को अर्द्ध अनुकूलतम चयन करना पड़ता है।

पदार्थ : ऐसी चीज़ें जिनमें उपयोगिता हो अथवा जिसका अन्य वस्तुओं/सेवाओं के उत्पादन में प्रयोग हो सके।

पैमाने के स्थिर प्रतिफल : पैमाने के स्थिर प्रतिफल से तात्पर्य है कि जब सभी आगतों को एक निश्चित अनुपात में बढ़ाया जाता है, तब उत्पादन भी समान अनुपात में बढ़ता है ।

पैमाने के घटते प्रतिफल : पैमाने के घटते प्रतिफल का संदर्भ उस स्थिति से है जब उत्पाद आगतों की तुलना में कम अनुपात में बढ़ता है।

पैमाने के बढ़ते प्रतिफल : पैमाने के बढ़ते प्रतिफल से अभिप्राय उस स्थिति से है जब उत्पाद आगतों की तुलना में अधिक अनुपात में बढ़ता है।

प्रतिस्थापक वस्तु : वह वस्तु जिसकी मांग का किसी वस्तु की मांग के साथ विलोम संबंध हो।

पूर्ति का संकुचन : कीमत में कमी के कारण आपूर्ति की मात्रा में आयी कमी।

प्रतिस्थापन प्रभाव : कीमत में वृद्धि के कारण मांग में आया वह प्रभाव जो एक उपभोक्ता को एक सापेक्षिक रूप से कम कीमत वाली वस्तु की उच्च कीमत वाली से अधिक खरीदने के लिए प्रेरित करता है।

प्रतिस्थापन लागत : प्रतिस्थापन लागत वह लागत है जो संपत्ति का पुनर्स्थापन करने पर व्यय होगा (प्रतिस्थापन लागत समान प्रकार की नई संपत्ति की वर्तमान लागत होती है)।

प्रतिस्थापन प्रभाव : अन्य कीमतें स्थिर रहने पर एक वस्तु की कीमत के वह प्रभाव जो अन्य वस्तुओं के स्थान पर इस वस्तु की मांग में आए परिवर्तन को दिखाते हैं।

प्रयोग मूल्य : वस्तुओं की उपयोगिता।

प्रवाह चर : ऐसा चर जिसे किसी अवधि के अनुसार ही अभिव्यक्त किया जाता है।

ब्याज : पूँजी के उपयोग हेतु भुगतान की जाने वाली धनराशि ब्याज ही ब्याज वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन में प्रयुक्त की जाने वाली मानव निर्मित वस्तुओं (मशीनों) के लिए भुगतान किया जाता है।

बाह्यताएँ : किसी अर्थव्यवस्था में बाह्यताएँ उस समय उत्पन्न होती हैं जब उत्पादन या उपभोग किसी ऐसे तीसरे पक्ष को प्रभावित करता है जिसका ऐसे उत्पादन या उपभोग से कोई संबंध नहीं होता।

बाह्य मितव्ययताएं : जब एक फर्म उत्पादन आरंभ करती है, उसे अनेक ऐसी मितव्ययताएं प्राप्त होती हैं जिसके लिए उसकी स्वयं की रणनीति या योजनाएं जिम्मेदार नहीं होतीं। ये सभी फर्मों की बाह्य मितव्ययताएं कहलाती हैं ।

बाह्य अपमितव्ययताएं : जब उत्पादन के पैमाने में विस्तार किया जाता है, तब अनेक ऐसी अपमितव्ययताएं भी उत्पन्न होती हैं जिनका स्वयं फर्म पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता किंतु इनका भार अन्य फर्मों को सहन करना पड़ता है। इन्हें बाह्य अमितव्ययताओं के तौर पर जाना जाता है ।

बजट रेखा : बजट रेखा, जिसे बजट प्रतिबंध भी कहा जाता है दो वस्तुओं के उन सभी संयोजनों को दर्शाता है जिन्हें एक उपभोक्ता बाज़ार कीमतों के दिए हुए होने पर तथा विशिष्ट आय स्तर के अंतर्गत खरीद सकता है।

बाज़ार अपूर्णताएँ : बाज़ार की ऐसी दशाएं जो पूर्ण प्रतियोगिता के अनुरूप नहीं हैं।

बाज़ार विफलताएँ : अर्थव्यवस्था में संसाधनों के दक्ष आवंटन को प्राप्त करने में लिए बाज़ार तंत्र की विफलता।

मज़दूरी : तकनीकी विशेषज्ञता और शारीरिक श्रम के द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन हेतु किए गए मानव प्रयास के रूप में श्रमिक को भुगतान किए जाने वाले पारितोषक को मज़दूरी कहते हैं।

माँग : नियत इकाई कीमत पर किसी वस्तु/सेवा की जितनी इकाइयाँ हमारा उपभोक्ता प्रति समयावधि खरीदने को तत्पर हो।

मांग की आय लोच : उपभोक्ता की आय में आनुपातिक परिवर्तन के प्रति उपभोक्ता की मांग की संवेदनशीलता।

माँग में परिवर्तन : पूरे माँग वक्र का विवर्तन या खिसकाव।

माँग की मात्रा में परिवर्तन : वस्तु की कीमत में परिवर्तन के कारण मांग वक्र के एक बिंदु से दूसरे बिंदु तक चलना।

मौद्रिक विनिमय : मुद्रा के बदले किसी वस्तु/सेवा की बिक्री।

यथार्थवादी या सकारात्मक अर्थशास्त्र : किसी यथास्थिति की वांछनीयता पर टिप्पणी किए बिना और उसमें परिवर्तन के सुझाव दिए बिना उसका निरूपण करने वाली अर्थशास्त्र की प्रशाखा।

लगान : भूमि के उपयोग हेतु किए जाने वाले भुगतान को लगान कहते हैं। उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त किए जाने वाले समस्त प्राकृतिक संसाधन भूमि के अंतर्गत आते हैं।

लाभ : उत्पादन प्रक्रिया में अपने संगठन एवं कौशल के उपयोग तथा जोखिम वहन करने के लिए उद्यमी को प्राप्त होने वाला पारितोषक लाभ है।

लेखांकन लागत : लेखांकन लागत से अभिप्राय फर्म के वास्तविक व्यय तथा पूँजीगत उपकरणों के मूल्यह्रास व्यय से है।

व्यापार संगुट : प्रतिस्पर्धा को नियंत्रित रखकर कीमतों को ऊँचा रखने के उद्देश्य से विनिर्माताओं या आपूर्तिकर्ताओं का संघ।

व्युत्पन्न माँग : उत्पत्ति के साधनों की माँग इसलिए की जाती है क्योंकि उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं की माँग की जाती है। इसलिए साधनों की माँग व्युत्पन्न माँग है।

वी.एम.पी. : सीमांत उत्पाद का मूल्य अर्थात् कीमत एवं साधन के सीमांत उत्पाद का गुणनफल।

वाणिज्यवाद : व्यापार का यह सिद्धांत बताता है कि देश को निर्यातों को बढ़ावा देना चाहिए तथा आयातों को हतोत्साहित करना चाहिए। वाणिज्यवादियों का तर्क था कि राष्ट्र अपने निर्यातों में वृद्धि करके तथा आयातों में कमी लाकर ही बहुमूल्य धातुओं (सोना) के रूप में अधिकाधिक संपत्ति संचित कर सकता है।

विकुंचित वक्र (Non-linear Curve) : वह आपूर्ति वक्र जो एक सीधी रेखा न हो।

विशेष गुण पदार्थ (Merit Goods) : ऐसी वस्तुएँ/सेवाएँ जिनका उपभोग उनके उपभोक्ता ही नहीं पूरे समाज को भी लाभान्वित करता है।

विलासिताएँ : ऐसी वस्तुएं जो सामाजिक मान-प्रतिष्ठा के लिए ही प्रयोग की जाती हैं।

वस्तु विनियम : वस्तुओं/सेवाओं के बदले वस्तुएँ/सेवाओं का ही क्रय-विक्रय या विनिमय।

विनियम मूल्य : किसी वस्तु की बाज़ार में प्रचलित कीमत।

व्यष्टि अर्थशास्त्र : व्यक्ति स्तरीय आर्थिक इकाइयों या उनके समूहों अथवा वस्तु स्तर पर कीमत आदि चरों का अध्ययन करने वाली अर्थशास्त्र की प्रशाखा।

वृद्धिशील लागत : उत्पादन में एक वृद्धि होने के परिणामस्वरूप कुल लागत में होने वाली वृद्धि वृद्धिशील लागत होती है।

रेखीय समरूप उत्पादन फलन : जब उत्पाद में समान अनुपात में वृद्धि होती है जिसमें आगतों में वृद्धि हुई है, उत्पादन फलन रेखीय समरूप है। उदाहरणार्थ, यदि श्रम तथा पूँजी में λ गुणा की वृद्धि हुई है, परिणामस्वरूप, उत्पाद में भी λ गुणा वृद्धि होती है, तब उत्पादन फलन रेखीय समरूप है।

सामान्य लाभ : सामान्य लाभ एक ऐसी आर्थिक दशा है जो उस समय उत्पन्न होती है जबकि फर्म के कुल आगम एवं कुल लागत के बीच का अंतर शून्य होता है। सरल शब्दों में, किसी फर्म को बाज़ार में प्रतिस्पर्धी बनाए रखने के लिए आवश्यक लाभ ही सामान्य लाभ है।

सहयोगात्मक व्यवहार : सहयोगात्मक अल्पाधिकार के अंतर्गत कुछ ही उत्पादक होते हैं जो संसाधनों का आवंटन आपस में करने तथा उत्पादन की कीमत निर्धारित करने के लिए आपस में सहयोग करते हैं। व्यापार संगुट, सहयोगात्मक अल्पाधिकार का एक उदाहरण है।

स्टैकिलबर्ग प्रतिमान : स्टैकलबर्ग प्रतिमान अर्थशास्त्र में एक रणनीतिक द्यूत है जिसमें नेतृत्व करने वाली फर्में पहले चाल चलती हैं

अर्थात् निर्णय लेती हैं जिसके क्रम में अन्य फर्में निर्णय लेती हैं। स्टैकलबर्ग संतुलन बनाए रखने में आगे बाधाएं आती हैं।

सीमांत (भौतिक उत्पाद) : उत्पत्ति के अन्य साधनों को स्थिर रखते हुए किसी एक साधन की एक अतिरिक्त इकाई को काम पर लगाने से उत्पादित मात्रा में हुआ परिवर्तन।

सीमांत आगम उत्पाद : सीमांत भौतिक उत्पाद में सीमांत आगम से गुणा करने पर प्राप्त गुणनफल।

संसाधनों का दक्ष आवंटन : आगतों, उत्पादन और उत्पादन का ऐसा वितरण जो अर्थव्यवस्था में किसी परिवर्तन से किसी भी व्यक्ति को खराब स्थिति में पहुँचाएं बिना किसी अन्य व्यक्ति को बेहतर स्थिति में न पहुँचा पाए (समभाव वक्र चित्र द्वारा मापित)।

समभाव वक्र या उपयोगिता सीमा : एक समभाव वक्र दो आर्थिक वस्तुओं के उन विभिन्न संयोगों को इंगित करता है जिन पर उपभोक्ता का व्यवहार समभावपूर्ण रहता है, भले ही वह कोई भी संयोग चुन ले।

समोत्पाद वक्र : समोत्पाद वक्र एक ऐसा ग्राफ है जिस पर स्थित प्रत्येक बिंदु पर सभी आगतों के संयोग वस्तु की एकसमान मात्रा उत्पादित करते हैं।

सीमांत प्रतिस्थापन दर : प्रतिस्थापन की सीमांत दर ऐसी दर है जिस पर कोई उपभोक्ता किसी एक वस्तु की मात्रा को किसी दूसरी वस्तु की मात्रा से प्रतिस्थापित करने के लिए तैयार है, उस सीमा तक जब तक कि ऐसा करने से उसकी संतुष्टि का स्तर एक समान रहे। इसे समभाव वक्र सिद्धांत में उपभोक्ता के व्यवहार का विश्लेषण करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

सार्वजनिक वस्तुएँ : ऐसी वस्तुएँ एवं सेवाएँ जिनके उपयोग से किसी भी व्यक्ति को वंचित नहीं किया जा सकता एवं किसी एक व्यक्ति द्वारा ऐसी वस्तुओं/सेवाओं का उपयोग किए जाने से इन्हीं वस्तुओं/सेवाओं के उपयोग में किसी अन्य व्यक्ति के लिए कोई कमी नहीं आती।

सार्वजनिक हस्तक्षेप : वस्तुओं, सेवाओं एवं अन्य कारकों के लिए बाज़ार में सरकार द्वारा किए जाने वाले कार्य।

सार्वजनिक प्रावधान : सरकारी अधिकारियों/निकायों द्वारा सामाजिक दृष्टि से वांछित एवं महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ एवं सेवाएँ अंतिम उपभोक्ताओं तक पहुँचाना।

सामूहिक संसाधन : जहाँ किसी संसाधन का कोई स्वामी नहीं होता लेकिन जिनके प्रयुक्तकर्ता अनेक होते हैं।

साधन संपन्नता : किसी देश के पास भूमि, श्रम और पूँजी आदि जैसे साधनों की उपलब्धता।

सार्वजनिक पदार्थ : ऐसी वस्तुएँ/सेवाएँ जिनकी सुलभता को कुछ ही व्यक्तियों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। इनके

हितलाभ अविभाज्य होते हैं– किसी व्यक्ति को उनसे लाभान्वित होने से वंचित या बहिष्कृत नहीं रखा जा सकता।

सुविधाएँ : ऐसे पदार्थ की चर्चा हमारी उत्पादन क्षमता और सुख-सुविधा से वर्धित करने में सहायक हों।

समष्टि अर्थशास्त्र : अर्थशास्त्र की वह प्रशाखा जिसमें समूचे अर्थतंत्र या उसके एक बहुत बड़े प्रखंड का अध्ययन होता है।

सीमांत इकाई : विचारगत चर की अंतिम इकाई का मान।

सीमांत उपयोगिता : यह उपभोक्ता द्वारा एक इकाई अधिक उपभोग करने पर उसे प्राप्त उपयोगिता है। यह एक महत्त्वपूर्ण संकल्पना है, अर्थशास्त्री इसी को प्रयोग कर यह आकलन करते हैं कि कोई उपभोक्ता किसी वस्तु की कितनी इकाइयाँ खरीदने को तैयार होगा।

स्टॉक (या भंडार) चर : ऐसा चर जिसका परिमाण किसी समय बिंदु पर ही मापा जाता है।

संपूरक पदार्थ : ऐसी वस्तु जिसकी मांग का किसी वस्तु के उपभोग के साथ सीधा संबंध हो।

समलागत रेखा : एक समलागत रेखा, आगतों के विभिन्न संयोगों को दर्शाती है जो एक दी गई व्यय राशि से क्रय की जा सकती है।

सम-उत्पाद वक्र : एक सम-उत्पाद वक्र उत्पादन के दो साधनों के सभी संयोगों का ज्यामातीय प्रस्तुतीकरण है जो उत्पाद का समान स्तर प्राप्त करता है।

सीमांत तकनीकी प्रतिस्थान दर ($MRTS_{L,K}$) : साधन श्रम (L) के लिए साधन पूँजी (K) की सीमांत तकनीकी प्रतिस्थापन की दर पूँजी (K) की वह मात्रा में कमी है, जो कि श्रम (L) की मात्रा में एक इकाई की वृद्धि करने पर उत्पाद स्तर को अपरिवर्तित रखने के लिए की जाती है।

स्पष्ट लागत : स्पष्ट लागतें एक फर्म तथा अन्य पक्षों के बीच होने वाले लेन-देन के कारण उत्पन्न होती हैं जिसमें फर्म उत्पादन करने के लिए आदतों या सेवाओं का क्रय करती है।

श्रम संघ : अपने अधिकारों के संरक्षण हेतु श्रमिकों का एक मान्यता प्राप्त संगठन।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) Kautsoyiannis, A. (1979), *Modern Micro Economics*, London: Macmillan.

2) Lipsey, RG (1979), *An Introduction to Positive Economics*, English Language Book Society.

3) Pindyck, Robert S. and Daniel Rubinfield, and Prem L. Mehta (2006), *Micro Economics*, An imprint of Pearson Education.

4) Case, Karl E. and Ray C. Fair (2015), *Principles of Economics*, Pearson Education, New Delhi.

5) Stiglitz, J.E. and Carl E. Walsh (2014), *Economics*, viva Books, New Delhi.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY